मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 57 | अंक : 7 | जनवरी, 2017 | पृष्ठ : 52 | मूल्य :₹15

www.rajteachers.com

सत्यमेव जयते

प्रो. वासुदेव देवनानी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा
एवं भाषा विभाग
राजस्थान सरकार, जयपुर

> "एक दृष्टिहीन शिक्षक की यह शानदार उपलब्धि उन शिक्षकों के लिए एक सबक है जो कमजोर परीक्षा परिणाम रहने पर यह तर्क देते सुनाई देते हैं कि पिछली कक्षाओं से आने वाले विद्यार्थियों की नींव कमजोर थीं, हम क्या करते! जैसाराम ने शिक्षकों के इस तर्क को बेबुनियाद सिद्ध कर दिया है। जरूरी बस इतना है कि पढ़ाते समय हम विद्यार्थियों को अपना सर्वश्रेष्ठ (The Best) अर्पित कर दें।"

दिव्यांग शिक्षक की दिव्यता को नमन!

शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी एक त्रिवेणी है, जिसमें शिक्षार्थी शिक्षागृहीता एवं शिक्षक शिक्षादाता होते हैं। दरअसल शिक्षा उस ज्ञान एवं कौशल का नाम है जिसे ग्रहण करके व्यक्ति अपने जीवन में कुशलता एवं खुशहाली का बीजारोपण करता है। शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य पिता-पुत्र जैसा पवित्र रिश्ता होता है। इसीलिए हमारे चिन्तन में गुरु (शिक्षक) को जनक (पिता) जितना ऊँचा स्थान दिया गया है। पिता यदि जन्मदाता है तो शिक्षक जीवनदाता। जीवन में जिन बुलंदियों को व्यक्ति ग्रहण करता है, उनमें पिता और गुरुजन दोनों की महत्ती भूमिका होती है। हमारी चिन्तनधारा में तो गुरु को भगवान से भी बड़ा माना गया है – **गुरु गोविन्द दोऊ खड़े......।**

जीवन निर्माण करने की गौरवमयी भूमिका में खरा उतरने के लिए शिक्षक अपने शिक्षार्थी के साथ कड़ी मेहनत करता है। ऐसा करते समय वह साधन सुविधाओं की परवाह नहीं करता। इस क्रिया में उसकी ताकत उसका अपना मन और भावना होती है। **सच्चा भाव इतना बलशाली होता है कि उसके सामने कोई अभाव टिक नहीं पाता।** भले ही यह अभाव साधनों का हो अथवा उसकी शारीरिक स्थिति से सम्बन्धित। ऐसे शिक्षक अद्भुत होते हैं। वे मानव रूप में ईश्वर ही होते हैं। ऐसे अद्भुत शिक्षकों के बल पर ही समाज एवं राष्ट्र नई ऊँचाइयाँ हासिल करता है।

ऐसे ही एक दिव्य विभूति शिक्षक बीकानेर जिला मुख्यालय से लगभग 8 किलोमीटर दूरी पर स्थित देवीकुण्डसागर के राजकीय माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत हैं। उनका नाम जैसाराम है। प्रकृति की लीला देखिए कि जैसाराम दृष्टिहीन हैं यानी वे दिव्यांग हैं। इन दिव्यांग दिव्य शिक्षक की दीप्ति से सारा शिक्षा जगत देदीप्यमान है। वे हिन्दी विषय के वरिष्ठ अध्यापक हैं। बोर्ड की सैकण्डरी स्कूल परीक्षा 2016 में उनके विद्यालय से 17 विद्यार्थी सम्मिलित हुए। विद्यालय का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा, 13 प्रथम श्रेणी, 4 द्वितीय श्रेणी, तृतीय श्रेणी व पूरक का कोई नाम नहीं, यानी संख्यात्मक एवं गुणात्मक दोनों दृष्टिकोण से शानदार परीक्षा परिणाम; मगर दृष्टिहीन हिन्दी शिक्षक जैसाराम ने तो जैसे कमाल ही कर दिया। उनके 17 विद्यार्थियों में से 16 के विशेष योग्यता आई। इतना ही नहीं 16 में से 14 के अंक 80 प्रतिशत से ज्यादा आए। उच्चतम प्राप्तांक 88 रहे। हिन्दी विषय में लगभग सभी परीक्षार्थियों के 80 प्रतिशत से अधिक अंक आना एक असाधारण उपलब्धि है।

दिव्यांग दिव्य शिक्षक जैसाराम की यह कहानी नेशनल राजस्थान एवं दैनिक भास्कर समाचार पत्र के देश में प्रकाशित होने वाले सभी संस्करणों (हिन्दी, गुजराती, मराठी) में रविवारीय परिशिष्ट (18.12.2016) के मुखपृष्ठ पर प्रमुखता से प्रकाशित हुई। यह समाचार शिविरा पत्रिका के इसी अंक में साभार प्रकाशित किया जा रहा हैं। हम यह दिव्य वृत्तान्त मानव संसाधन विकास मंत्रालय को भिजवाएँगे। मैं जैसाराम की सराहना करते हुए अन्य शिक्षकों को भी उनसे प्रेरणा लेने की अपील करता हूँ। एक दृष्टिहीन शिक्षक की यह शानदार उपलब्धि उन शिक्षकों के लिए एक सबक है जो कमजोर परीक्षा परिणाम रहने पर यह तर्क देते सुनाई देते हैं कि पिछली कक्षाओं से आने वाले विद्यार्थियों की नींव कमजोर थीं, हम क्या करते! जैसाराम ने शिक्षकों के इस तर्क को बेबुनियाद सिद्ध कर दिया है। जरूरी बस इतना है कि पढ़ाते समय हम विद्यार्थियों को अपना सर्वश्रेष्ठ (The Best) अर्पित कर दें। यदि जैसाराम द्वारा पढ़ाए सभी विद्यार्थी विशेष योग्यता से उत्तीर्ण हो सकते हैं तो अन्यों के क्यों नहीं? यह यक्ष प्रश्न है जिसे मैं शिक्षाविदों के समक्ष विचार के लिए रख रहा हूँ। मुझे प्रसन्नता है कि बीकानेर मण्डल द्वारा ऐसे दृष्टान्तों को चिह्नित कर शोध किया जा रहा है।

बोर्ड परीक्षाएँ आसन्न दिखाई दे रही हैं। हमें परीक्षा परिणाम में संख्यात्मक एवं गुणात्मक दोनों दृष्टिकोण से सुधार के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए। मुझे प्रसन्नता है कि उत्कृष्टता को दृष्टि में रखकर फील्ड में **'मिशन मेरिट'** जैसे अभिनव नवाचार किए जा रहे हैं। मुझे पूर्ण भरोसा है कि **बोर्ड परीक्षा 2017** में राजकीय विद्यालयों के परीक्षा परिणाम दिव्य रहेंगे।

इस माह में हम मकर संक्रान्ति एवं गणतंत्र दिवस मनाएँगे। मकर संक्रान्ति से सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण में प्रवेश करता है। इस प्रकार यह बड़ा पावन पर्व है जो हमें हमारी पुरातन आध्यात्मिक परम्परा को स्मरण कराता है। गणतंत्र दिवस तो हमारा राष्ट्रीय पर्व है ही। इस अवसर पर अमर शहीदों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि उन्नत राष्ट्र के लिए शिक्षा के प्रसार की दिशा में आहुति देना होगी जिसके दारमदार शिक्षक हैं और मुझे मेरी **टीम एज्यूकेशन** की क्षमता एवं सामर्थ्य में पूरा भरोसा है।

आगामी बोर्ड परीक्षा 2017 में उत्कृष्ट परीक्षा परिणामों की शुभकामनाओं के साथ...

(प्रो. वासुदेव देवनानी)

मासिक
शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 57 | अंक : 7 | पौष-माघ २०७३ | जनवरी, 2017

प्रधान सम्पादक
बी.एल. स्वर्णकार
❉
वरिष्ठ सम्पादक
प्रकाश चन्द्र जाटोलिया
❉
सम्पादक
गोमाराम जीनगर
❉
सह सम्पादक
मुकेश व्यास
❉
प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 15

वार्षिक चंदा दर व शर्तें
- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 75
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 150
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 200
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। -वरिष्ठ संपादक

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
- राष्ट्र प्रथम 5

आलेख
- राष्ट्रगीत वन्देमातरम् और मूल कर्त्तव्य 6
  सूर्य प्रताप सिंह राजावत
- स्वामी विवेकानन्द का राष्ट्रप्रेम 7
  सतीश चन्द्र श्रीमाली
- विवेकानन्द : शोध और शिक्षा-दर्शन 9
  रमेश कुमार शर्मा
- गुरु गोविन्दसिंह : पुण्य स्मरण 11
  ओमदत्त जोशी
- गाँधीजी : एक आदर्श 12
  रामजी लाल घोड़ेला
- नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के शिक्षा विषयक विचार 14
  विजय सिंह माली
- वेदों में पर्यावरणीय चेतना 16
  डॉ. गिरीश दत्त शर्मा
- जीवन संध्या...उत्सव या अभिशाप? 18
  डॉ. भगवती प्रसाद गौतम
- स्कूल ट्यूरिज्म...ज्ञान पर्यटन 21
  संदीप जोशी
- सेवापूर्व शिक्षण प्रशिक्षण का महत्व 22
  डॉ. महेशचन्द्र शर्मा
- दिव्यांग शिक्षक जैसाराम की दिव्यता 24
  साभार-**दैनिक भास्कर व नेशनल राजस्थान**
- अरुण यह मधुमय देश हमारा 30
  ओमप्रकाश सारस्वत
- स्मार्ट बजट प्रोजेक्टर 32
  दीपक जोशी
- बदलती जीवन शैली व हमारा स्वास्थ्य 34
  सुभाष सोनगरा
- विद्यार्थियों में आत्मानुशासन की भावना 37
  बल्लू राम मीणा
- इतिहास की बात 'सत्रह' के साथ 44
  पुष्पा शर्मा

रपट
- शारदे बा.आ. छात्रावास खैरादा, उदयपुर का अभिनव प्रयास 20
  जस्साराम चौधरी
- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की कार्यशाला में भाग 35
  रामावतार सबलानियां
- छठी राष्ट्र स्तरीय प्रदर्शनी एवं परियोजना प्रतियोगिता 2016 40
  डॉ. संजय सिंह सेंगर
- शिक्षा विभागीय राज्य स्तरीय मंत्रालयिक एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी सम्मान समारोह 42
  आनन्द कुमार साध

मासिक गीत
- आ गया संक्रान्ति का संदेश पावन 13
  संकलन-**मुरलीधर पालीवाल**

स्तम्भ
- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र 25-28
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 28
- शिविरा पञ्चाङ्ग (जन. 17-फर. 17) 29
- शाला प्रांगण से 48
- हमारे भामाशाह 50
- व्यंग्य चित्र : रामबाबू माथुर 22, 39, 44

पुस्तक समीक्षा 45-47
- तारां छाई रात : डॉ. मंगत बादल
  समीक्षक-**डॉ. शिवराज भारतीय**
- नहले पर दहला : ओमदत्त जोशी
  समीक्षक-**पृथ्वीराज रतनू**
- पाछो कुण आसी : नीरज दइया
  समीक्षक-**नवनीत पाण्डे**

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

▼ *चिन्तन*

दुर्लभं भारतवर्षे,
जन्म तस्मान्मनुष्यता।

मानुषे दुर्लभं चापि,
स्व-स्वधर्म प्रवर्तिता।।

अर्थात्: भारतवर्ष में जन्म लेना कठिन है, उससे भी कठिन है मानव रूप पाना और उससे भी कठिन है अपने-अपने कर्त्तव्य में प्रवृत्त होना।

पाठकों की बात

- 'शिविरा' पत्रिका- वार्षिक चंदे की न्यूनतम वृद्धि के साथ पत्रिका को पोलीबेग में भेजने की शुरुआत के लिए निश्चित ही संपादक मण्डल बधाई का पात्र है। शिविरा आमुख पृष्ठ से लेकर अंत तक काफी सूझ-बूझ एवं परिश्रम के परिणामस्वरूप ही इतनी उत्कृष्ट पत्रिका बन ऊँचाइयों को छू रही है। यह कोई कम बात नहीं है। आपका यह सार्थक प्रयास सराहनीय है। शायद शिविरा पत्रिका राजस्थान की ही नहीं देश की पहली राजकीय/सरकारी पत्रिका है जो पोलीबेग में आती है। इससे पत्रिका को लम्बे समय तक सहेज कर रखा जा सकता है। पुनः आपके इस अथक प्रयास के लिए साधुवाद!

  -महेश कुमार चतुर्वेदी, छोटी सादड़ी

- अपरंच माह दिसम्बर 2016 की शिविरा मिली। आवरण पृष्ठ बहुत ही आकर्षक लगा। पत्रिका का बेसब्री से इंतजार रहता है। इसके माध्यम से पूरे राजस्थान में शिक्षा जगत में होने वाले कार्यों की सम्पूर्ण जानकारी मिलती है जो सराहनीय है। 'अपनों से अपनी बात' में वार्षिक उत्सव द्वारा विद्यालय प्रगति में चार चाँद लगाने की युक्ति मिली। दिशाकल्प में शिक्षकों से परीक्षा तैयारी हेतु विशेष प्रयास का आह्वान प्रेरणाप्रद लगा। जयन्ती विशेष में महान आत्माओं का स्मरण यथोचित प्रेरणादायी लगा। इस संतुलित व सामंजस्यपूर्ण सामग्री संकलन व चयन के लिए समस्त सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

  -हजारी राम भोजासर, जोधपुर

- शिविरा दिसम्बर 2016 में श्री टेकचन्द्र शर्मा का पं. मदनमोहन मालवीय जी के जीवन संबंधी लेख पढ़ कर मन गद्‌गद्‌ हो गया। मालवीय जी का जीवों के प्रति प्रेम, परोपकार और उदारता, ईश्वर के प्रति विश्वास, विद्यार्थियों को उपदेश अनुकरणीय है। सलिज वर्मा द्वारा लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के आलेख में बिना खून बहाए रियासतों को भारत में मिलाना भी प्रेरक लगा। एक महान् गणितज्ञ रामानुजन पर आलेख बहुत ही अच्छा लगा। कहने का तात्पर्य यह कि शिविरा में जो लेख पढ़ने को मिल रहे हैं। उसके लिए सम्पादक महोदय व उनकी टीम को साधुवाद! साथ ही परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि यह टीम इसी भावना से काम करती रहे।

  -आशीष राजोरिया, जयपुर

- शिविरा पत्रिका दिसम्बर 2016 अंक को पढ़ा, उसमें सर्वप्रथम मंत्री महोदय जी का आलेख जरूर पढ़ता हूँ क्योंकि मंत्री जी का आलेख मन से लिखा होता है। विवेकानन्द आर्य का भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद एवं सलिज वर्मा का आलेख भी और इस माह का गीत मन को छूने वाला है। आजकल शिविरा अपने चरमोत्कर्ष पर है। कवर, उच्च क्वालिटी के लेख, अच्छे ढंग से फोटो सेटिंग इत्यादि से लगता है कि सम्पादक मण्डल विशेष ध्यान देने लगा हैं। शिविरा अब समय पर भी मिलने लगी है, इसके लिए साधुवाद।

  -मुरलीधर सोलंकी, बीकानेर

- दिसम्बर 2016 के शिविरा अंक में राष्ट्रीय गणित दिवस पर महान गणितज्ञ के योगदान की रोचक जानकारी एवं भारत के प्रथम राष्ट्रपति की जयंती के उपलक्ष्य में उनकी सादगी व शिक्षा के प्रति समर्पण की अद्‌भुत जानकारी मिली। यह अंक अपने आप में अनेक विषयों को समेटे हुए है। जैसे गिजुभाई की आदर्श बाल शिक्षण शिक्षा द्वारा जीवन मूल्यों की शिक्षा, बाल विकास, योग शिक्षा, चरित्र निर्माण दिशा बोध आदि। श्री सत्यनारायण पंवार का परीक्षा नहीं, मूल्यांकन चाहिए बहुत ही प्रेरणाप्रद, मार्गदर्शक एवं वर्तमान समय की मांग के अनुकूल लगा। सलिज वर्मा का लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के आलेख एवं श्री मेवाराम कटारा का आलेख शिक्षा में अपेक्षित जीवन मूल्यों की तलाश भी प्रेरणादायी लगा। 'इस माह का गीत' बहुत ही प्रेरणादायी, प्रासंगिक व प्रभावी संकलन होता है।

  -बसंत जिंदल, जयपुर

- शिविरा हर माह महापुरुषों के जन्म दिन पर लेख, आलेख, कविता, जीवन प्रसंग प्रकाशित कर छात्रों/शिक्षकों व आम पाठकों को लाभान्वित करती रहती है। यह विशिष्टता काबिले तारीफ है। सम्पादक मण्डल के अथक परिश्रम का सुफल ही है यह पत्रिका। अतः साधुवाद।

  -टेकचन्द्र शर्मा, झुंझुनूं

सत्यमेव जयते

बी.एल. स्वर्णकार
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

"देश के भावी नागरिक, विद्यार्थी के रूप में विद्यालयों में न केवल शिक्षा प्राप्त करते हैं अपितु संस्कारित भी होते हैं आज का विद्यार्थी ही कल के राष्ट्र का भविष्य है। जिस राष्ट्र के नागरिक अपने महापुरुषों, वीर-वीरांगनाओं के त्याग और बलिदान की विरासत से परिचित हों, वे उसी परम्परा को अच्छे से आगे बढ़ाते हुए स्वर्णिम इतिहास बनाते हैं।"

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

राष्ट्र प्रथम

अनगिनत बलिदान, त्याग और कठोर तपस्या के बल पर 15 अगस्त 1947 को हमें स्वतंत्रता मिली और 26 जनवरी 1950 ऐतिहासिक दिन को हमने अपना संविधान अंगीकृत किया। दोनों राष्ट्रीय पर्वों को प्रत्येक भारतवासी अपूर्व उत्साह और उमंग के साथ मनाता है। राष्ट्रीय पर्वों के मूल स्वर को आमजन तक पहुँचाने में हमारी विशेष भूमिका है, हमारा दायित्व भी विशेष है, क्योंकि हमें शिक्षा जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य करने का अवसर मिला है।

छोटे-छोटे विद्यार्थी, बड़े-बड़े शिक्षक और सम्माननीय अभिभावक मिलकर जब विद्यालय में राष्ट्र के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए देश भक्ति के साथ राष्ट्रीय पर्व मनाते हैं तो पूरा वातावरण सकारात्मक हो जाता है। आम आदमी के मन में अपने राष्ट्र के प्रति कुछ सार्थक करने का भाव उपजता है।

देश के भावी नागरिक, विद्यार्थी के रूप में विद्यालयों में न केवल शिक्षा प्राप्त करते हैं अपितु संस्कारित भी होते हैं। आज का विद्यार्थी ही कल के राष्ट्र का भविष्य है। जिस राष्ट्र के नागरिक अपने महापुरुषों, वीर-वीरांगनाओं के त्याग और बलिदान की शानदार विरासत से परिचित हों, वे उसी परम्परा को अच्छे से आगे बढ़ाते हुए स्वर्णिम इतिहास बनाते हैं।

इसी माह गुरु गोविन्द सिंह, स्वामी विवेकानन्द और सुभाष चन्द्र बोस जैसे महापुरुषों की जयन्ती है। 30 जनवरी को महात्मा गाँधी का बलिदान दिवस है। आशा है महापुरुषों के प्रेरक जीवन हमारे कर्त्तव्य पथ को आलोकित करेंगे। हम संकल्पित हों कि अपनी कथनी और करनी में कोई अन्तर न रखते हुए 'राष्ट्र प्रथम' (**Nation First**) का सर्वोच्च भाव रखेंगे।

जय हिन्द! जय भारत!!

(बी.एल. स्वर्णकार)

आलेख

राष्ट्रगीत वन्देमातरम् और मूल कर्त्तव्य

❐ **सूर्य प्रताप सिंह राजावत**

संविधान सभा भारत में लागू ब्रिटिश संसद द्वारा बनाए गए किसी भी कानून को, यहाँ तक कि भारतीय स्वतंत्रता एक्ट को भी रद्द अथवा परिवर्तित कर सकती थी। संविधान सभा की पहली बैठक 09 दिसम्बर, 1946 को हुई थी। संविधान सभा के सदस्यों द्वारा 24 जनवरी, 1950 को संविधान सभा के अंतिम दिन संविधान पर अंतिम रूप से हस्ताक्षर किए गए। भारत के संविधान निर्माण के इतिहास में 24 जनवरी 1950 एक महत्त्वपूर्ण दिवस है। इस दिन संविधान सभा द्वारा तीन महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए गए थे। भारत के राष्ट्रगान व राष्ट्र-गीत की घोषणा व भारत गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति का चुनाव। 24 जनवरी 1950 को संविधान सभा के सभाध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने राष्ट्रगान और राष्ट्रगीत के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण वक्तव्य दिया- जिस गान के शब्द तथा स्वर 'जन-गण-मन' के नाम से विख्यात है वह भारत का राष्ट्रगान है किन्तु उस के शब्दों में सरकार की आशा से यथोचित अवसर पर हेर-फेर किया जा सकता है। 'वंदेमातरम्' के गान का जिसका भारतीय स्वतन्त्रता के संग्राम में ऐतिहासिक महत्त्व रहा है, 'जन-गण-मन' के समान ही सम्मान किया जाएगा और उस का पद उसके समान ही होगा (हर्षध्वनि)। मुझे आशा है कि इससे सदस्यों को संतोष हो जाएगा (संविधान सभा Vol-XII 24.1.1950)।

राष्ट्रगीत 'वन्देमातरम्' के ऐतिहासिक महत्त्व का संक्षिप्त परिचय देना यहाँ युक्तियुक्त होगा। 1882 में बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ने 'आनन्द मठ' उपन्यास में वन्देमातरम् लिखा। यह बंगाली व संस्कृत भाषा में लिखा गया था। अंग्रेजी सरकार ने वन्देमातरम् गीत पर ही नहीं वन्देमातरम् नारे के उच्चारण पर भी प्रतिबंध लगाए। कोई भी वन्देमातरम् का नारा लगाते पाया जाता तो उससे पाँच रुपये जुर्माना लिया जाता था, जुर्माना न देने वालों को बेतों से पीटा जाता था। 1906 में बारीसाल में निकाले गए जुलूस में वन्देमातरम् का नारा लगाने वालों को पुलिस ने पीट-पीट कर लहूलुहान कर दिया था। श्री अरविन्द ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद 1909 में किया। 1896 में पहली बार कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में राजनैतिक मंच से गाया गया। 1905 में वन्देमातरम् गाने पर प्रतिबन्ध के बावजूद गाया गया। 1907 में बंगाल से श्री अरविन्द ने 'वन्देमातरम्' नामक पत्रिका निकाली, जिसमें निष्क्रिय प्रतिरोध पर श्री अरविन्द ने लेख लिखे, जिसके सिद्धांत को बाद में महात्मा गाँधी ने अहिंसात्मक आंदोलन में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध अपनाया था। लाहौर से लाला लाजपतराय ने भी 'वन्देमातरम्' नामक पत्रिका निकाली थी। 1907 में भीकाजी कामा ने जर्मनी में पहला तिरंगा फहराया जिसके मध्य में वन्देमातरम् लिखा था। इस सभा में पं. श्यामाप्रसाद मुखर्जी, वीर सावरकर भी शामिल थे।1976 में भारत सरकार ने एक डाक टिकट जारी किया **पृष्ठ 29 : हमारा संविधान भारत का संविधान और संवैधानिक विधि – सुभाष कश्यप (2015)** जिसमें वन्देमातरम् गीत की कुछ पंक्तियाँ लिखी गयी थी। 1992 से संसद सदस्य रामनाइक के प्रयासों से संसद का अन्तिम सत्र वन्देमातरम् की धुन से सम्पन्न होना शुरू हुआ।

मध्यप्रदेश सरकार ने 1 जुलाई 2005 से सभी मंत्रालयों व कलैक्ट्रेट कार्यालयों में वंदेमातरम् गायन के आदेश पारित किए। वंदेमातरम् पर संविधान सभा के वक्तव्य और इसके ऐतिहासिक महत्त्व के अनुसार भारत के संविधान के मूल कर्त्तव्यों में राष्ट्रगीत को सम्मिलित नहीं करना संविधान सभा का अपमान है। इसका अर्थ यह निकाला जा सकता है कि बिना राष्ट्रगीत के मूल कर्त्तव्य न केवल अधूरे है बल्कि असंवैधानिक है। भारत के संविधान में मूल कर्त्तव्यों को वर्ष 1976 में 42वें संशोधन द्वारा जोड़ा गया। मूल कर्त्तव्यों की प्रेरणा रूस के संविधान से ली गई थी। रूस एक साम्यवादी देश है। रूस के संविधान के अनुच्छेद 62 में धरती माता की रक्षा करना प्रत्येक रूसी नागरिक का कर्त्तव्य बताया है। भारत के संविधान के अनुच्छेद 368 के तहत मूल कर्त्तव्यों का संशोधित स्वरूप होगा। **अनुच्छेद 51(क) मूल कर्त्तव्य**-भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह - (क) ''संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान और राष्ट्रगीत का आदर करे''। इसी प्रकार राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण अधिनियम 1971 में राष्ट्रगीत के गायन को रोकने पर सजा का उल्लेख नहीं होने से राष्ट्रगीत को राष्ट्रगान के समान स्थान व सम्मान देने से वंचित रखा है। अधिनियम 1971 को इस उद्देश्य से बनाया गया है कि भारत के राष्ट्रीय प्रतीकों के गौरव को सर्वोपरी रखें व इनके अपमान होने की स्थिति में दोषी को दण्डित करें। अधिनियम 1971 की धारा 3 राष्ट्रीय गान के गायन को रोकने में यह प्रावधान है कि जो कोई व्यक्ति जानबूझकर भारतीय राष्ट्रीय गान को गाए जाने से रोकता है या ऐसा गायन कर रही किसी सभा में व्यवधान पैदा करता है उसे तीन वर्ष तक के कारावास या जुर्माने या दोनों से दण्डित किया जाएगा।

अधिनियम 1971 की धारा 3 व दण्ड प्रक्रिया संहिता 1973 की प्रथम अनुसूची अपराधों का वर्गीकरण के पठन पर ज्ञात होता है कि धारा 3 संज्ञेय व अवमाननीय अपराध बनता है। इसका अर्थ है कि राष्ट्र गान के अपमान करने वाले के विरुद्ध एफ.आई.आर. दर्ज करवाई जा सकती है परन्तु राष्ट्रगीत के गायन को रोकने की स्थिति में भारत गणराज्य में किसी भी प्रकार की कानूनी कार्रवाई करने का कोई प्रावधान नहीं है। जन-गण-मन और वन्देमातरम् को समान स्थान व समान सम्मान दिया जाना भारत गणराज्य से अपेक्षित है। भारत की संसद से यह अपेक्षा है कि 24 जनवरी 1950 को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा दिए गए वक्तव्य का सम्मान करते हुए राष्ट्रगीत को मूल कर्त्तव्यों व राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण अधिनियम 1971 में जोड़े। इसके साथ ही भारत सरकार के गृह मंत्रालय की वेबसाइट पर राष्ट्रगीत 'वन्देमातरम्' के ऐतिहासिक महत्त्व की जानकारी अपलोड करावें।

अधिवक्ता
ए-35, जय अम्बे नगर, टोंक रोड, जयपुर-18
मो. 9462294899

जयन्ती विशेष

स्वामी विवेकानन्द का राष्ट्रप्रेम

❒ सतीश चन्द्र श्रीमाली

दैवीय प्रतिभा से सम्पन्न व्यक्ति ही महापुरुष के पद को सुशोभित करता है। प्रायः देखा गया है कि महापुरुषों का अवतार ऐसे काल में होता है, जब धर्म, संस्कृति व सभ्यता पतन की ओर अग्रसर होती है। साधारण जनता निज विश्वास खोकर अज्ञान व अन्धविश्वास के सागर में गोते लगाती रहती है। ऐसे में महापुरुष ही अज्ञान के सागर में ज्ञानरूपी 'टापू' का कार्य करते हैं, जो त्रस्त जनता को अवलम्ब देते हैं।

गुलाम भारत में देशवासियों की स्थिति ऐसी ही थी। धर्म, संस्कृति व सभ्यता पतन की ओर अग्रसर हो रही थी, फलस्वरूप हमारा धर्म-जीवन अत्यन्त अवनत् हो गया था और हम तेजोवीर्य खो बैठे थे। हमारे अन्दर तामसिकता और चारित्रिक दुर्बलता का प्रभाव अत्यधिक होने के कारण हमारी शारीरिक और मानसिक सबलता, निर्बलता में परिवर्तित हो चुकी थी, आत्म विश्वास विलुप्त हो गया था। ऐसे समय में हम भारतवासियों को, जो एक विशालकाय अजगर की तरह सोये हुए थे उन्हें जगाने तथा हमारी वैदिक संस्कृति की श्रेष्ठता का बोध केवल देशवासियों को ही नहीं अपितु पूरे विश्व को करवाने तथा इस महान देश की गुलामी से मुक्त करने का मार्ग प्रशस्त करने व देशवासियों में परस्पर बन्धुत्व के भाव उत्पन्न कराने हेतु आज से लगभग 154 वर्ष पूर्व दैवीय प्रतिभा से सम्पन्न भारतीय संस्कृति के दैदीप्यमान ज्योतिपुंज इस धरा पर 12 जनवरी 1863 को कलकत्ते के शिमूलिया मुहल्ले में एक सम्भ्रांत कायस्थ परिवार में अवतीर्ण हुआ। जिनका नाम वीरेश्वर रखा और अन्नप्राशन संस्कार के समय उनका नाम नरेन्द्रनाथ रखा जो बाद में सम्पूर्ण विश्व में स्वामी विवेकानन्द के नाम से विख्यात हुआ।

नरेन्द्र बचपन से ही असाधारण प्रतिभा के धनी थे। जिस उम्र में बच्चे खिलौनों से खेला करते हैं, उस समय वे ध्यान लगाया करते थे और कभी-कभी तो ध्यान में इतने निमग्न हो जाते थे कि अपने आस-पास के परिवेश को भी भूल

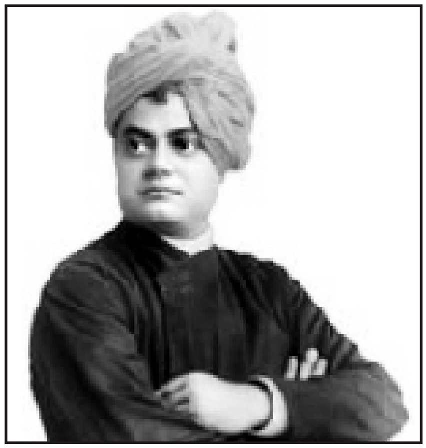

जाया करते थे। उनके ध्यान लगाने की प्रवृति से ही वे कुशाग्र बुद्धि, एकाग्रता, विवेक युक्त ज्ञान व लक्ष्य के प्रति निष्ठा जैसे गुणों से भरपूर थे। उनका जीवन नीरस नहीं था, बल्कि साहित्य, संगीत व कला से युक्त था। वे किसी भी वस्तु को बिना जाँचे-परखे सहज ही नहीं मान लेते थे बल्कि वे अपनी आत्म-सन्तुष्टि होने तक उसकी परीक्षा करते थे।

श्रेष्ठ गुरु की खोज में वे कितने ही साधु महात्माओं के समीप गए। परन्तु कोई उन्हें सन्तुष्टि प्रदान न कर सका। जब उन्हें श्री रामकृष्ण परमहंस का सानिध्य मिला तब भी उन्होंने उनकी अनेक परीक्षाएँ ली, अन्ततः वे उनकी सत्य की कसौटी पर खरे उतरे और नरेन्द्र ने उनका गुरुत्व ग्रहण किया।

बाल्यकाल से ही ध्यान लगाने की प्रवृति के कारण एक श्रेष्ठ योगी बनने में उन्हें अधिक कठिनाई अनुभव नहीं हुई, अपने गुरु के लिए वे अत्यन्त योग्य शिष्य थे, अतः शीघ्र ही गुरुकृपा से उन्होंने उस परमानन्द का साक्षात्कार भी किया जो अत्यन्त दुर्लभ है। वे तो उसी में लीन रहना चाहते थे, परन्तु अभी उसमें समय था क्योंकि उनके जन्म का मुख्य लक्ष्य प्राचीन वैदिक संस्कृति का उद्धार करना था। पाश्चात्य शिक्षा व रीति-रिवाजों से प्रभावित लोग अपने पूर्वजों को मूर्ख व वेदों को ग्राम्य गीत समझकर ठुकरा रहे थे। समाज में धर्म व संस्कृति की हानि हो रही थी, जिस धर्म, संस्कृति, शिक्षा व सभ्यता के बल पर भारत विश्व गुरु बना था, वह अंग्रेजों द्वारा पद-दलित किया जा रहा था। धर्म कुछ रूढ़ियों में जकड़कर रह गया था। धर्म के नाम पर लोग पाखण्ड कर रहे थे। ऐसे समय में जब चहुँ ओर सामाजिक, नैतिक व धार्मिक पतन हो रहा था। स्वामी विवेकानन्द भारत की इस दारुण दशा को देखकर व्यथित हो उठे और वे वैदिक संस्कृति के पुनरुद्धार व भारत के पुनर्जागरण का उपाय सोचने लगे। उन्होंने यही निष्कर्ष निकाला कि यदि भारतीयों के दिलों में अपनी प्राचीन सभ्यता व संस्कृति पर पुनः गर्व जगाना है तो पाश्चात्य जगत को ही सबसे पहले हमारे धर्म व संस्कृति से अवगत कराना होगा। ये सुअवसर स्वामीजी को शीघ्र ही शिकागो में होने वाले महाधर्म सम्मेलन में मिला, जहाँ उनके पहले ही सम्बोधन 'मेरे प्यारे अमेरिकन भाई-बहनों' से ही पूरा सभागार तालियों से गूँज उठा व मंत्रमुग्ध हो गया।

यहाँ पर यह जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि स्वामी विवेकानन्द के मुख से निकले सम्बोधन के एक वाक्य से ही उपस्थित जन समुदाय उद्वेलित हो उठा, ऐसा क्यों? इसके प्रत्युत्तर में अनेक मत हो सकते हैं, पर मेरा मानना है कि हमारे वैदिक धर्म में शब्द को 'ब्रह्म' कहा गया है, अर्थात् साक्षात् ईश्वर और जब वे शब्द किसी सच्चे साधक व परम योगी के मुख से निकलते हैं तो श्रोता को ऐसा लगता है कि उन्हें साक्षात् ईश्वरानुभूति हो रही है। क्योंकि उनके ये शब्द 'मन्त्र' का काम करते हैं जो प्रत्येक श्रोता को 'मुग्ध' करते हैं, 'मोहन' करते हैं। यही उनका दैवीय प्रभाव था।

स्वामी विवेकानन्द द्वारा भारतीय वैदिक संस्कृति के सन्दर्भ में दिए गए। व्याख्यानों से पाश्चात्य जगत हिल उठा। साथ ही भारतीयों के मन में पुनः आत्मविश्वास का संचार हुआ। विवेकानन्द ने पद-दलित हो रही भारतीय संस्कृति को पुनः उच्च शिखर पर विराजमान किया। भारत एक बार फिर विश्व गुरु के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

स्वामीजी ने राष्ट्र के उत्थान के लिए सदैव स्वयं को समर्पित कर रखा था। कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर स्वामीजी से बहुत प्रभावित थे, उन्होंने कहा–''अगर आप भारत को समझना चाहते हैं तो विवेकानन्द का अध्ययन कीजिए उनमें सब सकारात्मक है, नकारात्मक कुछ भी नहीं।''

स्वामी विवेकानन्द के जीवन–दर्शन का अवलोकन करें तो वह विशाल सागर की तरह है, जीवन के अल्प समय में राष्ट्र के लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण हेतु किए उनके कार्य व विचारों पर लिखना दुरुह है, परन्च कतिपय बिन्दुओं का उल्लेख करना आज के परिप्रेक्ष्य में भी सार्थक प्रतीत होते हैं–

- उन्होंने हमेशा कर्म की प्रधानता पर बल दिया, वे सिद्धान्त व व्यवहार में साम्यता के पक्षधर थे। उन्होंने स्वयं कई स्थानों पर कहा है–''यदि आप लोग मेरे व्याख्यानों में से कुछ बातों को भी जीवन में उतारते हैं, तो यही बड़ी उपलब्धि होगी, उठो! जागो! व काम करो।'' यही उनका मूल मंत्र था।
- उन्होंने सदैव चारित्रिक दृढ़ता पर ही बल दिया। उनका स्वयं का चरित्र एक मिसाल था। छात्रों के चारित्रिक उत्थान की बात करते हुए वे उनके लिए श्रद्धा, एकाग्रता, इच्छाशक्ति व ब्रह्मचर्य पर बल देते थे। धन, शिक्षा से सम्पन्न व्यक्ति यदि चारित्रिक रूप से निम्न है, तो उसके गुण भी अवगुण बन जाएँगे, इसी कारण स्वामी जी उसी शिक्षा को महत्त्व देते थे, जो चरित्र निर्माण में सहयोगी हो।
- वे मूल धर्म के अनुयायी थे। उनके लिए धर्म का अर्थ संकुचित न होकर विस्तारित था। वे कहते थे–''तीर्थ या मन्दिरादि में जाने, तिलक धारण करने अथवा विशेष रंग के वस्त्र पहनने से ही धर्म नहीं होता। जब तक तुम्हारे हृदय का द्वार नहीं खुल जाता जब तक न भगवान की उपलब्धि हो.... तब तक सब वृथा है। यदि हृदय रंगा सको तो बाहर के रंग की आवश्यकता नहीं है।''
- उनमें राष्ट्र प्रेम अगाध था। इस सम्बन्ध में समय–समय पर प्रसङ्गवश जो कहा वह इस प्रकार से है–

1. जब उन्होंने भारत का भ्रमण करते समय देखा–भारत के दरिद्रों, पतितों व असहायों को कोई सहायता देने वाला नहीं है। सम्पन्न समाज राक्षसों की तरह हिंसक होकर उन लोगों पर निरन्तर प्रहार करता जा रहा है और वे बहुत दिनों के अत्याचार सहते रहने के कारण वे लोग भूल गए हैं कि वे भी मनुष्य हैं। दरिद्रता और अशिक्षा के कारण देश की जनता जर्जरित है। सम्पन्न व्यक्ति दरिद्रों के दुःख मोचन करने में सहायता भी नहीं करना चाहते। वे इन्हें अपने भाई समझना, यहाँ तक कि मनुष्य मानना भी भूल गए। जब कि यहाँ की संस्कृति में नर सेवा नारायण सेवा रही है। स्वामी विवेकानन्द ने देशवासियों को पुनः जाग्रत किया उनके मन में आत्मविश्वास जगाया, अपनी संस्कृति पर उनकी श्रद्धा बढ़ायी, शिक्षा के विस्तार करने की एवं देशवासियों को एक दूसरे के प्रति चिन्ता करना सिखाया।
2. भारत की महिमा के प्रसङ्ग में स्वामी जी ने एक बार कहा था–''यदि पृथ्वी में ऐसा कोई देश हो जिसे पुण्य भूमि कहा जा सकता है,.... यदि ऐसा कोई देश है जहाँ मनुष्य जाति के भीतर सबसे अधिक क्षमा, दया, धैर्य, शौच आदि सद्गुणों का विकास हुआ है... तो निश्चय ही मैं बता सकता हूँ कि वह हमारी मातृ भूमि यह भारत वर्ष है।''
3. ''हे वीर, साहस का अवलम्बन करो।.. गर्व के साथ छाती फुलाकर पुकारो भारतवासी मेरे भाई हैं, भारतवासी मेरे प्राण है, भारत के देव देवी हमारे ईश्वर हैं, भारत का समाज मेरी शिशु–शय्या है, मेरे यौवन का उपवन, मेरे वार्धक्य की वाराणसी है, बोलो भाई–भारत की मृत्तिका मेरा स्वर्ग, भारत का कल्याण मेरा कल्याण और दिन रात बोलो–है गौरी नाथ, हे जगदम्बे मुझे मनुष्यत्व दो, माँ मेरी दुर्बलता, कापुरुषता दूर करो, मुझे मनुष्य बनाओ।''
4. एक अंग्रेज मित्र ने उनसे पूछा था–''स्वामीजी, 4 वर्षों तक पाश्चात्य भूमि में भ्रमण करने के अनन्तर आपको अपनी मातृ भूमि कैसी लगेगी?'' उत्तर में स्वामीजी ने कहा था–''पाश्चात्य भूमि में आने के पूर्व भारत को मैं प्यार करता था, अब भारत के प्रत्येक धूलिकरण मेरे लिए पवित्र हैं, भारत की वायु मेरे निकट अष्ट महापवित्र है, भारत अब मेरे लिए तीर्थ स्वरूप है।''
5. देश के कल्याण के लिए यदि नरक जाना पड़े वह भी मेरे लिए श्रेय है।''
6. स्वामीजी ने एक पत्र में लिखा–''भारत के पवित्र 30 करोड़ आदमियों के लिए किसका हृदय रोता है? यही तुम्हारे देवता हो, यही तुम्हारे इष्ट देव बने। उन्ही को मैं महात्मा कहता हूँ, जिनके हृदय से गरीबों के लिए रक्त क्षरित होता है, नहीं तो वह दुरात्मा है।..जितने दिनों तक भारत के करोड़ों मनुष्य दरिद्रता और अज्ञानान्धकार में डूबे रहेंगे उतने दिनों तक जो लोग उनके पैसें से शिक्षित, पर उनकी ओर देखते भी नहीं, ऐसे प्रत्येक व्यक्ति को मैं देश–द्रोही समझता हूँ। जब तक भारत के तीन करोड़ आदमी भूखे पशु के तुल्य रहेंगे, तब तक जो बड़े आदमी उन्हें पीस कर पैसा पैदा करने में शान से घूमते–फिरते हैं और उनकी भलाई के लिए कुछ भी नहीं करते, मैं उन्हें हतभाग्य कहता हूँ।''

स्वामी विवेकानन्द के जीवन–दर्शन के ऐसे अनेक उल्लेखनीय प्रसङ्ग हैं जो आज भी हम भारतीयों के लिए प्रेरणास्पद है तथा राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत करने वाले हैं। हम निश्चय ही उनके पद–चिह्नों पर चलकर एक सशक्त एवं श्रेष्ठ भारत बना सकते हैं।

आज उनके पावन जन्म दिवस के अवसर पर सबसे पावन कार्य यही होगा कि उन्होंने जिन मूल्यों, आदर्शों व वैदिक संस्कृति के उत्थान हेतु पावन यज्ञ की शुरुआत की थी, हम उसमें आहुतियाँ डालते रहें और यह प्रयत्न करें कि सच्चे अर्थों में एक मनुष्य बने जो स्वामी विवेकानन्द सदैव चाहते थे।

जस्सुसर गेट रोड,
धर्म कांटे के पास, बीकानेर (राज.)
मो. 9414144456

जयन्ती विशेष

विवेकानन्द : शोध और शिक्षा-दर्शन

❒ रमेश कुमार शर्मा

शिकागो में विश्व धर्म सम्मेलन में भारतीय धर्म तत्त्व-चिंतक के रूप में व्याख्यान प्रस्तुत कर संपूर्ण जगत में भारतीय ज्ञान-विज्ञान और धर्म-संस्कृति की ध्वजा लहराने वाले स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि भारत की गुरुकुल शिक्षा परम्परागत रूप से विज्ञान शोध आधारित रही है, गुरुकुलों में आचार्य सुरम्य वनों के प्राकृतिक वातावरण में छात्रों को प्राकृतिक सत्य की अनुभूति कराते थे और वर्तमान में बन रहे विद्यालयों में भी वही वातावरण और परम्पराधर्मी विज्ञान शोध आधारित शिक्षा की आवश्यकता है। दुर्भाग्य से ब्रिटिश काल में परकीय सत्ता द्वारा प्रारंभ किया गया वन-गोचर भूमि के विनाश का कार्यक्रम स्वतंत्रता उपरान्त भी त्वरित गति से चलता रहा तथा मैकाले प्रणीत शिक्षा कार्यक्रम यथावत् चलता रहा जिसके कारण विद्यालयों-महाविद्यालयों-विश्वविद्यालयों में श्रम या स्वेद (पसीना) की गँध मात्र से दूर रहने वाले श्वेत कॉलर मानव संसाधन का ही विकास हुआ और परम्पराधर्मी प्राकृतिक सत्यान्वेषण या विज्ञान शोध आधारित शिक्षा के विवेकानन्द जैसे विचारकों का स्वप्न साकार नहीं हो सका।

भारत के बंगाल प्रदेश के नगर कलकत्ता में 12 जनवरी 1863 को जन्मे बालक नरेन्द्र ने ही बड़ा होकर स्वामी विवेकानन्द नाम से ख्याति पाई, जब माता भुवनेश्वरी देवी और पिता विश्वनाथ दत्त का वह बालक युवावस्था में शिक्षाध्ययन उपरान्त कलकत्ता स्थित दक्षिणेश्वर मंदिर में परमहंस स्वामी रामकृष्ण से मिला और जिज्ञासावश उनसे पूछ बैठा, ''क्या आपने आराध्य देवी काली माता के साक्षात् दर्शन किए हैं, और यदि किए हैं तो क्या आप किसी अन्य व्यक्ति का भी उनसे साक्षात्कार करा सकते हैं?'' उत्तर में रामकृष्ण परमहंस ने कहा ''मैं भगवती को वैसे ही साक्षात् देखता हूँ जैसे तुम्हें या किसी भी व्यक्ति को और हृदय से उनका दर्शनाभिलाषी उनके प्रत्यक्ष दर्शन कर सकता है।'' कहा जाता है कि नरेन्द्र अपने विपन्न परिवार को सम्पन्न

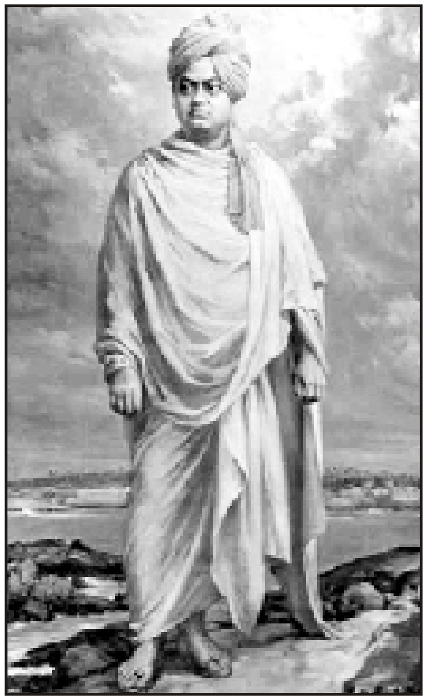

अवस्था में देखना चाहते थे और तत्काल इसी सकाम भावना से हृदय की पूर्ण व्याकुलता के साथ माता की मूर्ति की ओर दर्शन करने दौड़े जैसे ही उन्हें रामकृष्ण देव का संकेत मिला। सचमुच वहाँ पाषाण-प्रतिमा नहीं अपितु साक्षात् काली माता प्रकट रूप में उनके सामने थी जिसने उस दर्शनाभिलाषी के जिज्ञासा भरे नेत्रों से अपनी अपार करुणा भरी दृष्टि मिलाते हुए कहा, ''माँग लो वत्स! जो भी तुम चाहते हो मुझसे माँग लो; मैं तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करूँगी।'' उसी क्षण नरेन्द्र को बोध हुआ कि संपूर्ण संसार की जननी से संसार की तुच्छ असार वस्तुएँ माँगना मूर्खता है। उनके मुँह से एकाएक निकल पड़ा, ''माँ मुझे ज्ञान दो, विवेक दो, भक्ति दो, वैराग्य दो।'' इसी क्षण भगवती काली ''तथास्तु'' कह अन्तर्धान हो गईं और इसी क्षण नरेन्द्र की आँखों के सामने पाषाण-प्रतिमा खड़ी थी। कुछ समय पश्चात् नरेन्द्र ने रामकृष्ण परमहंस को अपना गुरु स्वीकार किया और उनसे अध्यात्म-योग-धर्म की दीक्षा ली। गुरुदेव ने दक्षिणा में नरेन्द्र से यही माँगा कि वह अपना संपूर्ण जीवन भारतीय ज्ञान, विज्ञान, दर्शन और संस्कृति को समर्पित करे और विश्व में इसका प्रचार-प्रसार करे। उन्हीं ने नरेन्द्र को नया नाम भी दिया। वे स्वामी विवेकानन्द कहलाए और गुरुदेव के आशीर्वाद से उन्होंने विश्व में भारतीय ज्ञान-विज्ञान, धर्म-संस्कृति की ध्वजा लहराई।

शिकागो में विश्व धर्म सम्मेलन में वक्तव्य देकर स्वामी विवेकानन्द ने अपार विश्वव्यापी ख्याति अर्जित की। अमेरिका, ब्रिटेन आदि पश्चिमी देशों में उनके प्रशंसक उन्हें अपने देश में आयोज्य धर्मसभाओं में व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित करते थे। स्वामी विवेकानन्द ने पश्चिमी देशों के वन-गोचर आधारित उद्योगों, जैसे वनौषधि और डेयरी उद्योग को सफलतापूर्वक संचालित होते देखा और पाया कि वहाँ अपेक्षतया दुर्बल आर्थिक स्थिति वाले परिवारों के बच्चे भी शिक्षा ग्रहण करते हैं और वन-गोचर आधारित उद्योगों में महज नियुक्ति पाकर कड़ी मेहनत से अपने देश को औद्योगिक समृद्धि के मार्ग पर ले जाते हुए अपने परिवार को भी आर्थिक रूप से समृद्ध बनाते हैं। ऐसे में भारत के गरीब परिवारों का उन्हें स्मरण होता है कि कैसे देश के पशुपालकों के बच्चे उस भूमि पर पर्याप्त हरियाली देखकर भी अपनी गायें, भैसें, बकरियाँ वहाँ नहीं ले जा सकते थे जो भूमि नगरीय विकास या अन्य किसी भी प्रयोजन से विदेशी शासन द्वारा अधिगृहीत कर ली जाती थी। उनके लिए पैतृक व्यवसाय के मार्ग और शिक्षा के द्वार, दोनों ही बन्द कर दिए गए थे। संदीपिनी आश्रम जैसे गुरुकुल, जहाँ राजपुत्र कृष्ण और निर्धन परिवार का बालक सुदामा एक साथ अध्ययन करते हुए गायें चराने निकलते थे, उस समय देश में वाराणसी या उसके समकक्ष धार्मिक महत्त्व के बड़े स्थानों तक ही सीमित रह गए थे। वहाँ की वन-गोचर भूमि और उनमें चल रहे गुरुकुल नष्ट करने की योजना भी सरकार ने विश्वविद्यालय और महाविद्यालय आदि निर्मित करने के नाम पर बनाई और अंततः उन्होंने यह

सब कर दिखाया। स्वामी विवेकानन्द ने पाया कि पश्चिमी देशों में सरकारें अपने यहाँ भारत की पारम्परिक शिक्षा प्रणाली और व्यवसाय पद्धति जैसा वातावरण बनाने में मनोयोग से जुटी हैं। जबकि भारत में शासन कर रही ब्रिटिश सत्ता उसी पारम्परिक शिक्षा प्रणाली और व्यवसाय पद्धति को जड़मूल से नष्ट करने में लगी है ताकि पढ़ा लिखा श्वेत कॉलर मानव संसाधन तैयार करने वाली मैकाले प्रणीत शिक्षा प्रणाली देश में फलफूल सके और भारतीय समाज आर्थिक विषमता की एवं भारतीय अर्थव्यवस्था मुद्रा अवमूल्यन की खाई में गिरकर अधोगति को प्राप्त हों। परमविदुषी सरला घोषाल के साथ अपने विचारों को साझा करते हुए उन्होंने अपने हृदय की वेदना व्यक्त की है। श्रीमती घोषाल को एक पत्र में उन्होंने लिखा, ''मैं विदेशों में आर्थिक रूप से दुर्बल परिवारों के लोगों और उनके बच्चों की बढ़ती सम्पन्नता और शिक्षा को देखता हूँ तो अपने देश के निर्धन लोगों का स्मरण हो आता है और मेरी आँखें आँसुओं से छलछला उठती हैं। विदेशों में पारम्परिक भारतीय शिक्षा प्रणाली विकसित होते हुए देखता हूँ तो मुझे लगता है कि वहाँ का ब्राह्मण (पारम्परिक शिक्षक) निद्रा त्याग रहा है और उसमें जागृति के लक्षण हैं। किन्तु मैं अपने देश में अपनी शिक्षा प्रणाली को विनष्ट होते देखता हूँ और मुझे लगता है कि हमारा ब्राह्मण सुषुप्तावस्था में जा रहा है।''

श्रीमती घोषाल ने स्वामी विवेकानन्द की भारतीय शिक्षा प्रणाली से जुड़ी पीड़ा भारत के कुछ समर्थ लोगों से साझा की। संभवत: उनके अनुरोध पर वर्ष 1894 में स्वामी विवेकानन्द ने मैसूर नरेश श्री कृष्णराजा वोदियार को पत्र लिखा था जो मैकाले प्रणीत शिक्षा प्रणाली के चलते भारतीयों के स्वाभिमान पर हो रहे आघात पर आर्तनाद करता प्रतीत होता है और परम्पराधर्मी विज्ञान शोध आधारित शिक्षा को सामान्य जन तक पहुँचाने का आह्वान करता है। उन्होंने लिखा, ''मैकाले शिक्षा तंत्र अपने समस्त शासकीय उपकरणों से युक्त होकर श्रेष्ठ होने का दावा करता हुआ भारतीय भावनाओं को इतना कुचल चुका है कि पारंपरिक भारतीय जीविका (वन-गोचर आधारित व्यवसाय) और शिक्षा (गुरुकुल) पद्धति से जुड़े भारतवासी यह भी भूल चुके हैं कि वे मनुष्य हैं। ब्रिटिश शासन के कुचक्र तले विज्ञान और तकनीकी शिक्षा के नाम पर भी श्वेत कॉलर मानव संसाधन ही विकसित हो रहा है। जिसके साथ हमारी पारम्परिक श्रम शक्ति (वनजीवी, पशुपालन) कदमताल नहीं कर सकती। श्वेत कॉलर बनाने वाले स्कूलों में हमारे श्रमजीवियों के बच्चे घुस भी नहीं सकते। अरबी में कहावत है कि पर्वत मोहम्मद के पास नहीं जा सकता तो मोहम्मद को पर्वत तक जाना होगा। भारत की परिस्थितियों के संदर्भ में यह कहावत बन जानी चाहिए कि बच्चा स्कूल तक नहीं जा सकता तो स्कूल को बच्चे के पास आना चाहिये। भारतीय परम्पराओं में ही ऐसा संभव है। हमारे देश में विज्ञान और तकनीकी शोध आधारित शिक्षा के विद्यालय, संस्थान आदि संचालित करने में धन की आवश्यकता है जो देश की निर्धन जनता द्वारा नहीं जुटाया जा सकता। महाराज! आप और आप जैसे कुछ अन्य महानुभाव देश में अच्छे बड़े स्कूल और संस्थान तो चला सकते हैं किंतु वहाँ भी निर्धन परिवारों के बच्चे, जो अपने माता-पिता के काम में हाथ बँटाते हैं, नहीं आ सकते। तो प्रश्न यह है कि बच्चे तक विद्यालय कैसे पहुँचेगा। हाँ, ऐसा भी संभव है यदि भारत के साधु, संत, संन्यासी, परिव्राजक शिक्षा से वंचित प्रत्येक घर तक जायेंगे और उन बच्चों को उनके सहज समय में कहीं एकत्रित कर धर्म, अध्यात्म, आदर्श, नैतिक शिक्षा के साथ-साथ वस्तुनिष्ठ विषय ज्योतिष, भूगोल, गणित, विज्ञान भी पढ़ायेंगे।''

स्वामी विवेकानन्द पेड़-पौधों में जीवन प्रमाणित करने वाले वैज्ञानिक डॉ. जगदीशचन्द्र बसु के प्रायोगिक कार्य पर बहुत गर्व अनुभव करते थे। वे उस अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान शोध महासभा में श्रोता के रूप में उपस्थित हुए थे जिसमें डॉ. बसु ने अपना शोध संबंधी व्याख्यान प्रस्तुत किया था। विश्वविख्यात वनस्पति विज्ञानवेत्ताओं की मंडली ने उन्हें ध्यान से सुना था और करतल ध्वनि से उनके वक्तव्य का समर्थन कर उनकी शोध को प्रमाणिक माना था। विज्ञान शोध आधारित शिक्षा प्रणाली पर कुछ लिखते हुए अथवा बोलते हुए वे डॉ. बसु के शोधकार्य का वर्णन करते थे। वे कहते थे कि ''वानिकी, पशुपालन और कृषि के क्षेत्र में अंग्रेजों और पश्चिम के लोगों ने भारतवासियों से ही सीखकर विकास किया है; तथापि वनस्पति जगत को जड़ मानने की पाश्चात्य विचारधारा से वे ग्रस्त थे। भारतीय वाङ्मय, रामायण व महाभारत आदि में पेड़ों के चैतन्य पर बल दिया गया है और बहुत कुछ लिखा गया है जिसे पढ़कर भी पाश्चात्य विद्वान पेड़-पौधों को जड़ ही मानते रहे।'' स्वामी विवेकानन्द गर्व से कहते थे कि ''डॉ. बसु ने क्रेस्कोग्राफ यंत्र का आविष्कार कर उसके माध्यम से वनस्पतियों की सूक्ष्म संवेदनाओं का अंकन कर हमारे ऋषि-मुनियों द्वारा इस संबंध में उच्चारित प्रत्येक वाणी का प्रायोगिक सत्यापन कर विश्व में भारतीय विज्ञान का ध्वज लहराया।'' विवेकानन्द के अनुसार परम्पराधर्मी विज्ञान शिक्षकों को ऐसा ही प्रयोगधर्मिता का वातावरण देश में बनाना होगा।

प्रसिद्ध उद्योगपति जमशेदजी नसरवानजी टाटा भी विवेकानन्द के विचारों से बहुत प्रभावित हुए थे। संयोगवश वे एक बार जापान से शिकागो के लिए यात्रा करते हुए स्वामीजी से मिले थे और उन्होंने उनसे इस विषय पर लम्बी वार्ता की थी। बाद में 23 नवंबर 1898 को जमशेदजी ने उन्हें एक पत्र भी लिखा था और इसमें विज्ञान शोध आधारित शिक्षा से जुड़े संस्थान की स्थापना करने का संकल्प व्यक्त करते हुए उसके व्यय का दायित्व वहन करने की बात कही थी। कई वर्षों बाद 1909 में वह संस्थान बना और बैंगलोर में बने भवन में 'इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ साइन्स' के नाम से संस्थापित हुआ। तब तक स्वामी विवेकानन्द और जमशेदजी टाटा धराधाम से विदा ले चुके थे। जमशेदजी के पुत्र दोराबजी टाटा, स्वामी विवेकानन्द की शिष्या भगिनी निवेदिता, मैसूर नरेश कृष्णराजा वोदियार और विलियम रेमसे के अथक प्रयासों से वह संस्थान अस्तित्व में आया था।

वह संस्थान अभी भी चल रहा है परन्तु विवेकानन्द का प्रश्न ज्यों का त्यों खड़ा है। क्या पारंपरिक श्रमजीवी, पशुपालक, वनजीवी, गाड़िया लोहार, सिकलीगर परिवार से कोई बच्चा वहाँ पहुँच पाया और शिक्षा पा सका? यदि नहीं तो क्या संस्थान उन बच्चों तक पहुँच सका?

6/134 मुक्ता प्रसाद नगर
बीकानेर (राज.)
मो. 09636291556

जयन्ती विशेष

गुरु गोविन्दसिंह : पुण्य स्मरण

❒ ओमदत्त जोशी

भारत की धरा नर रूपी रत्नों की खान है। यहाँ वीर-धीर, धार्मिक, दार्शनिक और अनेक क्षेत्रों में अपनी विशिष्ट पहचान रखने वालों ने समय-समय पर जन्म लिया है। ऐसे ही एक महापुरुष गुरु गोविन्द सिंह ने सन् 1666 ई. में गुरु तेग बहादुर के घर जन्म लिया। सिक्ख धर्म के चार तख्त हैं जिसमें पटना में श्री हरिमंदिर जी पटना साहिब का दूसरा स्थान है। गुरु गोविन्द सिंह, गुरु नानक द्वारा संस्थापित सिक्ख समुदाय के दसवें एवं अन्तिम गुरु थे। पिता ने इनको हिन्दी, संस्कृत और फारसी भाषा के अध्ययन के साथ बाण चलाना, घोड़े पर चढ़ने और युद्ध विद्या में भी दक्षता दिलवायी। गोविन्द सिंह घर छोड़ यमुना और सतलज के बीच शिवाशका की डूब में चले गये। वहीं वे अध्ययन, शस्त्र संचालन तथा संगठन करते हुए आगे कार्यक्रम बनाने लगे। वे पुराण, रामायण एवं महाभारत के वीर चरित्रों से बहुत प्रभावित हुए। इससे उन्हें बल मिला और धर्म की रक्षा की दृढ़ता प्राप्त हुई।

प्रेरक प्रसंग:- दुर्गम हिमालय में बीस वर्ष रहे। उसके बाद उन्होंने अनुयायियों एवं भक्तों की सभा की। सभा में उन्होंने कहा कि ''माँ दुर्गा आज बलिदान माँग रही है। है कोई गुरु का प्यारा जो अपनी भेंट चढ़ाने को तैयार हो?'' सभा में सन्नाटा छा गया। स्तब्धता को भंग करते हुए लाहौर का दयाराम उठा और कहने लगा, ''गुरु सेवक का सिर तैयार है, माँ की इच्छा पूरी कीजिए।'' सभा स्थल के पास ऊँचा टीला था उस पर कनात का घेरा पड़ा था जिसमें पहले से बकरे बँधे थे। दयाराम को गुरु उसी घेरे में ले गए। गुरु ने घेरे में से एक बकरे को तलवार से काट कर, रक्त से सनी तलवार ले कर बाहर आ गए। घेरे में खून धार बहकर बाहर आया, सभी दंग रह गए। गुरु ने बाहर आते ही फिर कहा-''अभी माँ का मन नहीं भरा है। है और कोई माई का लाल!'' फिर सन्नाटा। थोड़ी देर बाद दिल्ली के धरमराम आगे आए। गुरुजी उसे कनात में ले गए। गुरु जी ने दूसरे बकरे की गर्दन पर तलवार चलाई। रक्त की धार निकली लोगों ने समझा धरमा की भी बलि हो गई है। गुरुजी रक्त से भरी तलवार लेकर कनात से बाहर आए। इसी प्रकार तीन और भेंट माँगी। फिर कनात को खोल कर पाँचों प्यारों को बाहर लाए। लोगों में रोमांच हो गया। हर्षनाद से आकाश गूँज उठा। उसी समय

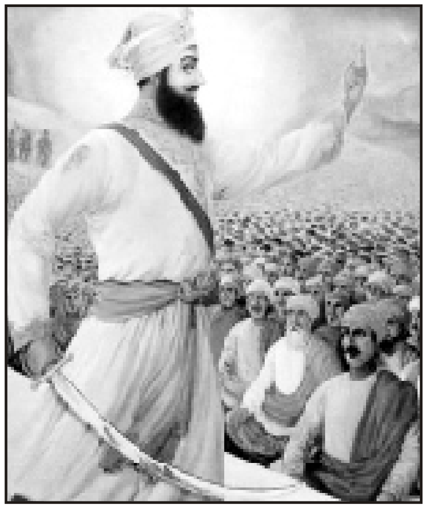

गुरु ने एक बड़े पात्र में पानी मंगवाया। अपना कृपाण डूबा दिया, वही अमृत सिक्खों को पिलाया। अब उन्हें 'अकाली' कहा। सिक्खों की जमात को खालसा नाम दिया। सिक्खों की पहचान पाँच वस्तुओं से होने लगी। प्रत्येक नाम 'क' वर्ण से प्रारम्भ होता है- केश, कंघा, कृपाण, कड़ा, कच्छा। जो वर्तमान तक देखा जाता है।

समाज को देन- आपने भारतीय समाज को नवीन प्रेरणा-प्रदान की। उन्होंने सिक्खों को संगठित कर तत्कालीन बादशाह के विरुद्ध आवाज उठाई। सभी सुखों पर लात मार दी। जीवन को संयमी बना कर अस्त्र-शस्त्र सीखा। उनके कई अनुयायी बन गए। वे भी विलासी जीवन छोड़ सादगी के साथ रहने लगे। देश को अत्याचारी शासन से बचाने के लिए युद्ध में जूझना होगा। इसीलिए उनका जीवन भी सादा होना चाहिए। शिष्यों में सादगी का आदर्श के साथ-साथ उन्हें सैनिक शिक्षा ग्रहण करने के लिए उत्तेजित करते रहे। शिष्यों को आज्ञा दी कि केवल युद्ध में काम आने वाली वस्तुएँ ही भेंट में लाया करें। इससे गुरु जी का भण्डार अस्त्र-शस्त्रों से भरने लगा। अब वे धार्मिक गुरु के रूप में न रह कर सेनापति के रूप में रहने लगे। गुरु जी उपदेश देते कि ''संसार में मानव जीवन तभी सफल है जब वह अपने समाज, देश और धर्म की सेवा कर सके। हम आज परतंत्र है। संसार में गुलाम रहना सब से भारी पाप है। समय आ गया है अब स्वतंत्रता का युद्ध छिड़ेगा।'' ऐसे उपदेशों से बच्चे-बच्चे में देश और धर्म के नाम पर बलिदान होने का भाव जाग्रत हो गया।

गुरु जी ने देखा कि हमारा समाज बहुत सी उप जातियों में बँटा है। इन जातियों में इतना भेदभाव है कि यदि इन बिखरी हुई जातियों को एक सूत्र में न बाँधा गया तो स्वतंत्रता का कार्य कभी सफल नहीं हो सकेगा। उन्होंने कहा कि संसार में सब भाई-भाई है, कोई किसी से छोटा या बड़ा नहीं है। बड़ा वही है जो बड़ा कार्य करे।

राजनैतिक कार्य- गुरु ने शत्रुओं को नष्ट करने के लिए पंजाब के पहाड़ी प्रदेशों के छोटे-छोटे राज्यों के नरेशों को जातीयता के नाम उत्साहित करके एक झण्डे के नीचे लाने का प्रयत्न किया किन्तु कायर राजा दिल्ली के विरुद्ध तलवार कैसे उठा सकते थे? अतः इन राजाओं को छोड़ दिया। सब राजाओं ने अपनी-अपनी सेना के साथ गुरुजी के शिष्यों से युद्ध छेड़ा। आनन्दपुर के मैदान में गुरु की सेना से उनका सामना हुआ। राजाओं की सेना तितर-बितर हो गई।

इस अपमान का बदला लेने के लिए सब राजाओं ने मिलकर औरंगजेब को पत्र लिखा कि गुरु अपने आपको राजा कहने लगा है। वह आपको अपमानित करता है। इससे कट्टर ओरंगजेब ने एक बड़ी सेना गुरु को परास्त करने को भेजी। सतलज और यमुना के मध्य मैदान सरहिन्द में गुरु का इस सेना से भयंकर युद्ध हुआ। 'वाहे गुरु, वाहे गुरु, सत् श्री अकाल' के नारों से सिक्ख सेना झूमने लगी। शाही सेना के छक्के छुड़ा दिए। मुट्ठी भर सिक्ख सेना, बड़ी सेना का अधिक मुकाबला नहीं कर सकी। मुसलमानों ने गुरुजी को घेर लिया। बहुत दिनों तक गुरु आनन्दपुर के किले में रहे और युद्ध करते रहे। सरहिन्द के सूबेदार का सिर उतार लिया। इस युद्ध में गुरु जी के दो पुत्र शत्रुओं के हाथ में आ

गए। जिन्हें दीवार में जिन्दा ही चिनवा दिया गया क्योंकि उन्होंने इस्लाम स्वीकार नहीं किया था।

शिक्षा– गुरु जी के चरित्र से हमें एक बहुत महत्त्वपूर्ण शिक्षा मिलती है कि अपने लक्ष्य के सामने संसार की प्रिय से प्रिय वस्तु को भी तुच्छ समझना चाहिए। यद्यपि गुरुजी अपने जीवन काल में स्वतंत्र राज्य स्थापित नहीं कर पाए तथापि उन्होंने सुप्त समाज में शक्ति पैदा कर दीं। आज करोड़ों लोग उनका नाम श्रद्धा और भक्ति से लेते हैं। संसार में जो मानव अपने स्वार्थ का ध्यान न रखें, अपने देश के नाम पर बलिदान हो जाता है वह यश और सम्मान पाता है। गुरु जी बहुत दयालु और सहनशील थे। एक बार गुरुजी के हाथों से एक मुसलमान युद्ध में मारा गया था। उनके दोनों छोटे बालकों का गुरुजी ने लालन-पालन किया। बड़े होने पर उन्हीं में से एक ने अवसर देख कर गुरु जी की छाती में छुरा भोंक दिया। उसे पकड़ लिया गया। लेकिन गुरु जी ने उदारता प्रदर्शित करते हुए कहा-''भाइयों इसे छोड़ दो, इन्होंने केवल अपने पिता की मृत्यु का बदला ही तो लिया है। मैं इनको हृदय से क्षमा करता हूँ।''

मृत्यु के पूर्व उन्होंने गुरु प्रथा बन्द कर दी थी। इसी कारण पंथ में श्री गुरु ग्रंथ साहब को गुरु स्थान मिला। तब से खालसा पंचायत का निर्णय 'गुरु मत' हुआ और ग्रंथ ही पंथ का एकमात्र पथ-प्रदर्शक है। गुरु जी गौरवपूर्ण राष्ट्र की रक्षा और आर्य जाति के पुनरुत्थान का स्वप्न साकार करने की प्रबल आकांक्षा रखते थे। वे सिक्ख धर्म के अन्तिम गुरु थे। भक्त के साथ सैनिक भी थे। सच्चे वीर पुरुष की भाँति कभी अपने राष्ट्र निर्माण के पथ से विचलित नहीं हुए। जीवन भर आर्य भूमि को जगाने और मानव में वीरता, स्वतंत्रता एवं स्वाभिमान की भावना अंकुरित करने में ही व्यस्त रहे। वे न केवल एक महान जननेता और कुशल सेना नायक ही थे वरन् एक उद्भट तत्ववेत्ता, पहुँचे हुए महात्मा तथा कवि हृदय साहित्यकार भी थे। उनकी 'विचित्र नाटक' जैसी कृतियाँ आज भी उनकी सर्वतोन्मुखी प्रतिभा की ज्वलंत साक्षी के रूप में हमारी आदरणीय है। उनकी जयन्ती को राष्ट्रीय त्यौहार के रूप में मनाया जाना चाहिए।

पूर्व व्याख्याता-'साहित्य सदन'
वर्धमान कॉलेज के पास-ब्यावर-305901
मो. 9309353637

शहीद दिवस

गाँधीजी : एक आदर्श

❒ **रामजी लाल घोड़ेला**

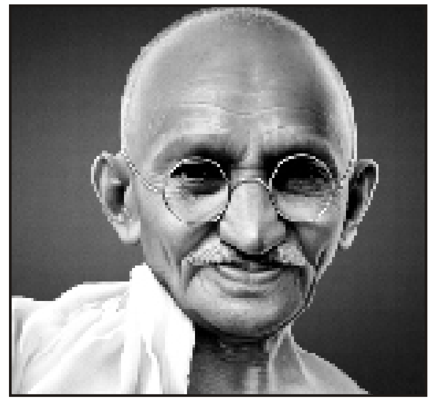

गाँधी जी का देश की जनता पर बहुत प्रभाव था। जनता उनकी एक आवाज पर अंग्रेजी सरकार को चुनौती देने निकल पड़ी थी। गाँधी जी ने देश को आजाद कराने का जो संकल्प लिया, उसे पूरा कर दिखाया। अहिंसा और सत्य की खोज गाँधी जी के महान उद्देश्य थे।

राष्ट्र प्रेम में ही मानव कल्याण

गाँधी जी एक महान युगद्रष्टा, मनीषी, समाज सुधारक और महामानव के रूप में सारे संसार में लोकप्रिय थे। उन्होंने जन कल्याण, समाज सेवा और राष्ट्र प्रेम का एक नया रास्ता विश्व को दिखाया। उन्होंने जो लिखा और अपने प्रवचनों के माध्यम से जनता को जो उपदेश दिया, वह आज भी प्रासंगिक है। महात्मा गाँधी जो कार्य दूसरे को करने को कहते थे, उसे पहले स्वयं करके दिखलाते थे। मानव कल्याण गाँधी जी द्वारा दिखाए रास्ते पर चल कर ही सम्भव है। आज विश्व बन्धुत्व, शांति, अहिंसा सद्भाव की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है।

जनशिक्षा से ही स्वराज

गाँधी जी ने राजनीति के साथ-साथ सामाजिक सांस्कृतिक, साहित्य क्राँति का सूत्रपात भी किया। गाँधी जी की महानता इस लिए भी थी क्योंकि आज मनुष्य मात्र में समानता, दलित उद्धार और ग्राम स्वराज की भावना होना आवश्यक है। वे इसके प्रबल समर्थक थे। हमारे देश के संविधान में प्रत्येक नागरिक को जो समान अधिकार दिए गए हैं। इसके लिए गाँधी जी का विशेष आग्रह था, क्योंकि स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान गाँधी जी ने यह संकल्प किया था। ग्रामीण जनता को लिखना पढ़ना सिखाने तथा उनके जीवन स्तर को उन्नत करने के लिए भी गाँधी जी ने प्रेरणा दी थी। उनका यह विश्वास था कि देश को सुदृढ़ करने के लिए नागरिकों का शिक्षित होना बहुत जरूरी है। पढ़-लिख कर व्यक्ति उन्नति और विकास की नई-नई योजनाओं से अधिक लाभ प्राप्त कर सकता है। इससे जनता में आत्म विश्वास भी अधिक आ जाता है तथा समानता और भाईचारे की कड़ियाँ भी सुदृढ हो जाती है। बापू ग्राम स्वराज को देश के लिए बहुत आवश्यक मानते थे, क्योंकि लोग आपसी भेद भाव भुलाकर ग्रामों की उन्नति के कार्यों में योग देते हैं और शांत वातावरण में जीवन निर्वाह करते हैं। आप हरिजन कल्याण के लिए जीवन भर संघर्ष करते रहे।

प्रेरणादायी चरित्र और समर्पण

गाँधी जी हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। गाँधी जी का देश की जनता पर बहुत प्रभाव था। गाँधीजी अपने प्रेरक आचरण और सादा रहन-सहन के लिए संसार में जाने जाते हैं। उनका महामानव होना उनकी उपलब्धियों से नहीं उनके प्रेरक चरित्र में निहित था। कार्य और लक्ष्य की पवित्रता, अपने लक्ष्य के लिए महान समर्पण की भावना, गाँधी जी की महानता को बढ़ाती है। अहिंसा और सत्य गाँधी जी का जीवन आदर्श रहा। देश सदियों से दासता, अमीर-गरीब के बीच की असमानता, धार्मिक पाखण्ड, साम्प्रदायिक संकीर्णता और शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ेपन के कारण दुर्दशा को पहुँच गया था, उसे स्वतन्त्र करवाने का गौरव गाँधी जी को ही प्राप्त हैं। यह गाँधी जी का ही चमत्कार था।

नैतिक मूल्यों के समर्थक व रचनात्मकता

गाँधी जी नैतिक मूल्यों के भी प्रबल समर्थक थे। उन्होंने एक बार कहा था कि नैतिकता के बिना स्वतन्त्रता का कोई अर्थ नहीं

होता। समाज में नैतिकता न रहे तो स्वतन्त्रता भी समाप्त हो जाएगी। महात्मा जी ने दक्षिण अफ्रीका की सरकार से सफलतापूर्वक टक्कर लेकर वहाँ के काले कानूनों को वापस करवाया। वहाँ से स्वदेश लौटकर गाँधी जी ने देश में घूमकर जनता की कठिनाइयों और समस्याओं की जानकारी प्राप्त की। गाँधी जी ने देश को स्वतन्त्र करवाने के लिए लड़ाई लड़ी तथा जनता ने इसमें जो सहयोग दिया ऐसा उदाहरण संसार के इतिहास में कम देखने को मिलता है। पुरुषों के साथ महिलाएँ भी देश को आजाद करवाने के लिए सक्रिय रूप से आगे आई। गाँधी जी ने सामान्य नागरिक के साथ रहना शुरू कर दिया। उन्होंने आम जनता को भलाई के लिए रचनात्मक योजनाएँ तैयार की। कई बार विदेशी वस्तुओं की होली जलाई गई। जलियांवाला हत्याकांड गाँधी जी के लिए बहुत बड़ा आघात था। अँग्रेज सरकार से इनका विश्वास उठ गया। उन्होंने केवल भारत के ही नहीं, अपितु सारे संसार से साम्राज्यवादी शक्तियों को समाप्त करने के लिए संघर्ष किया, जनमत तैयार किया।

गाँधीवाद एक दर्शन

संसार में बीसवीं सदी में जो महापुरुष पैदा हुए, उनमें गाँधी जी को गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। उनकी विचारधारा का संसार पर गहरा प्रभाव पड़ा। गाँधी जी ने जीवन भर विश्वास के साथ अपनी कल्पना को साकार करने के लिए कार्य किया। भारत के सांस्कृतिक जीवन की कितनी सुन्दर, सशक्त और सजीव अभिव्यक्ति बापू ने अपनी रचनाओं में की है। वह उनके गहन अध्ययन और विद्वता का परिचायक है। बापू ने जीवन मूल्यों का निर्धारण उस सांस्कृतिक रूप में किया, जिनमें सत्य, अहिंसा, करुणा, विश्वबन्धुत्व, विश्वकल्याण, विश्वशांति, समृद्धि, सहिष्णुता आदि मानव जीवन के मूल्यों को उन्होंने अपने जीवन में व्यावहारिक रूप दिया।

बापू का आदर्श 'सादा जीवन' उच्च विचार सारे संसार के लिए प्रेरक है। आत्म-सुखों की इच्छा से रहित गाँधी जी का जीवन महान प्रेरणा देता है। गाँधी जी ने अपने व्यस्त जीवन में भी गहन अध्ययन किया। उन्होंने चुने हुए विषयों पर अपने बहुमूल्य विचार दिए। यह साहित्य आज संसार के लिए चिन्तन और मनन का विषय है। यह आगे भी रहेगा। उनके विचार गाँधीवाद के रूप में संसार में अपनाए गए हैं। संसार की अनेक भाषाओं में उनके बारे में लिखा गया है अनेक भाषाओं में उनका अनुवाद हुआ।

किसी भी महापुरुष को सच्ची श्रद्धांजलि यह है कि उनके आदर्शों, उपदेशों, शिक्षाओं और सिद्धान्तों का पूरी तरह अनुसरण किया जाए। उन्होंने जो कुछ किया, वह हमारे लिए प्रेरक है। विश्वबन्धुत्त्व की भावना को लोकप्रिय बनाने की आज बहुत आवश्यकता है।

महाकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की बापू के लिए लिखी ये पंक्तियाँ सहज ही स्मरण हो जाती है।

गाँधी, बुद्ध, अशोक नाम है बहुत बड़े स्वपनों का।
भारत स्वयं मनुष्य जाति की बहुत बड़ी कविता है।
गाँधी, बुद्ध, अशोक विचारों से अब नहीं बचेंगे।
वसुधा ने ही विकल तुम्हें उत्पन्न किया है।।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय आडसर
लूनकरणसर, बीकानेर
मो. 9414273575

इस माह का गीत

आ गया संक्रान्ति का संदेश पावन

आ गया! आ गया! आ गया संक्रान्ति का संदेश पावन
संक्रमण का पर्व यह जनमन सुहावन।।

त्यागकर गत पंथ दिनकर बढ़ चला नूतन डगर।
नियति मधुऋतु वरण करती, आज नव श्रृंगार कर।।
सुरभि बिखरा गगन करता स्वहित गायन
संक्रमण का पर्व.....।।1।।

स्नेह समता बन्धुता का भाव जन-जन में जगा।
प्रांत भाषा पंथ की गत कालिमा को दे भगा।।
तृप्त सेवा भाव से कर दे सभी का हृदय पावन
संक्रमण का पर्व....।।2।।

ज्ञान और विज्ञान के ऐश्वर्य का सूरज उगाएँ।
स्वेद शोषित को बहा समृद्धि का सरसिज खिलाएँ।।
मातृभू का हम करें समवेत स्वर से आज गायन
संक्रमण का पर्व....।।3।।

इस सनातन राष्ट्र का फिर विश्व में यशकीर्तिछाये।
राष्ट्र का जयकेतु पावन विश्व में फिर लहलहाये।।
चूर कर दो गर्व अरि का, दृष्टि जो फेरे अपावन
संक्रमण का पर्व.....।।4।।

आ गया...................................... सुहावना।।

संकलन : **मुरलीधर पालीवाल**, व्याख्याता
रा.उ.मा.वि. गिर्राजसर, बीकानेर
मो. 8003391413

जयन्ती विशेष

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के शिक्षा विषयक विचार

❐ विजय सिंह माली

'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा', 'दिल्ली चलो', 'जय हिन्द' जैसे राष्ट्रवादी नारों से समूचे भारत को प्रेरित करने वाले देशभक्त शिरोमणि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने मातृभूमि की आजादी और उसकी समृद्धि को अपने जीवन का ध्येय बनाकर अहर्निश कार्य किया। सुभाष चन्द्र बोस का जन्म उड़ीसा के कटक शहर में 23 जनवरी 1897 प्रभावती देवी की कोख से हुआ। इनके पिता का नाम जानकी नाथ बोस था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा कटक में हुई। ये जन्मजात देशभक्त थे। भारतीयों के लिए 'ब्लैक मंकी' शब्द का प्रयोग करने वाले अंग्रेजी शिक्षक का प्रतिरोध करने से भी नहीं हिचकिचाए। प्रथम श्रेणी से बी.ए. पास कर पिता की इच्छानुसार इंग्लैण्ड गए जहाँ आई.सी.एस. परीक्षा उत्तीर्ण की लेकिन देशभक्त सुभाष चन्द्र बोस ने आई.सी.एस. की नौकरी को गुलामी का प्रतीक मानकर उसे ठोकर मार दी और आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी निभाई। साईमन कमीशन के भारत आगमन पर विरोध किया। अपनी कार्यशैली से युवाओं में लोकप्रिय हो चुके बोस 1938 में हरिपुरा अधिवेशन में काँग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। 1939 के त्रिपुरी अधिवेशन में भी वे पुनः अध्यक्ष चुने गए। काँग्रेस के वरिष्ठ नेताओं के असहयोग व मतभेद के चलते उन्होंने काँग्रेस छोड़ दी व 'फारवर्ड ब्लॉक' की स्थापना की।

ब्रिटिश शासन ने नेताजी को पहले जेल में, फिर घर में नजरबंद किया पर सुभाष बाबू वहाँ से निकल कर अफगानिस्तान-रूस होते हुए जर्मनी पहुँच गए। वहाँ अंग्रेजों के विरोधी देशों के सहयोग से भारत की स्वतंत्रता का प्रयास किया। 1943 में वे जापान पहुँचे तथा आजाद हिन्द फौज का नेतृत्व संभाला। 5 जुलाई 1943 को सिंगापुर के टाउन हॉल में आजाद हिन्द फौज के सैनिकों को सम्बोधित करते हुए 'दिल्ली चलो' का नारा दिया। 21 अक्टूबर 1943 को उन्होंने 'आजाद हिन्द सरकार' की स्थापना की

जिसे जर्मनी, जापान, इटली सहित कई देशों ने मान्यता दी। जापान ने अपने अधीन अंडमान निकोबार द्वीप पर 'आजाद हिन्द सरकार' को अधिकार प्रदान किए। नेताजी ने इन द्वीपों को नए नाम ' शहीद द्वीप' व 'स्वराज द्वीप' नाम दिया। 1944 में आजाद हिन्द फौज ने ब्रिटिश सेना पर आक्रमण किया। 'कोहिमा युद्ध' में इस फौज के सैनिकों ने अप्रतिम शौर्य प्रदर्शन किया। आजाद हिन्द फौज भारत में प्रवेश कर चुकी थी। दुर्भाग्य से तभी हिरोशिमा-नागासाकी परमाणु विभीषिका के बाद जापान को पीछे हटना पड़ा। आजाद हिन्द फौज का पक्ष कमजोर हो गया। सुभाष बाबू को विमान से जापान जाना पड़ा।

विमान दुर्घटना में नेताजी चोटिल हो गए अथवा उनकी मृत्यु हो गई। इस तथ्य को लेकर आज भी विवाद है। उनके परिजनों व बहुत से लोगों का मानना है कि नेताजी की मृत्यु विमान दुर्घटना में नहीं हुई।

आज सुभाष चन्द्र बोस हमारे बीच नहीं है लेकिन उनके विचार व कार्य हमारे लिए प्रेरक व अनुकरणीय है। नेताजी ने भारत की आजादी के चिंतन के साथ ही साथ उसकी खुशहाली का भी चिंतन किया था। नेताजी ने भारतीय शिक्षा को लेकर भी समय-समय पर विचार व्यक्त किए। नेताजी एक महान शिक्षा शास्त्री भी थे। उनका शिक्षा शास्त्री रूप खोज का विषय है।

नेताजी के शिक्षा विषयक विचार इस प्रकार है-

1. नेताजी आवश्यक समझते थे कि शिक्षा किसी स्तर की क्यों न हो, मातृभाषा के माध्यम से छात्रों में उत्कृष्ट राष्ट्रीय भावना उत्पन्न की जाए। उनका दृढ़ विश्वास था यदि विद्यार्थियों में राष्ट्रीय संवेग (भाव) को दृढ़ कर दिया जाय तो देश के सर्वांगीण विकास में उनकी रुचि रहेगी और वे कुछ भी कार्य करेंगे, अन्तः प्रेरणा से करेंगे।
2. देश की निरक्षर जनता एक विकट समस्या है और देश के कई भागों में 90 प्रतिशत तक निरक्षरता है। यदि शासन आवश्यक निधि का प्रावधान करे तो यह समस्या सुलझाई जा सकती है।
3. देश की भावात्मक एकता के लिए नेताजी प्राथमिक शिक्षा के प्रांगण से ही बालक-बालिकाओं को तैयार करना चाहते थे। उनका विश्वास था कि इस अवस्था में डाले गए संस्कार गहरे होते हैं और जीवन में अधिक समय तक वे साथ देते हैं। नेताजी छात्र-छात्राओं को इस प्रकार की शिक्षा देना चाहते थे जिससे नैसर्गिक रूप से उनकी अधिकाधिक क्षमताओं का विकास कर सकें। सन् 1925 में मांडले जेल से नेताजी ने कलकत्ता के समाज सेवी मित्र हरिचरण बागची को पत्र लिखा जिसमें उन्होंने प्राथमिक शिक्षा विषयक विचार व्यक्त किए है- इस पत्र के आलोक में हम नेताजी के विचार को इन बिन्दुओं में समाविष्ट कर सकते हैं-

i. बच्चों की ज्ञानेन्द्रियों का विकास करना ही प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।

ii. प्राथमिक स्तर पर केवल नए तथ्यों की जानकारी ही देना चाहिए, उन पर सैद्धांतिक ज्ञान नहीं लादना चाहिए।

iii. बच्चों की सृजनात्मकता, मौलिकता और वैयक्तिकता के विकास के लिए यथेष्ट अवसर देने चाहिए।

iv. बच्चों की रुचियों को जाग्रत करना चाहिए।

v. बच्चों को अवधान केन्द्रित करने का प्रशिक्षण देना चाहिए।

vi. प्राथमिक शिक्षा की विधियों में शारीरिक श्रम को स्थान देना चाहिए।

vii. बच्चों को नया ज्ञान कहानियों के माध्यम से देना चाहिए।

viii. खेल पद्धति द्वारा बच्चों को सिखाना चाहिए।

ix. शिक्षा देने में सहायक उपकरणों का प्रचुर उपयोग करना चाहिए।

माध्यमिक शिक्षा के सम्बन्ध में नेताजी का विचार था कि यह शिक्षा किशोरवय की आवश्यकता के अनुरूप होनी चाहिए। वे पाठ्येतर क्रियाकलापों-खेलकूद, बागवानी, स्काउटिंग, सैन्य प्रशिक्षण पर बल देते थे उनका कथन था कि ''छात्रों की शक्तियों का समन्वित विकास होना चाहिए।'' विद्यार्थियों की एक सभा में अपने अध्यक्षीय भाषण के दौरान कहा था कि ''छात्र जीवन में हमें अपने शरीर, चरित्र और बुद्धि को दृढ़ बना लेना चाहिए दूसरे शब्दों में यह कह सकता हूँ कि हमारा विकास त्रिकोणात्मक होना अर्थात् हमारे शरीर, हमारी बुद्धि और हमारे संवेगों का विकास इस प्रकार हो कि हम संतुलित मानव बन जाए।'' माध्यमिक शिक्षा के सम्बन्ध में नेताजी का दूसरा विचार यह था कि छात्रों को सोद्देश्य शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। वे उस स्थिति को अच्छा नहीं समझते थे कि बिना कोई उद्देश्य निर्धारित किए सभी छात्र किताबी ज्ञान प्राप्त करते जाएँ और आगे चलकर देश के सामने बेकारी की समस्या खड़ी कर दे। दक्षिण पूर्व एशिया में माध्यमिक शिक्षा का संचालन करते समय नेताजी ने छात्रों के लिए व्यावसायिक परामर्श की व्यवस्था की थी।

नेताजी अधिक लोगों के लिए उच्च शिक्षा के पक्ष में नहीं थे। वे विश्वविद्यालयी छात्रों से समाज व देश के प्रति उत्तरदायित्त्व पूर्ण व्यवहार तथा विशिष्ट विषयों के वैज्ञानिक अध्ययन की अपेक्षा करते थे। नेताजी पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करने के लिए या परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने के लिए शिक्षा के हिमायती नहीं थे। वे जीवन के लिए और व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास के लिए शिक्षा के पक्षधर थे। वे समाजसेवा व नेतागिरी के लिए भी प्रशिक्षण की महत्ता प्रतिपादित करते थे।

नेताजी का मानना था कि शिक्षा नामधारिणी कोई भी व्यवस्था उस समय तक संभव नहीं हो सकती जब तक कि अध्यापक के पास उपयुक्त व्यक्तित्व नहीं है। नेताजी के अनुसार अध्यापक को हर वस्तु अपने विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से देखनी पड़ेगी।

नेताजी ने अपने देश में कैसी शिक्षा हो इसका विचार भी किया। 'आजाद हिन्द सरकार' का गठन किया तो दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में बसे भारतीयों के बच्चों की शिक्षा की उचित व्यवस्था की। इस हेतु आवश्यक प्रशिक्षण देने हेतु अध्यापकों के प्रशिक्षण विद्यालय भी खोले। नेताजी इस भारत केन्द्रित शिक्षा को स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश में क्रियान्वित करना चाहते थे।

उपर्युक्त विचारों के विहंगावलोकन के बाद हम इस निष्कर्ष पर है कि आज शिक्षा का कोई ऐसा स्तर या स्वरूप नहीं है जिसका चिंतन नेताजी ने नहीं किया। यदि हम नेताजी की भारत केन्द्रित शिक्षा के विचार कणों को प्रस्तावित नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्थान देकर क्रियान्वित करते है तो भारत का भाग्योदय होगा और भारत पुनः विश्वगुरु के रूप में सबका मार्गदर्शन करेगा।

प्रधानाचार्य,
रा.आ.उ.मा.वि., मगरतलाव (पाली)
मो. 9829285914

यदि किसी व्यक्ति में सत्य, पवित्रता तथा निःस्वार्थता एक साथ विद्यमान हो, तो संसार की कोई भी शक्ति उसका बाल भी बांका नहीं कर सकती।

–स्वामी विवेकानन्द

समदर्शी

रात्रि को लगभग 9 बजे कृषकाय, मैले-कुचैले कपड़े पहने, एक दीन-हीन व्यक्ति स्वामीजी के सम्मुख हाथ जोड़ कर खड़ा था। स्वामी जी ने उससे पूछा-''भाई, क्या बात है? यहाँ कैसे आना हुआ?'' उसने कहा ''मुझे आपको देखते तीन दिन बीत गए हैं। आपने इन दिनों में न तो भोजन ही किया है और न ही एक घूंट पानी ही पिया है। यदि आज्ञा हो तो मैं प्रबन्ध करूं।''

इस वार्तालाप से स्वामी जी सोचने लगे कि भगवान का भेजा हुआ दूत मेरी भोजन-व्यवस्था के लिए यहाँ पहुँचा है। स्वामी जी ने हाँ भर दी। आगुन्तक फिर भी वहीं खड़ा रहा और नम्रता से कहने लगा-''स्वामीजी! क्षमा करें, मैं अछूत हूँ। यदि आप अनुमति दें तो आटा, दाल व बर्तन आदि लेकर मैं यहाँ आता हूँ। आप अपने हाथ से बना लें।'' स्वामीजी के नेत्र उस स्नेहिल बातचीत से अश्रुपूरित हो गए।

उन्होंने कहा-''नरश्रेष्ठ! तुम चमार हो तो क्या हुआ? संन्यासी के लिए यह छूआछूत कैसी। भक्ति भाव से बना भोजन तो अमृत-तुल्य होता है। मैं तुम्हारे हाथ का ही भोजन करूँगा।'' भक्त ग्राम की ओर दौड़ा। घर में साफ-सुथरे, मंजे बर्तनों में भोजन बना कर ले आया और स्वामी जी के सम्मुख आ खड़ा हुआ। दोनों की आँखों में कृतज्ञता के भाव थे। स्वामी जी ने भोजन किया। ऐसा स्वादिष्ट भोजन उन्होंने अब तक कभी नहीं किया था।

जब स्वामी जी विश्व विजयी संन्यासी स्वामी विवेकानन्द हो गए। खेतड़ी आने पर उनका भव्य स्वागत हुआ। स्वयं महाराज उनकी सेवा में उपस्थित थे। अपार जन-समूह था। जैसे ही वे आगे बढ़े, भीड़ में से ध्वनि सुनाई दी-''अरे स्वामी जी!'' स्वामी जी की दृष्टि उधर गई। पुकारने वाला वही 'अछूत' भक्त था जिसने कष्ट की घड़ी में स्वामी जी को भोजन कराया था। स्वामी जी ने सरकारी वाहन रुकवा दिया। उतरकर उससे गले मिले। उस मिलन को देखकर महाराज भौचक्के रह गए। वहाँ खड़े सहस्रों लोग भक्त और भगवान के नयनों से बह रही स्नेहाश्रु-धारा को निहार रहे थे।

संकलन-**सुमित्रा राठौड़**, अध्या.
तनसिंह सर्किल बाड़मेर, **मो. 8559805631**

आलेख

वेदों में पर्यावरणीय चेतना

❒ डॉ. गिरीश दत्त शर्मा

व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य संरचण एवं उसकी समृद्धि के विकास के लिए प्रकृति की क्षेत्रीय परिस्थितियों में संतुलन होना अपेक्षित है। इस संतुलन के लिए पर्यावरण को प्रदूषण से बचाना परमावश्यक है। परन्तु यह दुर्भाग्य है कि जैसे-जैसे विज्ञान और तकनीकी का विकास होता जा रहा है मनुष्य प्रकृति प्रदत्त साधनों का न केवल अविवेक पूर्ण दोहन एवं शोषण कर रहा है अपितु अपने औद्योगिक एवं भौतिक क्रियाकलापों से उसे अत्यधिक मात्रा में प्रदूषित भी कर रहा है। नगरों एवं महानगरों में असंख्य वाहनों से निसृत कार्बन मोनो आक्साइड जैसी घातक गैसों ने पर्यावरण को जहरीला बना दिया है। सघन हरे भरे वनों का निरन्तर सफाया कर कंकरीट के जंगल बना दिए गए हैं। हिमालय जैसे पर्वतों का शरीर उधेड़ा जा रहा है, नदियाँ बाँधों में जकड़ी सूख रही है या फिर नगरों एवं कल कारखानों के व्यर्थ पदार्थ डालकर उनके अमृत तुल्य जल को विषैला बना दिया गया है। अन्न प्रदान करने वाले खेत 'अधिक अन्न उपजाओ' आन्दोलन के तहत रासायनिक प्रयोगशाला बन कर रह गए हैं।

मिट्टी ऐसे ही रसायनों से प्रदूषित हो स्वयं की गन्ध खो चुकी है। नगरीय उद्योगों की सैकड़ों कम्पनियों ने अपने जहरीले काले धुएं से आसमान में कालिख पोत दी है। परिणाम स्वरूप आज प्रकृति चक्र में असंतुलन की अवस्था उत्पन्न हो गई है। प्रकृति के इस अस्वाभाविक स्वरूप से अकाल, महामारी, बाढ़ का प्रकोप, असामयिक वर्षा, सूखा जैसे विनाशकारी संकटों का सामना करना पड़ रहा है। असन्तुलन की यह स्थिति इतनी भयानक है कि यदि इस पर समुचित ध्यान नहीं दिया गया तो एक दिन भौतिक संसाधन तो नष्ट होंगे ही, सम्पूर्ण जीव एवं सृष्टि का विनाश भी सम्भव है।

विश्व में इस प्रकार के पारिस्थितिकीय असंतुलन के नियन्त्रण एवं निवारण के लिए चेतना का जो उदय हुआ है उसमें जहाँ तकनीकी एवं भौतिक उपायों को अपनाये जाने का

उत्तरोत्तर प्रयत्न किया जा रहा है वहाँ आध्यात्मिक एवं वैदिक पक्ष को पर्याप्त महत्त्व दिया जाए तो बहुत कुछ स्थायी समाधान मिल सकता है। क्योंकि जब किसी तथ्य को नियमबद्ध करके धार्मिक एवं सामाजिक मान्यताओं से संबद्ध कर दिया जाता है तब व्यक्ति स्वयं ही अनुशासित हो अनुकूल आचरण करने लगता है। हमारे वैदिक साहित्य में इसी प्रकार की मान्यताएँ निहित है जो मनुष्य को अनुकूल आचरण की ओर प्रवृत्त करते हुए प्रकृति के निकट सम्पर्क में लाती है, वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान करती है तथा मानव एवं प्राकृतिक परिवेश में एक संतुलित साम्य उत्पन्न करती है। अतः वेद मंत्रों का इस प्रकार का वैज्ञानिक दृष्टिकोण आज के सन्दर्भ में अत्यन्त समीचीन प्रतीत होता है।

'वेदों अखिल धर्म मूलं' के अनुसार वेदों की आधार शिला पर भारतीय धर्म और सभ्यता का विकास हुआ है। अतः हमारा सम्पूर्ण भूत, वर्तमान और भविष्य वेदों के साथ जुड़ा हुआ है। वेदों के विषय भी विज्ञान कर्म और उपासना हैं, जो वेदों में अपरा एवं परा इन दो प्रकार की विद्याओं में समाहित हैं। अपरा के अन्तर्गत प्रकृति के तृण से लेकर समस्त वस्तुओं का ज्ञान सम्मिलित है। जब कि परा विद्या के अन्तर्गत ईश्वरीय ज्ञान और उसकी प्राप्ति है। आज हमने वेदों को मात्र परा ज्ञान तक सीमित करके उसे आध्यात्मिक एवं धार्मिक पक्षों तक ही संकुचित कर दिया है, अपरा विद्या को हम भुला बैठे हैं। जिसमें प्रकृति चक्र का समस्त ज्ञान-विज्ञान निहित है, सूक्ष्म वैज्ञानिक तथ्य उपस्थित हैं। महर्षि अरविन्द योगी ने आज के परिप्रेक्ष्य में यह ठीक ही कहा है - 'वेद विज्ञान में ऐसी सच्चाइयाँ विद्यमान हैं जिन्हें आज का वैज्ञानिक किसी तत्व एवं तथ्य का परीक्षण प्रयोग शालाओं में विभिन्न प्रकार के भौतिक एवं स्थूल यंत्रों, उपकरणों से करता है जबकि वेदों में निहित ज्ञान विज्ञान ऋषियों के सूक्ष्म चिन्तन, मनन एवं विवेचना का परिणाम है जो स्थूल उपकरणों की पहुँच से बाहर है। फ्रांसीसी विद्वान सिल्वा ने तो प्रभावित होकर यहाँ तक कह दिया है कि Rigveda is the most subline conception of the great highways of humanity. (आर्यजगत-2.10.88)

वेदों में सूर्य को जगत की आत्मा बताया है। (सूर्य आत्मा जगतस्थुषश्च-यजु 0.36/24) क्योंकि सूर्य से ही विविध पिण्डों में ऊर्जा का संभरण, संरक्षण एवं सन्तुलन होता है। इसी से ऋतुचक्र बनते हैं तथा यही ऊर्जा का मुख्य स्रोत है जो दृष्ट रूप में अग्नि, चन्द्र, वायु आदि में तथा अदृष्ट रूप में शुक्र, ब्रह्म, आप तथा प्रजापति में निहित है। विश्व व्याप्त ऊर्जा की इस स्थिति के असंतुलित होने से प्राकृतिक उपद्रव, ऋतु वैपरीत्य, असामयिक वृष्टि, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, तूफान, भूकम्प, रोग, महामारी आदि की वृद्धि होती है। इस प्रकार की बाधाओं से बचने के लिए तीन प्रकार की प्रतिक्रियाएँ अपनायी गयी हैं (i) विविध यज्ञ करना (ii) समस्त प्राकृतिक तत्वों में देवत्व की संकल्पना करते हुए उनके शुद्ध एवं सौम्य रूप को बनाए रखना तथा (iii) प्राकृतिक एवं भौतिक तत्वों के मध्य संतुलन रखने के लिए उनके परिवर्द्धन एवं विकास का लक्ष्य रखना।

वेदों में यज्ञ को सर्वोपरि माना हैं। इसके द्वारा 'प्रदूषण निवारण होता है, ऋतु चक्र की अनुकूलता एवं जड़ चेतन की शुद्धता होती है।' (आचार्य वेद भूषण, अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, हैदराबाद) इसके अनेक वैज्ञानिक कारण है (i) यज्ञ में प्रज्वलित अग्नि तथा उसकी ऊष्मा के

सम्पर्क से अनेक जीवाणु भस्म हो जाते है। (ii) हवन करते समय घृत एवं विविध प्रकार की सामग्री की जो आहुति दी जाती है वह भस्म होकर सूक्ष्म अणुओं तथा परमाणुओं में बदलकर पर्यावरण में व्याप्त हो जाती है। इससे वायुमण्डल में विद्यमान प्रदूषक तत्व निष्प्रभावी बनते हैं। 'यही भस्माणु श्वास द्वारा मनुष्य के शरीर में प्रवेश करके रक्त में मिलकर शरीर पर इस प्रकार तुरन्त प्रभाव डालते हैं जैसे इंजेक्शन या भपारे द्वारा दी गई औषधियाँ।' (आर्य जगत-22/1/89) (iii) यज्ञ के घी मिश्रित धुएँ में हवा को रोकने तथा दूसरे तरल पदार्थों को अपने साथ जमा देने का गुण हैं। इसलिए यज्ञ के द्वारा कृत्रिम वृष्टि करने का विधान है धूम्रात अभ्रं अभ्रात वृष्टि-यजु. अध्याय 2 मंत्र 8 यज्ञ में छोड़ी गयी सामग्री विशेष का भी वैज्ञानिक महत्त्व है। प्रत्येक पदार्थ के अलग अलग गुण धर्म होते हैं। यज्ञ में उनकी आहुति देने से गुणों के अनुरूप फल मिलते हैं। उदारहण के लिए करीर की लकड़ी में जलवाष्प को सोखने की शक्ति है। इनकी आहुति देने से उत्पन्न धुआँ वायु मण्डल में व्याप्त होकर नमी को अवशोषित कर वर्षा करने में सहायक होता है।

यज्ञ में घृत और सामग्री के साथ मिष्टान्न की आहुति भी दी जाती है। केवल घी की आहुति से उत्पन्न धुआँ हल्का होने के कारण ओजोन मण्डल से भी ऊपर चला जाता है। सामग्री के द्वारा इस धुएँ में भारीपन आ जाता है। यही भारीपन मिष्टान्न की आहुति द्वारा और बढ़ जाता है। इस प्रकार मिष्टान्न मिश्रित सामग्री के जलने से उठा हुआ धुआँ आचार्य वेद भूषण के अनुसार 'अधिकांश रूप में वरूण लोक (ओजोन मण्डल की निचली पर्त) तक जमकर वहाँ एक ऐसा आवरण बना लेता है जो सूर्य से आने वाली पराबैंगनी किरणों के लिए कवच का काम करता है।' (आर्य जगत 17.4.88 एवं 22.1.89) इससे जड़ चेतन सूर्य की असह्य ऊष्मा से सुरक्षित रहते हैं और पर्यावरण में सन्तुलन बना रहता है।

यज्ञ का धुआँ कृषि के लिए हानि रहित उत्तम पोषक तथा कीटनाशक का कार्य करता है। कृषि में प्रयुक्त होने वाले अनेक कीटनाशक, रसायन एवं औषधियाँ उन्हें रोग मुक्त तो कर देती है परन्तु भूमि और जल के माध्यम से पौधों, फलों और अन्नों में प्रविष्ट होकर उन्हें विषैला बना देती है। ये विषैले तत्व अन्न, फल, वायु आदि के माध्यम से मानव शरीर में प्रविष्ट होकर उसके जीवन के लिए घातक बन जाते हैं। यज्ञ का धुआँ कृषि के लिए हानिकारक कीटाणुओं को नष्ट करता है साथ ही वायुमण्डल में व्याप्त होकर पेड़-पौधों के लिए पौष्टिक आहार का भी कार्य करता है। इस धुएँ से समृद्धि को प्राप्त वनस्पति मानव के आयुर्बल में सहायक होती है।

यज्ञ का दूसरा पक्ष मंत्रोच्चारण है। वैज्ञानिक रूप से यह सिद्ध हो चुका है कि ध्वनि न केवल मनुष्य के शरीर एवं मस्तिष्क पर ही प्रभाव डालती है अपितु वनस्पति एवं जड़ चेतन भी उससे प्रभावित होते हैं क्योंकि ध्वनि से वायु मण्डल में कम्पन उत्पन्न होता है। इस कम्पन में अनन्त ऊर्जा है। यज्ञ में मन्त्रों का उच्चारण वैज्ञानिक तथ्य के आधार पर निर्धारित किया है। अतः इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि इन्हें निर्धारित ध्वनि, मात्रा, समय आदि में उच्चारित किया जाए तो निश्चय ही ध्वनि तरंगों के माध्यम से वांछित फल मिल सकेगा।

यज्ञ की महत्ता एवं प्रयोजनशीलता को देखते हुए इसे दैनिक होत्र, अश्वमेध एवं राजसूय यज्ञ आदि अनेक रूपों का विधान किया गया है। दैनिक यज्ञ सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय किया जाता है। इससे मानव द्वारा रात्रि एवं दिन में निसृत प्रदूषक तत्व नष्ट होकर वातावरण स्वच्छ एवं शुद्ध बना रहता है। अश्वमेध यज्ञ राजाओं द्वारा छोड़े गए घोड़ों से संबंधित विशाल स्तर पर किया जाता है। इसमें युद्ध होने पर मारकाट के कारण वातावरण विशाल स्तर पर प्रदुषित हो जाता है। अतः प्रदूषण दूर करने के लिए बड़े पैमाने पर यज्ञ किया जाता हैं। शान्ति काल में राजा लोग राजसूय यज्ञ करते थे। इसमें राष्ट्रीय एकता के साथ प्रजा को प्राकृतिक बाधाओं से बचाने का भाव निहित रहता था। जिससे मनुष्य पर्यावरण के संतुलन द्वारा स्वास्थ्य एवं समृद्धि जनित सुखों को प्राप्त कर सकें। वेद विहित आचरण का अक्षरशः पालन करने वाले राम के राज्य में जल की आवश्यकता होने पर बादल जल बरसा देते थे। (माँगे वारिद देह जल रामचन्द्र के राज-रामचरित मानस)

पारिस्थितिकीय संतुलन के लिए वेदों में यज्ञ के बाद दूसरा विधान-प्राकृतिक तत्वों में देवत्व की कल्पना हैं। इससे प्राकृतिक तत्वों में उनकी सुरक्षा के लिए सेवा, सम्मान मानव धर्म में सम्मिलित किया गया हैं। उसे क्षति पहुँचाने वाली किसी वस्तु को दूर कर प्राणपण से रक्षा करने का विधान हैं। वैदिक ऋषियों ने पृथ्वी, जल, वायु वनस्पति अग्नि को देवता मानकर प्रत्येक धार्मिक एवं सामाजिक कार्य में उनकी पूजा का विधान बनाकर प्रदूषण से मुक्त रखने का प्रयत्न किया है। प्राकृतिक तत्वों की स्तुति के माध्यम से उसका गुण कथन मानव को प्रेरणा देता है कि वह उसके अस्तित्व को पहचाने और उसे किसी प्रकार की क्षति होने से रोके, उनकी शुद्धता की रक्षा करते हुए उसके परिवर्द्धन एवं विकास में योगदान दे।

प्राचीन काल में ऋषि वृक्षों के फल तोड़कर नहीं अपितु माँग कर लेते थे। यदि किसी कारणवश एक भी पत्ती तोड़ते तो पहले इस अपराध के लिए क्षमा याचना करते थे। तुलसी का पत्ता भी लेते समय क्षमा याचना स्वरूप यह दोहा कहा जाता था।

'मत कम्पहु, मत सिरजहु, मत सकुचावहु देह।
हम जो भेजे कृष्ण के, अवसि मिलेगी गेह।।

आज भी अनेक व्रत, उत्सव तथा त्यौहारों पर वट (बरगद), पीपल, केला आदि वृक्षों का पूजन विधान है जो इनके संरक्षण तथा संवर्द्धन की प्रेरणा देता है। वैदिक धर्म से प्रभावित विश्नोई धर्म में वृक्ष को काटना मानव हत्या के समान दण्डनीय अपराध है।

यज्ञ के अन्त में शान्ति पाठ करने का विधान है जिसमें पृथ्वी से लेकर अन्तरिक्ष में विद्यमान समस्त तत्वों की शान्ति के लिए प्रार्थना की जाती है। (देखिए ऋग्वेद 7/35/10, अथर्ववेद 19/9/1 तथा 19/9/2, यजुर्वेद 36/10 तथा 36/17) इसका प्रयोजन उनके रूप को विकृत होने से बचाना है। क्योंकि उनके कुपित (विकृत एवं असंतुलित) होने से सृष्टि में अव्यवस्था आ जाती है जो अनेक व्याधियों एवं विपदाओं की जड़ है।

वैदिक ऋषियों द्वारा निर्दिष्ट विधानों का आज के पर्यावरण प्रदूषण युक्त परिप्रेक्ष्य में और भी अधिक महत्त्व बढ़ जाता है। मानव की 'जीवेम शरदः शतम्' एवं 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' जैसी भावनाओं की पूर्णता के लिए वेदों की वाणी का पुनर्मूल्याँकन परम आवश्यक है।

4/82 चोटाला रोड
वार्ड 23-संगरिया (हनुमानगढ़)

चिन्तन

जीवन संध्या...उत्सव या अभिशाप?

❒ डॉ. भगवती प्रसाद गौतम

पिछले दशक से भी पहले के एक खास कालखंड (2003) में देश के 60 वर्ष से ऊपर के नागरिकों की संख्या 8 करोड़ 10 लाख के करीब आँकी गई थी। उसी दौर में आई संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट के मुताबिक अनुमान जताया गया था कि 2025 तक भारत में बुजुर्गों की संख्या 17.5 करोड़ को पार कर जाएगी। ...और अब 'हेल्पेज इंडिया' द्वारा करवाए गए अध्ययन से ज्ञात होता है कि इस समय देश में 10 करोड़ के करीब बुजुर्ग हैं, जिनमें से 66 फीसदी उपेक्षित-तिरस्कृत जिंदगी जी रहे हैं और 50 फीसदी भूखे पेट रात गुजारने को मजबूर हैं। यदि प्राप्त परिणामों पर भरोसा किया जा सके तो सच यह भी है कि देश के लगभग 90 फीसदी बुजुर्ग किसी न किसी रूप में आर्थिक समस्याओं से जूझ रहे हैं जबकि एजवेल फाउंडेशन के 15 हजार बुजुर्गों पर किए गए अध्ययन की रिपोर्ट- 'ह्यूमन राइट्स ऑफ एल्डरली इन इंडियाः ए क्रिटिकल रिफ्लेक्शन ऑन सोशल डेवलपमेंट' में निष्कर्षतः कहा गया है कि जीवन संध्या के दौर में बुजुर्गों की इस स्थिति के लिए पारिवारिक और सामाजिक स्तरों पर नित-नए होने वाले परिवर्तन ही जिम्मेदार हैं।

ढलती उम्र और अकेलेपन का दंश – अभी-अभी दिल्ली और एनसीटी (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) में करवाए गए एक विशेष अध्ययन के अनुसार भी यहाँ की दो करोड़ की जनसंख्या में अकेले दिल्ली महानगर में ही वृद्धों की संख्या 12 लाख हो गई है। बीते दिनों प्रकाशित 'एजवेल फाउंडेशन' की यह रिपोर्ट आश्चर्य चकित कर देने वाली तो है ही, साथ ही समाज की तथाकथित 'संवेदनशीलता' को भी आईना दिखा देने वाली ही है। एक प्रतिष्ठित दैनिक की स्तंभकार सय्यद मुबीन जेहरा तो यहाँ तक कह जाती हैं कि ''जब राजनेताओं से लेकर आम आदमी तक को अपना अस्तित्व बचाए रखना मुश्किल हो रहा हो, पत्थर दिल दिल्ली में बूढ़े बरगदों की किसे चिंता है। आज पत्थरों के इस शहर में बुजुर्ग अलगाव के शिकार हो रहे हैं।

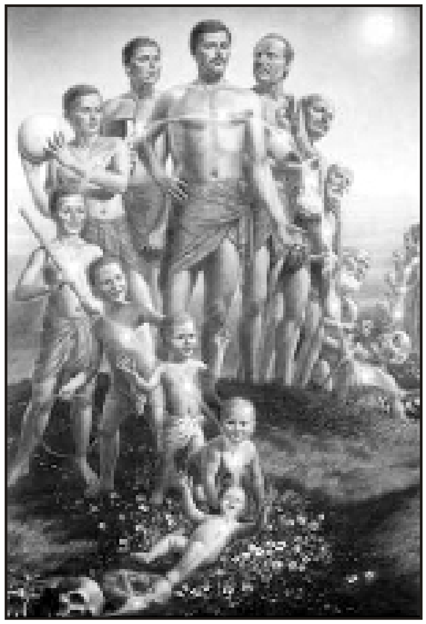

80 फीसदी बुजुर्ग अपने जीवन की ढलती शाम में तनहा (अकेले) हैं।''

वस्तुतः देश में संयुक्त परिवारों के चलते प्रायः सब-कुछ ठीक-ठाक था, मगर समय के साथ आए बदलावों ने बड़े-बड़े कुनबे तितर-बितर कर दिए। घर बरबस ही सिमटते-सिकुड़ते चले गए। फलतः वृद्धजनों की अहमियत कम होती गई। सूनी दीवारों से घिरे रहकर खुद से बतियाने और अपनी किस्मत को कोसने के सिवा उनके पास कोई चारा नहीं रहा। विचारणीय तथ्य यह है कि जहाँ दिल्ली और एनसीटी के ग्रामीण इलाकों के 36 फीसदी बुजुर्ग सामाजिक एवं भावनात्मक अकेलेपन से ग्रस्त हैं, वहीं दिल्ली और एनसीआर (रा.रा.प्रदेश) के शहरी इलाकों के 44 फीसदी वृद्ध एकाकीपन की पीड़ा झेल रहे हैं। दिल्ली में ही नहीं, इस समय अधिकांश महानगरों में रह रहे वृद्धों की स्थिति काफी कष्टकर है। कुछेक अपवादों को छोड़ दें तो आए दिन ऐसे दिल दहला देने वाले मामले सामने आते रहे हैं जिनकी वजह से हमारी सामाजिक व्यवस्था पर प्रश्न उठ जाते हैं।

ये कैसी व्यथा-कथाएँः– यह जानकर सुधी जनों के सिर शर्म से झुक जाना स्वाभाविक है कि विगत समय में बड़ोदरा के एक दंपत्ति (बेटे-बहू) ने 77 वर्षीय पिता को निजी कारणों से दो वर्ष तक जंजीर से जकड़ कर रखा। आखिर बेटी ने पुलिस की मदद ली, तब जाकर वे मुक्त हो सके। इसी तरह जयपुर के एक शख्स ने अपने ही माँ-बाप को घर से बाहर धकेल कर दरवाजे पर ताला जड़ दिया, क्योंकि वह सम्पूर्ण संपत्ति को केवल अपने नाम करवाना चाहता था, अन्य भाइयों के नाम नहीं। ऐसा ही एक चौंकाने वाला मामला इधर अपने गृह-नगर में सामने आया, जिसमें पति-पत्नी बूढ़ी माँ को ढेर सारे भोजन के साथ घर में अकेली छोड़ और बाहर ताला ठोक कर 'तीर्थ' पर निकल गए। आसपास के पड़ोसियों को अचानक भनक लगी तो बेटी-दामाद ने आकर उस निःसहाय वृद्धा को संभाला और कानूनी लड़ाई की शुरुआत की। मध्यप्रदेश का एक ऐसा प्रकरण भी सुर्खियों में रहा है, जिसमें एक बड़े अधिकारी और उनकी पत्नी ने 80 पार की माँ को घर से ही बहिष्कृत कर दिया और उनके पद व प्रभाव की वजह से पुलिस भी कार्यवाही करने से कतराती रही। आखिर मामला मानवाधिकार आयोग तक जा पहुँचा। ये तो वृद्धों की व्यथा-कथाओं की कुछ ही बानगियाँ हैं जो यहाँ-वहाँ जब-तब उजागर हो गई। वरना मामले तो अनगिनत हो सकते हैं, जो पारिवारिक/सामाजिक प्रतिष्ठा, लोक-लाज और अन्यान्य कारणों से दब गए हैं अथवा दबे रह जाते हैं।

तस्वीर का दूसरा पहलूः– ये पीड़ाएँ तो उन माता-पिताओं की जिन्हें समाज में स्नेह, समता, ममता, त्याग और समर्पण की मूरत माना जाता है, मगर इसी तस्वीर का दूसरा पहलू भी है। सजग पाठकों का ध्यान परिवार की महत्ता को रेखांकित करने वाली खबर पर अवश्य गया होगा। विगत जून में लंबे समय तक विदेश में रहे पंजाब के 111 वर्षीय नजर सिंह का निधन अपनी ही पैतृक भूमि पर हुआ तो उनका विशाल कुनबा उनके इर्द-गिर्द मौजूद था। इस उत्सव-

मृत्यु पर उनके 31वर्षीय पौत्र हरविंदर गिल ने बड़े गर्व से कहा- ''वाकई लाजवाब थे दादा जी। वे जिंदादिली से जीए और हमारे प्रेरणास्रोत बने रहे।''

दरअसल बड़प्पन, बुढ़ापा, वरिष्ठता, वृद्धावस्था, वार्द्धक्य.. यानी मनुष्य की ढलती उम्र को हम चाहे कुछ भी नाम दें, किन्तु यह जीवन के साथ जुड़ी एक अपरिहार्यता है, यह एक हकीकत है। सच तो यह है कि यह प्रकृति-प्रदत्त परिवर्तनों का नैसर्गिक एहसास है। कोई इससे बच नहीं सकता। इसलिए इसे सहज भाव से स्वीकार करने और स्थितियों से समझौता कर लेने में ही समझदारी है।

ईरान के सूफी संत शेख सादी (शेख मुसलिद्दुदीन सादी) ने अपनी किताब 'गुलिस्तां' में जीवन-प्रबंधन की दृष्टि से कई नसीहतें प्रस्तुत की हैं। उन्हीं में वृद्धावस्था को लेकर एक खास नसीहत शामिल है, जिसमें लिखा है-''नौजवानों जैसी मस्ती किसी बूढ़े में तलाश मत कर। बहा हुआ पानी लौटकर नदी में नहीं आता''... और उन्होंने ही परिवार एवं परिस्थितियों से तालमेल बिठाने को जरूरी मानते हुए मनुष्य को आगाह किया-''लोगों की ऐब जाहिर मत कर, क्योंकि तू उन्हें जलील करेगा तो अपने ऐतबार खो बैठेगा''.. और यह ऐतबार, यह आपसी विश्वास ही वह ताकत है जो जीवन संध्या को सार्थक बना जाती है।

देश में या अपने ही आसपास कई लोग ऐसे भी हो सकते हैं जिनके पास भले ही अपार धन-दौलत न हो, किन्तु वे अपने हाल में ही पर्याप्त सुख-सुकून अनुभव कर लेते हैं। पिछले दिनों महावीर नगर निवासी कवि-मित्र शिवराज जी ने 98 वर्षीय पड़ोसी रघुनाथ प्रसाद जी यादव से मिलवाते हुए मेरा नाम बताया तो वे तुरंत बोले-''भगवती? यह नाम तो मेरे होठों पर ही बसा रहता है।'' दरअसल वे बैठे-ठाले इसी देवी-नाम को सुमिरते रहते हैं। इसी के चलते उन्होंने बातों-बातों में कहा-''सब आनंद हैं। कोई कमी नहीं। बस, झूला ही नहीं है।... देखो जी, मेरे बच्चे-बहुएँ पोते-पोती खुश, तो मैं भी खुश'' और मुस्करा उठे। सच, डाक विभाग से सेवानिवृत्त उस बुजुर्ग ने पहली मुलाकात में ही सुखी बुढ़ापे का कितना बड़ा सूत्र दे दिया।

अनुभवों का विस्तार है जीवनः- 84 वर्ष के 'युवा भारतीय' माने जाने वाले पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (निधन 27 जुलाई 2015) से एक बार उनकी पुस्तकों के सह-लेखक सुरेन्द्रपाल सिंह ने पूछ लिया-''आप किस रूप में याद किया जाना पसंद करोगे? राष्ट्रपति, वैज्ञानिक, मिसाइलमैन या..'' तो उन्होंने तत्क्षण कहा-''टीचर ऑनली.. बस एक शिक्षक।'' वे सदैव टेक्नोलॉजी से जुड़े रहे। उनका आखिरी ट्वीट था-''शिलाँग जा रहा हूँ। 'लिवेबल प्लेनेट अर्थ' पर आईआईएम. के कार्यक्रम में...'' और जीवन के अंतिम क्षणों में वे मेघालय की राजधानी में व्याख्यान दे रहे थे, शिक्षा की ही बात कर रहे थे। हमेशा सक्रिय रहने वाले, अपना सूटकेस भी खुद उठाने वाले उस महामानव ने देशवासियों से कहा था-''अपनी पहली जीत के बाद कभी आराम मत करिए, क्योंकि दूसरे मौके पर यदि आप असफल हुए तो लोग यह कहने के लिए तैयार हैं कि पहली जीत महज भाग्य की बात थी।''

वस्तुतः किसी अच्छे काम से जुड़ने या जुड़े रहने की कोई उम्र नहीं होती। वैसे भी जीवन क्या है? अनुभवों का विस्तार ही तो है। नोबल विजेता रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 67 की उम्र में चित्र-सृजन आरंभ किया और कहा-''मेरी सुबह गीतों भरी रही, मेरी शाम रंगों-भरी होगी।'' और वही हुआ। वे समय के साथ विश्व प्रसिद्ध चितेरों की श्रेणी में जा प्रतिष्ठित हुए।

अभी-अभी बूँदी (राजस्थान) में एक साहित्यिक आयोजन में 94 वर्षीय रचनाकार अग्निहोत्री पूर्णवल्लभ के दर्शन हो सके। भले ही वे कंपवात (PARKINSON'S) के शिकार हो गए हैं और जबान भी लड़खड़ाने लगी है, किन्तु आँख-कान से चुके नहीं हैं। लगभग 480 पृष्ठों का एक ग्रंथ 'अध्यात्म रश्मियाँ' मुझे भेंट करते हुए उन्होंने एक दोहा पढ़ा-

''लेखक-कवि मैं हूँ नहीं, कलम चलावत और। पूर्ण न विद्या-ज्ञान बल, ईश-हाथ मम डोर।'' .. और फिर बोले-''बस, कलम के बूते ही यहाँ तक आ पहुँचा हूँ।'' आश्चर्य, इस उम्र में भी लेखन-पठन से इतना लगाव, सृजनात्मकता के प्रति इतना समर्पण, धन्य हैं ऐसे ऊर्जावान वृद्धजन।

जीवन की लंबी पारी का राजः- जीवंतता के साथ जीवन की लंबी पारी खेलने वाले लोगों में देश के ही नहीं, विदेशों के भी कई ऐसे लोग रहे जो जीते-जी अपने अनुभव, अपनी कामयाबी के राज आने वाली पीढ़ियों को सौंप गए। सदी पार से आगे तक जीने वाली ऐसी विभूतियों में साकारी मोमोई (जापान), सुजैन मसहट (अमेरिका), जैसी गैलन (स्कॉटलैंड), मिसाओ ओकावा (जापान), एमा मौरैनो (इटली) आदि के नाम (दै.भा. 12.7.2015) बड़े श्रद्धास्पद सम्मान के साथ लिए जा सकते हैं।

'फादर ऑफ मेडिसिन' के नाम से विख्यात कानूनी दार्शनिक हिपोक्रेटस (460-370 ई.पू.) ने सदियों पूर्व दुनिया को जता दिया था कि ''यदि हम किसी व्यक्ति को उचित मात्रा में पौष्टिक आहार और व्यायाम करने का वक्त देंगे तो वही उसके लिए अच्छी सेहत के रास्ते पर चलने का सबसे अनोखा तरीका होगा।'' इसी बात को 'लाइट हाउस ओर्गेनाइजेशन' से जुड़ी एक विशेषज्ञ अपर्णा बालासुंदरम् '3 ई' (3 E=Exercise, Eating, Energy) के सूत्र रूप में प्रस्तुत करती हैं जो बेहद आसान भी है और कारगर भी।

कहाँ है अकेलेपन का मूलः- कैसी विडम्बना है कि एक ओर तो लंबी पारी के वे खिलाड़ी हैं जिन्होंने जीवन को अपने नजरिए से देखा और जिंदादिली से जीया जबकि दूसरी ओर वे वृद्धजन हैं जो उम्र के उतार पर पहुँच कर भरे-पूरे घर-समाज में ही निःसहाय हो गए हैं। तो फिर कहाँ है इस अकेलेपन का मूल? क्या हैं इस त्रासदी के पीछे छिपे कारण? यदि वर्तमान व्यवस्थाओं पर नजर डालें तो इस सच्चाई से मुँह नहीं फेरा जा सकता कि जो लोग सरकारी विभागों से अथवा समृद्ध संस्थानों से सेवानिवृत्त होते हैं, वे नियमित प्राप्त होने वाली पेंशन की वजह से सुरक्षित अनुभव कर सकते हैं, लेकिन केन्द्र या राज्यों की वृद्धावस्था पेंशन योजनाओं का लाभ 25 प्रतिशत बुजुर्ग ही उठा पाते हैं। वह भी अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग स्तर के अनुरूप... कहीं 200, कहीं 300 तो कहीं-कहीं 500 रुपए प्रति माह। जिन्हें यह भी प्राप्त नहीं, वे पूर्णतः परिवारों पर आश्रित हो जाते हैं। ऐसे में आय से अधिक व्यय का प्रश्न खड़ा हो जाता है।

अकेलेपन से जूझते बुजुर्ग, चाहे वे पति-पत्नी ही क्यों न हों, रोज-रोज के हादसों व हत्याओं जैसे मामलों को लेकर आशंकाओं और तनावों में जीने को मजबूर हो जाते हैं। संकट की घड़ी में जब अपने ही जाए, अपने ही जन्मदाता व पालनहारों से मुँह मोड़ भागते हैं तो कितनी लज्जास्पद स्थिति पैदा हो जाती है यहाँ। और तो और, इस सत्य को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि जीवन के इस पड़ाव पर आकर ही संपत्ति से जुड़े संघर्ष भी शुरू हो जाते हैं और आपसी मनमुटाव, मुकदमेबाजी और शारीरिक, मानसिक यातनाओं के चलते बरबस ही उनकी कमर टूटने लगती है, सेहत दिनों-दिन गिरती चली जाती है और अंततः प्राण पखेरू उड़ जाते हैं। ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि 'यूज एंड थ्रो'... 'इस्तेमाल करो और फेंक दो' के सोच के साथ जीने वाली आज की पीढ़ी यह क्यों भूल जाती है कि उसके पीछे-पीछे आ रही पीढ़ी भी तो उनसे ज्यादा चतुर, चालाक और धूर्त साबित हो सकती है, उन्हें इससे भी बदतर संकटों से जूझने को मजबूर कर सकती है।

आखिर क्या है समाधानः- संस्कृत में एक मार्मिक सूत्र है जिसका भावार्थ है-''जिस प्रकार हम धन के जरिए औषधि प्राप्त कर सकते हैं किन्तु आरोग्य (स्वास्थ्य) नहीं, उसी प्रकार हम धन के जरिए अनेक ग्रंथ तो खरीद सकते हैं किन्तु ज्ञान (अनुभव) तो प्रयत्न से ही प्राप्त हो सकता है।'' क्राँतिकारी संत कबीर ने भी कहा था-'अनभौ साँचा'। अर्थात् अनुभव ही सत्य है, अनुभव ही सबकुछ है। जैसे अनुभव के अभाव में जीवन का कोई महत्त्व नहीं, उसी तरह सेहत के बिना भी जीवन का क्या अर्थ? उम्र की ढलान पर बुजुर्गों को खास जरूरत होती है सेहत यानी स्वास्थ्य की, तो समाज को भी जरूरत होती है बुजुर्गों के अनुभवों की, ताकि समाज के साथ-साथ हमारी संस्कृति का ताना-बाना भी स्वस्थ और संतुलित बना रहे। अनायास ही दो पंक्तियाँ याद हो आई हैं-

''अजब-गजब उत्सव नहीं और कटु अभिशाप।
जीवन तो वह दौर है, जैसा समझें आप।''(भप्रगौ)

वृद्धावस्था को दृष्टिगत रखते हुए आने वाले समय की आहट को पहचान लेना जितना जरूरी है, उतना ही जरूरी है जीवन के प्रति नजरिया बदलना और सकारात्मक सोच के साथ समय और स्थितियों से ताल मिलाना। कितना सुखद हो कि मनोनुकूल किन्तु सक्रिय दिनचर्या के साथ-साथ घर के वयोवृद्ध व्यक्ति का कमरा साफ-सुथरा हो, प्रदूषण मुक्त हो। अच्छी सेहत, उत्तम आहार, पर्याप्त जल सेवन, सामान्य भ्रमण, योग व कर्मयोग, समुचित नींद, व्यसनों से दूरी, सृजन व सौंदर्य बोध... और साथ ही उदारता-कृतज्ञता जैसे आत्मिक सरोकार बुजुर्गों के लिए शारीरिक और मानसिक संबल के रूप में सार्थक सिद्ध हो सकते हैं।

यही नहीं, छोटों के बीच छुटपन और बड़ों के बीच बड़प्पन जैसी मनोवृत्तियाँ उन्हें सहज सुलभ सामाजिकता और आनंदकारी रचनात्मकता से जोड़े रख सकती है। ऐसे ही छोटे-छोटे संकल्प और छोटे-छोटे क्रियाकलाप उन्हें ऊब और उपेक्षा से भी मुक्त करा सकते हैं। समग्रतः जीवन संध्या की इस बेला तक पहुँचकर यदि देश के बुजुर्ग इच्छाशक्ति के बूते खुद में ही खुद के प्रति भी प्रेम व जुड़ाव का जज्बा पैदा करें और अपनों का सहज सुलभ सान्निध्य अर्जित कर सकें तो निःसंदेह यह दौर उत्सव साबित हो सकता है।

1-त-8 अंजलि, दादाबाड़ी,
कोटा-324009
मो: 09461182571

रपट

शारदे बालिका आवासीय छात्रावास खैरादा, उदयपुर (राज.) का अभिनव प्रयास

शारदे बालिका आवासीय छात्रावास खैरादा की छात्रा रानी सुखवाल का जन्म राजसमन्द जिले की रेलमगरा तहसील के कावरा गाँव जनवरी 2003 में हुआ। छात्रा शैक्षिक एवं खेलकूद गतिविधि में विशेष रुचि रखती थी। छात्रा के परिवार की हालत अत्यन्त कमजोर होने से छात्रा के माता-पिता जो सामान्य रूप से किसान हैं, उसके खेलकूद सम्बन्धी सुविधा को सुचारू रूप से पूरी करने में असमर्थ थे। पानी की कमी हो जाने से कृषि कार्य बाधित हो जाने के कारण उन्हें इस कार्य को छोड़ कर अहमदाबाद शहर की ओर मजदूरी के लिए जाना पड़ा। आर्थिक तंगी एवं माता के कम शिक्षित होने से वे केवल गृहिणी के रूप में कार्य कर परिवार का पालन-पोषण करती रही। छात्रा को आरम्भ से सुविधाओं का अभाव एवं परिवार का आर्थिक सहयोग नहीं मिलने की चुनौती का सामना करना पड़ा। छात्रा ने अपनी प्रतिभा को तराशा व निरन्तर आगे बढ़ती रही। विद्यालयीय शिक्षा ग्रहण करते समय छात्रा ने छात्रावास में प्रवेश लिया तथा अच्छे गुरु के सानिध्य में रहकर, उनसे प्रेरणा प्राप्त करके छात्रा ने कई कीर्तिमान स्थापित किए।

छात्रा रानी सुखवाल की खेलकूद वॉक प्रतियोगिता में विशेष रुचि एवं निरन्तर हुए स्थानीय गाँव के सम्मानित जनप्रतिनिधि एवं भामाशाह ने आगे बढ़कर छात्रा को आर्थिक सहायता प्रदान की। छात्रावास की सुविधाएँ तथा भामाशाह से प्राप्त आर्थिक सहयोग से छात्रा ने सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ी। स्थानीय विद्यालय प्रधानाचार्या एवं नोडल प्रभारी ने खिलाड़ी छात्रा को निरन्तर एवं हर प्रकार से मदद की एवं प्रोत्साहित किया। छात्रा रानी सुखवाल ने अपनी प्रतिभा की शुरूआत में ही जिला स्तर पर आयोजित विद्यालय खेलकूद प्रतियोगिता उदयपुर में भाग लेकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। झालावाड़ जिले में अन्य खेलकूद प्रतियोगिता (3 कि.मी.) में प्रथम स्थान प्राप्त कर उदयपुर जिले एवं शारदे बालिका आवासीय छात्रावास खैरादा का नाम रोशन किया। रानी सुखवाल की खेलकूद में रुचि एवं अभ्यास ने छात्रा को नया आत्मविश्वास प्रदान किया, तद्पश्चात रांची (झारखण्ड) में आयोजित नेशनल स्कूल गेम्स में 3 कि.मी. वॉक में स्थान प्राप्त कर ब्रॉन्ज मेडल (कास्य पदक) प्राप्त कर पूरे राज्य का नाम रोशन किया। इस प्रकार प्रतिभाशाली खिलाड़ी छात्रा रानी सुखवाल ने शारदे बालिका छात्रावास खैरादा उदयपुर में रहते हुए अपनी प्रतिभा की शुरूआत की एवं अपने विजय अभियान को जारी रखते हुए राजस्थान ऐथलेटिक्स एसोशिएशन द्वारा गंगानगर में आयोजित प्रतियोगिता 3 कि.मी. वॉक में प्रथम स्थान प्राप्त किया। अन्य आवासीय छात्रावास एवं विद्यालय भी इससे प्रेरणा लेकर, सार्थक प्रयास कर यशस्वी बन सकते है।

जस्साराम चौधरी
अति. राज्य परियोजना निदेशक
राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद जयपुर

नवाचार

स्कूल ट्यूरिज्म...ज्ञान पर्यटन

❒ संदीप जोशी

पर्यटन आजकल काफी प्रचलित शब्द हैं। सब सरकारें इसके बारे में उत्सुक रहती हैं। 28 सितम्बर को विश्व पर्यटन दिवस था। पर्यटन को लेकर नये शब्द भी बने हैं, जैसे मेडिकल, ट्यूरिज्म, बिजनेस ट्यूरिज्म... इत्यादि। सामान्यतया शैक्षिक भ्रमण पर जाने वाले दल भी उन स्थानों के स्कूल, कॉलेज या विश्वविद्यालय में नहीं जाते हैं। पर यह हो सकता है, होना चाहिए।

स्कूल ट्यूरिज्म भी मेरे मन में आया एक ऐसा ही शब्द है। आखिर विद्यालय शिक्षा का केन्द्र है। सामूहिक चेतना के विकास का केन्द्र है। यहाँ से सबको प्रेरणा मिलनी चाहिए।

पर्यटन दिवस के अगले दिन यानि 29 सितम्बर को बाड़मेर जिले के एक विद्यालय के छात्रों का एक दल शैक्षणिक भ्रमण पर उदयपुर जा रहा था। निजी विद्यालय था। विद्यालय के बाहर बस रुकी। पूछताछ करने पर बताया कि उन्हें अल्पाहार बनाना है। परिसर के बाहर ही अल्पाहार पकाने की अनुमति चाहिए।

'अतिथि देवो भवः'.... सहर्ष उन्हें विद्यालय के भीतर आकर अल्पाहार पकाने को कहा। 9वीं कक्षा के विद्यार्थी जिस बड़ी दरी के जाजम पर बैठे थे, वह उन्होंने आगन्तुक छात्रों के लिए निकाली। उनके लिए पेयजल की व्यवस्था की। अतिथि सत्कार का प्रायोगिक शिक्षण...। उनके निकट दो कचरा पात्र भी रखे और हाथ धोने का पानी अलग बाल्टी में।

जितने समय में उनका अल्पाहार तैयार हुआ। तब तक भ्रमण पर आए छात्रों ने मेरे विद्यालय का अवलोकन किया, अनेक जानकारियाँ दीं। सबसे ज्यादा मजा उन्हें पर्व त्योहार और लोक नृत्य वाले भाग में आया। मेरे स्टाफ में कुछ साथी केरल और मणिपुर के थे। वहाँ के नृत्यों और त्योहारों के चित्रों को गोदन जैसे छोटे से गाँव के स्कूल में देखना उनके लिए सुखद आश्चर्य ही था।

समाज सुधारकों और शहीदों की चित्रावली छात्रों के लिए विशेष कौतुहल का

केन्द्र रही। इन महापुरुषों के नाम जानबूझ कर नहीं लिखे गए थे अतः इन्हें पहचानने की होड़ चलती रही। 'वर्तमान भारत की उपलब्धियाँ' पर भी उनमें कुछ चर्चा, हलचल हुई। ऐसे ही स्वास्थ्य वाले गलियारे से फूल कभी तोड़ते नहीं हैं पर इन विशेष मेहमानों के लिए नियम तोड़कर फूल तोड़े गए। सबने भारत माता पूजन किया।

बाद में अल्पाहार और विदाई। एक घंटे का साथ। सुखद यादों और अनुभवों के साथ सबने विदाई ली। खास बात यह कि इतने पूरे समय में हमारे विद्यालय की व्यवस्था में कोई व्यवधान नहीं आया। जाते-जाते एक शिक्षिका ने कहा "हम जिस शैक्षणिक उद्देश्य से भ्रमण पर जाते हैं, वह तो यहीं पूरा हो गया।" वे सब अभिभूत थे और हम गद्‌गद्।

यदि अलग-अलग स्कूलों में ऐसे विभिन्न 'थीम' पर कुछ काम हो तो स्कूल ट्यूरिज्म को विकसित किया जा सकता है। स्कूल समय के बाद भी विद्यालयों को पर्यटन का केन्द्र बनाया जा सकता है।

सारे विद्यालयों में यह सम्भव नहीं है किन्तु हर जिले में 5-7-10 ऐसे स्कूल तैयार हो सकते हैं जहाँ विद्यालय समय के बाद भी लोग आकर ज्ञानार्जन कर सकें। अलग अलग 'थीम' पर विद्यालय को विकसित किया जा सकता है। हाँ... यह सम्भव है, हमने किया है और करने के बाद ही यह विचार आया है। काम पहले हो गया, लोग आते गए तो यह 'स्कूल ट्यूरिज्म' की नई संकल्पना दिमाग में आई। इस वर्ष फरवरी से अब तक... विद्यालय समय के बाद... मेरे स्कूल को... देखने आने वालों की संख्या लगभग 80-100 हैं। कई बार लोग लम्बे समय बाद ही बताते हैं कि आपके स्कूल जाकर आए हैं। एक दम्पत्ति तो अपने बच्चे का जन्मदिन यहाँ मनाकर गए हैं। स्कूल टाइम के बाद ही शाम को। वो इसके लिए जालोर से गोदन आए थे और यह पूरी स्कूल बस भी। योगायोग से.... बिना किसी पूर्व योजना के इस स्कूल ट्यूरिज्म के पहले अतिथि स्वयं माननीय शिक्षा मंत्री देवनानी जी थे। वे विद्यालय समय बाद ही स्कूल पहुँच पाए थे परन्तु बंद विद्यालय में भी इतना कुछ था कि लगभग चालीस मिनट रुके। अब भी जालोर का गोदन स्कूल उन्हें याद है और उसकी चर्चा भी करते हैं। उसके बाद से तो यह क्रम लगातार जारी हैं। ग्रामवासियों से अनेक विशिष्टजन यहाँ आ चुके हैं।

ऐसा क्या हैं स्कूल में :- एक स्कूल में ऐसा क्या हो सकता हैं कि लोग उसे देखने जाएँ, यह एक स्वाभाविक प्रश्न है। मैं यहाँ अपने स्कूल के बखान करने के लिए नहीं वरन केवल जानकारी और विषय को समझने के लिए बता रहा हूँ कि स्कूल टाइम बाद भी क्या देखा जा सकता हैं। ये सारे काम किए तब तो छात्रों का ज्ञानार्जन ही एकमात्र उद्देश्य था किन्तु अब स्कूल समय बाद यह पर्यटन अथवा शिक्षा तीर्थ जैसा हो गया है। विद्यालय में एक हवन कुंड की आकृति में तुलसी का पौधा लगा हुआ है। सुंदर आकर्षक हवन कुण्ड में अच्छी हरी भरी तुलसी। कभी कभार रंगोली से सजाते भी हैं। उसके पास ही एक रेम्प जैसे ढलान पर भारत का आकर्षक मानचित्र बना है। आगन्तुक आते हैं इसे देखते हैं इसके साथ फोटो लेते हैं भारत माता पूजन भी कर लेते हैं। फिर समरसता सरस्वती मन्दिर देखते हैं जिसका निर्माण विद्यालय के छात्रों ने घर-घर से एक एक ईंट लाकर किया है कोई भेदभाव नहीं, कोई खर्चा नहीं। समरसता भी और

सहकारिता भी.... दोनों पाठ एक साथ सिखाता यह स्थान। इसके बाद मुख्य आकर्षक दो गलियारे हैं जिनका नाम भारत दर्शन गलियारा और स्वास्थ्य गलियारा हैं। वैसे इनकी खूब चर्चा हो चुकी है और गृहमंत्री माननीय गुलाबचन्द जी कटारिया भी इसका अवलोकन कर सराहना कर चुके हैं। कुल मिलाकर लगभग 250 फीट लम्बा गलियारा। इन्हें सरसरी निगाह से देखें तो भी 10 से 15 मिनिट लगते हैं। तसल्ली से देखा जाए तो आधे पौन घंटे तक अध्ययन करने जितनी सामग्री हैं। इसके बाद विद्यालय की विज्ञान वाटिका। 35 प्रकार के पौधे विद्यालय में हैं। खूब सारे फूल खिले रहते हैं। देखने घूमने वाले को थकान का अहसास नहीं होने देते। कुल मिला कर पौन घंटे से एक घंटे तक बाँधे रखने की क्षमता और सामग्री। छोटे पर्यटन केन्द्र के लिए इतना पर्याप्त हैं। यह तो एक स्कूल की बात हुई। ऐसे अनेक नए नए रचनात्मक प्रयोग किए जा सकते हैं। कहीं इतिहास दर्शन तो कहीं विज्ञान पार्क। कहीं पेड़ों के नीचे गणितीय आकृतियों के चबूतरे तो कहीं थीम पार्क...। अनेक 'आइडियाज' हो सकते हैं।

अनेक प्रयोग हो सकते हैं, जिनसे विद्यालयों को संवारा जा सकता है, जो छात्रों के लिए तो उपयोगी होंगे ही विद्यालय समय पश्चात् भी आगन्तुकों का ज्ञानवर्धन कर सकते हैं उन्हें प्रेरणा दे सकते हैं। ये सब होगा, तब ही तो विद्यालय सामूहिक चेतना के केन्द्र बनेंगे।

व.अ., रा.मा.वि. गोदन, जालौर
मो: 9414544197

शैक्षिक चिन्तन

सेवापूर्व शिक्षण प्रशिक्षण का महत्व

❒ डॉ. महेशचन्द्र शर्मा

शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन की एक मूलभूत आवश्यकता और साधन के रूप में स्वीकार किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वप्न को पूरा करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहता है, इन सपनों को हकीकत में बदलने के मूल आधार के रूप में भी शिक्षा को स्वीकार किया गया है।

शिक्षा के माध्यम से ही बालक अपना सर्वांगीण विकास करता है और समाज एवं राष्ट्र की उन्नति में अपना सहयोग प्रदान करता है।

आज के इस प्रगतिशील भौतिकवादी युग में शिक्षा ही व्यक्ति को जीविकोपार्जन के लिए समृद्धशाली बनाती है तथा उसे सामाजिक, सांस्कृतिक और अन्य दायित्व निर्वहन के लिए तैयार करती है।

शिक्षा का तात्पर्य मात्र अक्षर ज्ञान ही नहीं है, अपितु यह बालक को ज्ञान कराती है उसे अच्छे तथा बुरे में भेद करने योग्य बनाती है, अनैतिक आचरण से दूर करती है तथा मनुष्य में अनुशासन एवम् निष्ठा के साथ चरित्र निर्माण का मार्ग प्रशस्त करती हैं।

कहा भी गया है कि विद्या में विनय, विवेक और विश्वास उत्पन्न होता है और इससे ही जीवन में विजय और यश की प्राप्ति होती हैं।

शिक्षा की इन विशेषताओं से प्रेरित होकर ही सम्पूर्ण विश्व में सभी देशों में शिक्षा के उत्थान हेतु कार्यक्रम चलाकर शत प्रतिशत साक्षरता के लक्ष्य प्राप्त करने के प्रयास किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में केन्द्र सरकार द्वारा 6 वर्ष से 14 वर्ष तक की आयु के सभी बालकों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 लागू किया गया।

विद्यालय इन बालकों को औपचारिक एवम् सक्रिय शिक्षा प्रदान करने के सबसे महत्त्वपूर्ण साधन है। इन विद्यालयों में सेवारत शिक्षकों का ही उनको शिक्षित करने का दायित्व है। शिक्षण क्षेत्र में आने वाले नए व्यक्तियों में व्यावसायिक कुशलता के रूप में शिक्षण के विभिन्न कौशलों में पारगंत करने का

उत्तरदायित्व शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालयों का होता है।

बाल शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 के पश्चात् हमारे देश के सभी बच्चों को शिक्षा का अधिकार मिल गया, किंतु देश भर में शिक्षा की बागडोर संभालने वाले शिक्षकों के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में 'गुणात्मक' एवम् 'मूल्य' शिक्षा की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिए जाने से ये शिक्षक केवल भावी पीढ़ी को सूचनाएँ प्रेषित करने वाले साधन ही साबित हो रहे है।

यदि हम सर्वप्रथम शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में सेवापूर्व प्रशिक्षण के लिए प्रवेश लेने वाले प्रशिक्षणार्थियों की प्रवेश प्रक्रिया को ही देखें तो इस प्रवेश परीक्षा में केवल मानसिक योग्यता अध्यापक अभिवृत्ति एवम् अभिरुचि, सामान्य ज्ञान तथा हिन्दी अथवा अंग्रेजी विषयों संबंधी प्रश्नों पर आधारित परीक्षा आयोजित की जाती है और उसी आधार पर वरीयता से प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों का चयन कर दिया जाता है।

इस प्रक्रिया में छात्रों द्वारा स्नातक स्तर तक जिस संकाय में अध्ययन किया जाता है। उसके मूल्यांकन का प्रावधान नहीं होने से प्रशिक्षण कार्यक्रम में ऐसे विद्यार्थियों का भी प्रवेश हो जाता है, जिनकी विषय वस्तु पर तो पकड़ ही नहीं होती।

इसके पश्चात् जब इन महाविद्यालयों में सेवापूर्व प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले इन

नवागन्तुकों के शिक्षण कार्यक्रम का विश्लेषण करते हैं तो हम पाते हैं कि उनमें शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्वारा शिक्षण कौशलों को विकसित करने का तो प्रयास किया जाता है किंतु विषयवस्तु की गुणवत्ता पर उतना ध्यान नहीं दिया जा रहा।

विषय वस्तु की गुणवत्ता की यही कमी आगे चलकर इन भावी शिक्षकों के द्वारा नई पीढ़ी तक पहुँच जाती है।

'मूल्य शिक्षा' का अभिप्रायः उन सभी प्रक्रियाओं से है जो किसी भी व्यक्ति में ऐसे सकारात्मक गुणों, अभिरुचियों तथा विशेषताओं का विकास करते है जिससे कि उसमें समाज में सही ढंग से स्थापित होने की क्षमताएँ विकसित हो जाती है। कहा भी गया है–

"Man Can Create and Animal Does Not"

आज के इस सूचना एवं संचार क्रांति के युग में 'गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर' के ये विचार अत्यत प्रासंगिक है कि

''हम बच्चों के मस्तिष्क में सूचनाएँ उड़ेल रहे हैं और जीवन मूल्यों, अनुभवों तथा आध्यात्मिकता की अवहेलना कर रहे हैं।''

उन्हीं के अनुसार **''जो शिक्षक स्वयं सीखना बन्द कर देता है, वह बच्चों को आगे बढ़ाने की क्षमता खो देता है।''**

शिक्षक की तुलना उस जलते हुए दीपक से की गई है जो अपने प्रकाश से विद्यार्थी रूपी दीपक को प्रकाशित करता है किंतु स्वयं के प्रकाश में कमी नहीं आने देता है। शिक्षक रूपी इस जलते हुए दीपक की लौ के लिए सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम की गुणात्मकता एवं मूल्य शिक्षा का अत्यंत महत्त्व है।

गुणात्मक व जीवन मूल्यों की पक्षधरता को लेकर महात्मा गाँधी ने भी लिखा है–

"I have always felt that the true text book for the pupil is his teacher"

अर्थात् किसी भी बालक के लिए शिक्षक ही सच्ची पुस्तक है।

एक सफल शिक्षक वही है जो बालक के विकास के लिए सहयोगी, मित्र, मार्गदर्शक और संरक्षक बनकर नई दिशा प्रदान करें।

सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम से शिक्षकों में विकसित होने वाले प्रमुख गुण

1. कार्य करने का नया ढंग।
2. सामाजिक परिवर्तन के अनुरूप शिक्षण।
3. बालक की महत्त्वाकांक्षाओं को उभारना।
4. बालक में वैज्ञानिक सोच विकसित करना।
5. बालक में नये दृष्टिकोण और मूल्यों का निर्माण।
6. बालक में नवाचारों के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
7. बालक को प्रायोगीकरण हेतु प्रोत्साहित करना।
8. शिक्षण कुशलताओं का निर्माण ।
9. पंथ निरपेक्ष जीवन शैली विकसित करना।

डॉ. राधाकृष्णन ने लिखा है कि **''शिक्षक वही बने जो आजीवन विद्यार्थी बना रहे।''**

संत विनोबा भावे के अनुसार 'एक सच्चा शिक्षक शिक्षा देता नहीं है उनसे स्वयं शिक्षा प्राप्त हो जाती है। सूर्य प्रकाश देता नहीं है, किंतु स्वाभाविक रूप से सभी को मिल जाता है।'

कहा जाता है कि 'एक डॉक्टर की गलती कब्र में दफ़न हो जाती है, एक इंजीनियर की गलती दीवार में दब जाती है, एक शिक्षक की गलती समाज में सदैव प्रतिबिम्बित होती है।'

ऐसे में शिक्षक से ही मुख्य रूप से ऐसे आचरण की अपेक्षा की गई है, जिसका कि भावी पीढ़ी पूर्णतया अनुसरण करती है और अपना आदर्श मानती है।

आज सेवा पूर्व शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम में गुणात्मक मूल्य शिक्षा क्यों आवश्यक है? इसके मुख्य कारण निम्न प्रकार हैः–

1. पवित्र साधनों के अभाव और असंतुलित रूप से बढ़ते सूचनाओं के भण्डार से व्यक्ति स्वयं को आंतरिक रूप से असुरक्षित महसूस करता है।
2. दिशाहीन शिक्षण प्रणाली किसी भी व्यक्ति में मानवीय गुणों का विकास करने की अपेक्षा उसे केवल सतही ज्ञान प्रदान कर पा रही है।
3. वर्तमान समय में व्यक्ति भौतिकवादी संस्कृति में पैसा कमाने के लिए साधन और साध्य की पवित्रता को गौण समझ रहा है।

इन परिस्थितियों में भावी पीढ़ी को संस्कारित करने वाले सच्चे वाहक शिक्षकों को गुणात्मक शिक्षा के लिए इन मूल्यों से शिक्षित करना अत्यंत आवश्यक है।

गुणात्मक व मूल्य शिक्षा सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले शिक्षकों में निम्न विशेषताओं का समावेश करती हैः–

1. मूल्य शिक्षा शिक्षक के जीवन में गुणवत्ता लाकर जीवन का अर्थ समझाती है।
2. मूल्य शिक्षा शिक्षक को उसका अस्तित्व और चारित्रिक गुणों को विकसित करने में सहायता प्रदान करती है।
3. मूल्य शिक्षा शिक्षक के लिए ऐसी दिशा का निर्धारण करती है कि उसको क्या करना चाहिए? क्या नहीं करना चाहिए? इस प्रकार उसे दिशाहीन चिंतन से बचाकर चिंता मुक्त करती है।

अतः विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों तक लोकतांत्रिक, सामाजिक और पंथ निरपेक्षता जैसी विचारधाराओं को सही ढंग से पहुँचाने के लिए प्रभावी एवम् दक्ष तरीके से शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम में इनको स्थान देना अत्यंत आवश्यक हैं।

इसके लिए शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम में निम्नलिखित कार्यक्रमों को सम्मिलित किया जा सकता हैः–

- योग शिक्षा।
- पंथ निरपेक्ष शिक्षा।
- प्रभावी प्रार्थना सभा कार्यक्रम।
- सुदृढ़ संप्रेषण कार्यक्रम।
- पाठ्यक्रम में उचित पाठ्यवस्तु का समावेश।
- आध्यात्मिक एवम् चारित्रिक विकास हेतु संगोष्ठी।
- नैतिक शिक्षा आधारित कार्यशाला ।

ये सभी कार्यक्रम भावी पीढ़ी को तैयार करने वाले शिक्षकों को सच्चे मार्गदर्शक के रूप में स्थापित करने में सहायक सिद्ध होंगे।

प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. चाबा (जोधपुर)
मो: 9414918778

**लोहा कितना ही गर्म क्यों न हों
हथोड़ा ठंडा रहकर ही काम दे सकता है।**

**नदी को पार करना पौरुष का काम है,
वरना बहाव के साथ तो लाशें भी चली जाती है।**

दिव्यांग शिक्षक जैसाराम की दिव्यता

शिक्षा विभाग रत्नों की खान है। रत्नों को तराशने वाले जौहरी शिक्षक ही होते है। ऐसे ही एक जौहरी है रा.मा.वि. देवीकुण्ड सागर, बीकानेर में कार्यरत वरिष्ठ अध्यापक-हिन्दी श्री जैसाराम। श्री जैसाराम प्रज्ञाचक्षु है किन्तु उन्होंने अनेक विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया है। उनका बोर्ड परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत तो रहा ही है साथ ही कक्षा 10वीं के सत्रह विद्यार्थियों में से 16 विद्यार्थियों ने विशेष योग्यता अर्जित की हैं। इनके कृतित्व की दिव्यता विभिन्न समाचार पत्रों यथा दैनिक भास्कर के हिन्दी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के संस्करणों एवं नेशनल राजस्थान में प्रमुखता के साथ प्रकाशित हुयी है। साथ ही जी-न्यूज चैनल पर प्रसारित भी हुई है। शिक्षा जगत के जानकारों, शिक्षाविदों, शिक्षकों, विद्यार्थियों व सुधी पाठकों के उपयोगार्थ व विचारार्थ दैनिक भास्कर बीकानेर एवं नेशनल राजस्थान बीकानेर समाचार पत्रों में श्री जैसाराम के सम्बन्ध में प्रकाशित सामग्री साभार प्रस्तुत है। विश्वास है कि हम सभी दिव्यांग शिक्षक श्री जैसाराम की दिव्यता का प्रसाद ग्रहण कर कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर होकर दिव्यता वृद्धि में सहभागी बनने का संकल्प लेंगे।

-वरिष्ठ सम्पादक

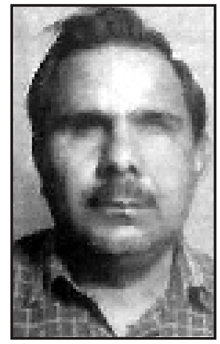

1. दृष्टिहीन हैं, लेकिन इनके छात्र डिस्टिंक्शन लाते हैं

कुदरत ने इन्हें जन्म से ही रोशनी नहीं बख्शी। लेकिन ये अपने छात्रों की जिंदगी खूब रोशन कर रहे हैं। जानने वाले इन्हें हिंदी का मास्टर माइंड कहते हैं। देख नहीं सकते, लेकिन मजाल है हिंदी में बिंदी तक की चूक कर जाएँ। सेकंडरी बोर्ड परीक्षा में इनकी पूरी क्लास ही हिंदी में डिस्टिंक्शन मार्क्स पा गई। व्याकरण की इस तरह जानकारी है कि मुँह जुबानी ही पढ़ा देते हैं। पढ़ाते वक्त किताब की भी जरूरत नहीं पड़ती।

ये हैं बेहद सीधी-सादी शख्सियत जैसाराम मूंड। ये हिंदी, राजनीति शास्त्र में डबल एमए. हैं। देवीकुंड सागर सेकंडरी सरकारी स्कूल में हिंदी के टीचर हैं। आठ साल पहले थर्ड ग्रेड टीचर बने। एमए. करने के बाद सेकंडरी क्लास लेने लगे। कड़ी मेहनत से अब राजस्थान पब्लिक सर्विस कमीशन की लेक्चरर परीक्षा पास कर ली। अब सीनियर सेकंडरी की क्लास लेंगे। हिंदी को पढ़ाने का इनका अपना अंदाज है। बच्चों के हाथ में होती है सामान्य किताब और इनके हाथ में ब्रेललिपि बुक। हर लाइन को जैसे वे बच्चों के दिमाग में फिट कर देते हैं। बारीकी इतनी कि बिंदी की गलती पर भी लाल गोला तय है। हालांकि होमवर्क जाँचने में सीनियर छात्रों की मदद लेते हैं।

हर बच्चे से रोजाना एक पेज का सुलेख जरूर लिखवाते हैं। शिक्षा महकमा जैसाराम को रोल मॉडल के रूप में पेश करना चाहता है। डायरेक्टर बीएल स्वर्णकार कहते हैं- जब ये दिव्यांग होकर ऐसे परिणाम दे सकते हैं तो और क्यों नहीं? इन्हें बेहतर प्लेटफॉर्म के लिए सरकार से सिफारिश की गई है। हमारे रिपोर्टर ने जैसाराम की क्लास को लाइव देखा। पता चला कि हर पाठ के बाद उनका सवाल-जबाव का सेशन चलता है। यानी बच्चे को जो पढ़ाया उसी दिन कंठस्थ करवाना। कॉपियाँ चेक करने वे घर ले जाते हैं। जहाँ चूक मिली वहाँ गोलों के साथ ही सही शब्द भी। वर्तनी में चूक इन्हें बिल्कुल पसंद नहीं। रोजाना टीवी-रेडियो की खबरों से अपडेट रहकर क्लास में बच्चों से जीके. पर भी चर्चा करना नहीं भूलते। यही नहीं वे विशेष सॉफ्टवेयर की मदद से फर्राटे से वॉट्सएप और इंटरनेट भी चलाते हैं। वे चुटकियों में मोबाइल से फाइल एक से दूसरे को सेंड कर देते हैं। अपनों से खूब चैटिंग भी करते हैं। अपने स्टाफ से वॉट्सएप के जरिए ही कई सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हैं। एचएम. दीपिका कहती हैं-ऐसे टीचर जरूर सोसायटी के लिए बड़ी देन हैं। जैसाराम गजब के खिलाड़ी भी हैं। राजस्थान ब्लाइंड चेस चैंपियनशिप से जूनियर और सीनियर चैंपियन हैं।

स्टेट लेवल के ब्लाइंड क्रिकेट टूर्नामेंट में अपने बल्ले से खूब रन बरसाए हैं। फील्डिंग करते हुए उनकी आँख पर गहरी चोट भी लग चुकी हैं। स्कूल में चार सौ से ज्यादा बच्चे हैं। जैसाराम वक्त के साथ इतने माहिर हो चुके हैं कि छठी से दसवीं कक्षा तक के अधिकांश बच्चों को पैरों की आहट से ही पहचान जाते हैं। वे सामने से नमस्ते का संबोधन आते ही बच्चे का नाम प्यार से पुकार लेते हैं।

(दैनिक भास्कर बीकानेर दि. 18.12.2016 से साभार)

2. नेत्रहीन शिक्षक बदल रहा तस्वीर

कोई आंख से अंधा होता है तो कोई अक्ल और दिमाग से। लेकिन यदि दृढ़ इच्छा शक्ति और मेहनत करने का जज्बा हो, तो आंख का अंधापन भी आड़े नहीं आ सकता। देवीकुंड सागर स्थित राजकीय माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत नेत्रहीन वरिष्ठ अध्यापक जैसाराम ने सरस्वती पुत्र होने का धर्म निभाकर अध्यापन से जी चुराने वाले शिक्षकों को रोशनी दिखाई है। शिक्षक की मेहनत के कारण दसवीं बोर्ड परीक्षा 2015-16 में हिंदी का शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम रहने के साथ 98 प्रतिशत विद्यार्थियों ने 75 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल किए हैं, जिसकी राज्य सरकार ने भी सराहना की है।

उपनिदेशक ओमप्रकाश सारस्वत ने बताया कि रामावि. देवीकुंड सागर में सत्र 2015-16 में दसवीं बोर्ड में सत्रह विद्यार्थी शामिल हुए। इनमें 14 विद्यार्थियों ने हिंदी विषय में 80 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल किए, वहीं 2 विद्यार्थियों ने 75.78 प्रतिशत व एक विद्यार्थी ने 68 प्रतिशत अंक हासिल किए। उपनिदेशक ने बताया कि गत दिनों विद्यालय के निरीक्षण के दौरान परीक्षा परिणामों की समीक्षा में उत्कृष्ट परिणाम सामने आया।

मंगलवार को राज्य सरकार के तीन साल का कार्यक्रम पूरा होने के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में शिक्षा विभाग की प्रदर्शनी में माध्यमिक शिक्षा निदेशक बीएल स्वर्णकार व प्रारंभिक शिक्षा निदेशक टी. रवि कुमार को उपनिदेशक ने शिक्षक के परीक्षा परिणाम की तालिका दिखाई। इसे निदेशकों ने कर्तव्य से जी चुराने वाले शिक्षकों के मुंह पर तमाचा बताते हुए जैसाराम की मेहनत को सलाम किया। उन्होंने कहा कि यदि सभी शिक्षक इस प्रकार मेहनत करने लगें, तो बोर्ड परीक्षाओं की मैरिट में सरकारी स्कूलों का ही दबदबा रहेगा।

(नेशनल राजस्थान बीकानेर से साभार)

आदेश-परिपत्र : जनवरी, 2017

1. राजकीय सम्पत्तियों को अतिक्रमण मुक्त कराने के सम्बन्ध में कार्यवाही हेतु।
2. समय विभाग चक्र में कालांश भार निर्धारण हेतु निर्देश।
3. वर्ष 2017-18 की बीमा परिपक्वता सूची अनुसार दावा निस्तारण बाबत।
4. इन्सपायर अवार्ड-मानक सत्र 2016-17 विद्यार्थी नॉमिनेशन के क्रम में ऑनलाइन सिस्टम पर कार्य की तिथियों की घोषणा।
5. योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा पर प्रकाशित 'बाल आरोग्यम्' पुस्तक को विद्यालयों एवं पुस्तकालयों में खरीदने बाबत।

1. राजकीय सम्पत्तियों को अतिक्रमण मुक्त कराने के सम्बन्ध में कार्यवाही हेतु।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● परिपत्र ●समाचार पत्रों, विभिन्न संचार माध्यमों एवं विधानसभा में माननीय सदस्य गणों द्वारा तथा राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर पत्र लिखते हुए शिक्षा विभाग के अन्तर्गत कतिपय प्रकरणों में राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों/कार्यालयों के भवन/रिक्त परिसर/खेल मैदान/भूमि पर असामाजिक तत्वों द्वारा अवैध रूप से किए जा रहे कब्जा/अतिक्रमण/निर्माण आदि हटवाने हेतु लिखा जाता है।

जिला शिक्षा अधिकारी-माध्यमिक-प्रथम/द्वितीय स्तर से उक्त प्रकार के प्रकरणों में नियमानुसार जाँच करवाकर सम्बन्धित विद्यालय भूमि/खेल मैदान/कार्यालय, जिस पर असामाजिक तत्वों द्वारा अवैध रूप से किए जा रहे अतिक्रमण/कब्जा कार्य को नियमानुसार मौका मुआयना कर अवैध कब्जा/निर्माण आदि कार्य को रोकने बाबत प्रशासन की मदद से कार्यवाही अमल में लाया जाना सुनिश्चित करावें जिससे कि राजकीय सम्पत्तियों यथा विद्यालय भूमि/खेल मैदान/कार्यालय भूमि अतिक्रमण से मुक्त हो सके।

सम्बन्धित उक्त प्रकार के प्रकरणों बाबत कार्यवाही अमल में लाते हुए वस्तुस्थिति के साथ अपनी तथ्यात्मक कार्यवाही रिपोर्ट अधोहस्ताक्षरकर्ता को प्रेषित करावें। उक्त प्रकृति के प्रकरणों को सर्वोच्च प्राथमिकता देवें।

● **(बी.एल. स्वर्णकार)** आई.ए.एस., निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा-माध्य/साप्र/डी-2/विविध/2016-17 दिनांक 28-11-2016

2. समय विभाग चक्र में कालांश भार निर्धारण हेतु निर्देश।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● परिपत्र ● माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों हेतु शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक पदों के मानदण्ड निर्धारण हेतु शासन के आदेश क्रमांकः प.22(6) शिक्षा-1/2002, जयपुर, दिनांकः 30.04.2015 के क्रम में इस कार्यालय के समसंख्यक निर्देश पत्र दिनांक : 20.08.2016 द्वारा विद्यालयों के समय विभाग चक्र के निर्माण में शासकीय निर्देशों के अनुरूप समुचित कालांश भार निर्धारण बाबत निर्देश प्रदान किए जा चुके हैं। विद्यालय परिवीक्षण के दौरान यह देखने में आया है कि विद्यालयों द्वारा समय विभाग चक्र निर्मित किए जाते समय उक्त निर्देशों की पालना नहीं की जा रही हैं। अतएव पूर्व प्रदत्त निर्देश पत्र दिनांक 20.08.2016 के अनुवर्तन में निम्नांकित निर्देशों की पालना सुनिश्चित की जाए :-

1. विषय व्याख्याताओं को समय विभाग चक्र में प्रत्येक सप्ताह में कक्षा 9 से 12 तक कुल 33 कालांश आवंटित किए जाएँ।
2. वरिष्ठ अध्यापकों को समय विभाग चक्र में प्रत्येक सप्ताह में कक्षा 6 से 10 तक कुल 36 कालांश आवंटित किए जाएँ।
3. अध्यापक लेवल-2 को समय विभाग चक्र में प्रत्येक सप्ताह में कक्षा 1 से 8 तक कुल 42 कालांश आवंटित किए जाएँ।
4. अध्यापक लेवल-1 को समय विभाग चक्र में प्रत्येक सप्ताह में कक्षा 1 से 5 तक कुल 42 कालांश आवंटित किए जाएँ।
5. व्याख्याता के पद रिक्त होने पर संबंधित विषय के वरिष्ठ अध्यापक द्वारा कक्षा 11 एवं 12 में आवश्यकतानुसार शिक्षण कार्य करवाया जाएगा।
6. व्याख्याता/वरिष्ठ अध्यापक के पद रिक्त होने पर संबंधित विषय के अध्यापक लेवल-2 द्वारा कक्षा 9 से 12 में आवश्यकतानुसार शिक्षण कार्य करवाया जा सकेगा।

समस्त संबंधितों द्वारा क्षेत्राधिकार में उपर्युक्त निर्देशों की पालना एवं क्रियान्विति सर्वोच्च प्राथमिकता से करवाई जानी सुनिश्चित की जाए। भविष्य में उपर्युक्त निर्देशों की पालना में कोताही बरती जाने की स्थिति सामने आने पर सम्बन्धित संस्था प्रधान एवं जिला शिक्षा अधिकारी के विरुद्ध नियमानुसार कार्यवाही अमल में लाई जाएगी।

● **(बी.एल. स्वर्णकार)** आई.ए.एस., निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/मा/निप्र/डी-I/104/II/नवाचार/2016-17/198 दिनांक : 02.12.2016

3. वर्ष 2017-18 की बीमा परिपक्वता सूची अनुसार दावा निस्तारण बाबत।

● राजस्थान सरकार, ● निदेशालय, राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग ● क्रमांक : एफ-(50)बीमा/जेडी/मूल्यांकन/2016-17/211-257 दिनांक 25-11-2016 ● वरि. अतिरिक्त निदेशक/अतिरिक्त/संयुक्त/उप/सहायक निदेशक, राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग समस्त सम्भाग/जिला कार्यालय ● विषय : वर्ष 2017-18 की बीमा परिपक्वता सूची अनुसार दावा निस्तारण बाबत।

जैसा कि आपको विदित है पूर्व वर्षों की भाँति इस वर्ष भी राज्य बीमा पॉलिसी के परिपक्व दावों का निस्तारण विशेष अभियान के तहत किया जाना है। अधिवार्षिकी आयु के आधार पर परिपक्व होने वाले मामलों की सिस्टम एवं मूल्यांकन अनुभाग द्वारा तैयार की गई सूची ई-मेल द्वारा क्रमशः दिनांक 11.11.2016 व 16.11.2016 को भिजवायी जा चुकी है। परिपक्वता सूची के प्रकरणों में दिनांक 01.04.2017 के अधिकार पत्र ऑनलाइन निस्तारित किए जाने को दृष्टिगत रखते हुए ऑनलाइन सूची को मूल्यांकन डाटा सूची से अपडेट कर पूर्व में परिपक्वता, अध्यर्पण, मृत्यु स्वत्व एवं स्थानांतरण से निस्तारित मामलों को कम करते हुए अपडेट सूची तैयार कर माह दिसम्बर 2016 के

समाशोधन गृह (क्लियरिंग हाउस) में हार्ड एवं सॉफ्ट कॉपी में भिजवाते हुए निस्तारित मामलों में सत्यापन कर तथा निम्नानुसार कार्यवाही किया जाना सुनिश्चित करेंः-

1. सूची के अनुसार पॉलिसी पत्रावली की उपलब्धता व प्रिमीयम खतौनी की जाँच करें।
2. स्थानान्तरित प्रकरणों की सूची जिसमें स्थानान्तरित जिले का नाम, स्थानान्तरण की दिनांक एवं समाशोधन गृह (क्लियरिंग हाउस) की दिनांक अंकित कर मूल्यांकन अनुभाग मुख्यालय को दिनांक 15.12.2016 तक प्रेषित किया जाना सुनिश्चित करें।
3. जिन मामलों में पत्रावली उपलब्ध हैं तथा वर्तमान खतौनी भी प्राप्त हो रही है उनमें खतौनी का पूर्ण सत्यापन कर अधिक जोखिम वहन करते हुए ऋण आहरण मोड्यूल को भी अपडेट किया जाना सुनिश्चित किया जावे।
4. जिन मामलों में पत्रावली उपलब्ध नहीं है किन्तु वर्तमान वर्षो की खतौनी प्राप्त हो रही है, में मास्टर इण्डेक्स से पत्रावली का लोकेशन ज्ञात कर सम्बन्धित जिले से पत्रावली प्राप्त करने की कार्यवाही की जावे। उक्त सम्बन्ध में अधिकारी द्वारा व्यक्तिशः सम्बन्धित जिले से दूरभाष पर वार्ता कर पत्रावली प्राप्त किए जाने के प्रयास किए जावे।
5. सूची के अनुसार जिन मामलों में पत्रावली एवं वर्तमान खतौनी दोनों आपके जिले में प्राप्त नहीं है, उनमें निम्नानुसार कार्यवाही करें।

I यह ज्ञात किया जाए कि आपके जिला कार्यालय द्वारा इनमें पूर्व में मृत्यु/अध्यर्पण राशि का भुगतान तो नहीं कर दिया गया है?

II यदि पत्रावली पूर्व में अन्य जिला कार्यालयों को स्थानान्तरित कर दी गई है तो उनका विवरण सूची में अंकित कर मुख्यालय भिजवाएँ।

III यदि उपर्युक्त बिन्दु संख्या I एवं II दोनों की स्थितियाँ नहीं हों तो इस प्रकार की सूची बनाकर जिसमें बीमेदार का नाम/पिता का नाम/जन्म तिथि/राज्य बीमा पॉलिसी नम्बर का अंकन हो। मुख्यालय के बीमा मूल्यांकन अनुभाग को 15.12.2016 तक आवश्यक रूप से भिजवाया जावे।

6. दिनांक 01.04.2017 को परिपक्व होने वाले प्रकरणों के संबंध में उक्त समस्त कार्यवाही कर बीमेदारों को स्वत्व प्रपत्र प्रेषित करने के पश्चात् संलग्न प्रारूप में क्रम संख्या-12 तक की सूचना दिनांक 15.12.2016 तक मुख्यालय को प्रेषित करावें।
7. परिपक्व होने वाले मामलों के स्वत्व प्रपत्र प्राप्ति/निस्तारण की प्रगति रिपोर्ट संलग्न प्रारूप में कॉलम संख्या-18 तक की सूचना अधिकार पत्र जारी करने तक नियमित रूप से मुख्यालय को सॉफ्टकॉपी में भी प्रेषित करें। उक्त कार्यवाही निम्नानुसार पूर्ण करावेंः-

I स्वत्व प्रपत्र प्राप्त करने की कार्यवाही दिनांक 31.01.2017 तक पूर्ण करावें तथा समस्त आहरण एवं वितरण अधिकारियों को ईमेल द्वारा सूचित करें।

II. जिन प्रकरणों में स्वत्व प्रपत्र प्राप्त हो जाते हैं, उन समस्त प्रकरणों के अधिकार पत्र जारी करने की समस्त कार्यवाही दिनांक 20.03.2017 तक पूर्ण कर ली जावे।

III. निस्तारित प्रकरणों की प्रगति रिपोर्ट संलग्न प्रारूप में दिनांक 01.02.2017 से प्रति सप्ताह प्रत्येक शुक्रवार को संयुक्त निदेशक (बीमा) मुख्यालय को ई-मेल jd.ins.sipf@rajasthan.gov.in द्वारा भिजवाया जाना सुनिश्चित करें।

8. राज्य सरकार के आदेश अनुसार दिनांक 31.03.2016 के द्वारा चिकित्सकों की अधिवार्षिकी आयु 62 वर्ष हो जाने के कारण ऐसे प्रकरणों की सूची मुख्यालय भिजवाते हुए दावा प्रपत्र प्राप्त करने की कार्यवाही नहीं की जावे तथा उन्हें आगामी परिपक्वता तिथि बाबत पत्र द्वारा सूचित करावें।
9. सर्वप्रथम **एम्पलॉई मास्टर** में एम्प्लॉई डाटा में बीमेदार की जन्म तिथि, कैटेगरी तथा उसके डीडीओ का मिलान करावें, यदि त्रुटिपूर्ण हो तो उसे ऑल्ट्रेशन में जाकर प्रामाणिक रिकॉर्ड के अनुसार सही कर लेवें ताकि क्लेम गणना का परिणाम सही प्राप्त हो सके।
10. यदि **बीमा पॉलिसी टैग** नहीं हुई हो तो S.I.→Transaction→SI Scheme Detail में जाकर पॉलिसी को टैग करावें।
11. **लोन फ्रिजिंग** दिनांक 01.04.2012 के पश्चात आहरित किया गया केवल अन्तिम ऋण ही फ्रीज किया जाना है जो कि S.I.→Transaction→Last Loan स्क्रीन पर जाकर सबमिट करावें, यदि उक्त अवधि का ऋण पोर्टल के माध्यम से ही वर्कफ्लो के तहत अप्रूव किया गया है तो उसे पुनः सबमिट करने की आवश्यकता नहीं है।
12. दिनांक 01.04.2017 को परिपक्व हो रही समस्त पॉलिसियों को पुनः एडिट कर सबमिट किया जाना है, इस हेतु S.I.→Transaction→Edit Contract पर क्लिक करके खुलने वाली विण्डो में समस्त कॉन्ट्रेक्ट का मूल बीमा पत्रावली से पुनः मिलान करें तथा यदि कॉन्ट्रेक्ट में सुधार की आवश्यकता हो तो सुधार कर सबमिट करें।
13. S.I.→Transaction→Edit Contract में आकर एडिट किए गए प्रकरण की एम्प्लॉई आईडी सर्च करें जिससे प्राप्त रिजल्ट में डाउनलोड व अपलोड के बटन दिखेंगेः-

I. डाउनलोड बटन पर क्लिक करके प्रकरण की लेजर को एक्सल में डाउनलोड करें, उक्त लेजर फरवरी 2017 तक का प्राप्त होगा। एक्सल में दो भिन्न-भिन्न रंगों के ऑलीव ग्रीन तथा लाइट ऑरेंज सैल्स दिखेंगे। सभी ऑलीव ग्रीन सैल्स एडीटेबल है जिनमें आप आवश्यकतानुरूप संशोधन कर सकते है। समस्त लाइट ऑरेंज सैल्स अपरिवर्तनीय हैं जिनमें फरवरी, 2012 के पश्चात् पे-मैनेजर से प्राप्त होने वाली कटौतियाँ भी सम्मिलित है। पे-मैनेजर से प्राप्त कटौतियों में संशोधन नहीं किया जा सकता है।

II. एक्सल में प्राप्त लेजर को फरवरी 2012 तक या जिनकी कटौतियाँ

पे-मैनेजर के माध्यम से नहीं हुई हों उन मामलों में फरवरी 2017 तक विभागीय हार्ड लेजर/बीमा रिकॉर्ड के अनुरूप यथावश्यक परिवर्तित/संशोधित करें अर्थात् प्रीमियम गैप्स, शॉर्ट प्रीमियम, एक्सेस प्रीमियम व फ्रीज किए गए ऋणों की कटौतियों का इन्द्राज एक्सल लेजर में करने के पश्चात अपलोड करें।

14. Claim Process:- S.I.→Transaction→Claim पर जाएँ, एम्पलॉई आईडी के फिल्ड में एम्पलॉई आईडी डालकर टेब दबाएँ। एम्पलॉई का डेटा उपलब्ध होने के पश्चात इन-सर्विस के चेक बॉक्स को अनटिक करें। क्लेम टाइप में सुपरऐनुऐशन सलेक्ट करें तथा मेच्योरिटी दिनांक में 01.04.2017 सलेक्ट करें। नीचे की ओर उपलब्ध Previous Unsettled Loan, Interest on Previous Unsettled Loan, Interest, Other Due Interest, Duplicate Policy Fee, Excess Loan Received तथा Interest on Excess Loan में यदि कोई बकाया अथवा देय राशियों का इफेक्ट डालने की आवश्यकता है तो वह ऐन्टर करें। नीचे की ओर उपलब्ध दोनों डिक्लेरेशन के चैक बॉक्स पर टिक करें एवं सबमिट कर देवें।
15. उपर्युक्तानुसार पॉलिसी टैगिंग/कान्ट्रेक्ट एडिटिंग/लोन सबमिशन/ऑटो लेजर अपडेशन/एप्लिकेशन सबमिशन आदि प्रक्रियाएँ पूर्ण करने के पश्चात समस्त कार्यवाही वर्कफ्लो के तहत एलडीसी/यूडीसी द्वारा क्लेम सबमिट करने के पश्चात् सुपरवाइजर अपनी लॉगिन आईडी से लॉगिन करके प्रकरण में जन्म तिथि कैटेगरी (चतुर्थ श्रेणी अथवा अन्य), डीडीओ तथा गणना की जाँच करें। यदि प्रकरण जाँच में सही पाया जाता है तो ऑनलाइन क्लेम को फॉरवर्ड कर देवें।
16. संयुक्त/उप/सहायक निदेशक-सुपरवाइजर द्वारा जाँच किए गए ऑनलाइन क्लेम को अप्रूव बटन द्वारा अप्रूव करने के पश्चात् 'प्रिण्ट ऑथोरिटी' बटन पर क्लिक करके अधिकार पत्र का प्रिण्ट प्राप्त कर विभागीय प्रक्रिया एवं नियमानुसार अग्रिम कार्यवाही की जावें।
17. परिपक्वता भुगतान बाबत प्रेस नोट जारी करके जिले के समस्त समाचार पत्र पत्रिकाओं में निःशुल्क प्रकाशित करने की व्यवस्था भी करावें।

संलग्नः- उपर्युक्तानुसार

● **(किशनाराम ईसरवाल)** वरिष्ठ अतिरिक्त निदेशक (बीमा) मुख्यालय-राज. जयपुर ● क्रमांक : एफ-(50)बीमा/जेडी/मूल्यांकन/2016-17/258-261 दिनांक 25-11-2016

4. इन्सपायर अवार्ड-मानक सत्र 2016-17 विद्यार्थी नॉमिनेशन के क्रम में ऑनलाइन सिस्टम पर कार्य की तिथियों की घोषणा।

● कार्यालय-निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/छाप्रोप्र/स-2/60115/इन्सपायर अवार्ड/2016-17/दिनांक 15.12.2016 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक प्रथम/द्वितीय) ● विषय : इन्सपायर अवार्ड-मानक सत्र 2016-17 विद्यार्थी नॉमिनेशन के क्रम में ऑनलाइन सिस्टम पर कार्य की तिथियों की घोषणा। ● प्रसंग : विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग का पत्र क्रमांक 12011/71/2015-INSPIRE दिनांक 24.11.2016

उपर्युक्त विषयान्तर्गत एवं प्रासंगिक पत्र के क्रम में लेख है कि जैसा कि आप सभी को पहले से अवगत है कि इन्सपायर अवार्ड स्कीम का स्वरूप बदल दिया गया है। अब यह स्कीम इन्सपायर अवार्ड-मानक के नाम से कुछ नए स्वरूप में सत्र 2016-17 में क्रियान्वित होगी। इस हेतु आपके जिले से अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी शैक्षिक प्रकोष्ठ ने दिनांक 23-24 अगस्त 2016 को आई.आई.एम. अहमदाबाद परिसर में आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया था। इसी क्रम में निदेशालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर परिसर में भी एक दिवसीय कार्यशाला दिनांक 08.09.2016 को आहूत की गई थी।

वर्ष 2016-17 में ऑनलाइन नॉमिनेशन E-MIAS पर दिनांक 01.12.2016 से प्रारम्भ हो चुके हैं जो कि 28.2.2017 तक प्रत्येक विद्यालय के लिए खुले रहेंगे। आप अपने जिले के समस्त विद्यालयों के संस्था प्रधानों को नवीन योजना के संबंध में निर्देशित करें।

वर्ष 2016-17 में किए जाने वाले कार्य हेतु निम्न बिन्दुओं का विशेष ध्यान रखें :-

1. आपके जिले के वे विद्यालय जो कि ई-मैनेजमेन्ट ऑफ इंसपायर अवार्ड स्कीम (E-MIAS) सिस्टम पर रजिस्टर्ड नहीं है उन्हें संबंधित पोर्टल (www.inspireawards-dst.gov.in) पर रजिस्टर करने हेतु अपने अधीनस्थ संस्था प्रधानों को निर्देशित करें ताकि समस्त छात्र/छात्राओं का नॉमिनेशन विद्यालय द्वारा इस स्कीम हेतु किया जा सके। नॉमिनेशन प्रक्रिया के पश्चात DST एवं NIF द्वारा चयनित विद्यार्थियों के खाते में रुपए 5000 DBT द्वारा जमा करवा दिए जाएँगे।
2. इस वर्ष विद्यार्थी का नॉमिनेशन उनके द्वारा दिए गए **INNOVATIVE IDEA** की गुणवत्ता के अनुसार होगा न कि गत वर्षों से चली आ रही गणित+विज्ञान में अर्जित किए अधिकतम प्राप्तांकों की परिपाटी के आधार पर। इस हेतु संस्था प्रधान विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों को नवीन **IDEA** प्रस्तुत करने हेतु प्रेरित करें तथा विद्यालय स्तर पर प्रदर्शनी आयोजित कर कक्षा 6 से 10 तक के सर्वोकृष्ट 2-3 **IDEAS** को नॉमिनेट कर सकते हैं। इससे विद्यार्थियों में स्वस्थ प्रतियोगी भावना का विकास होगा और हमें उत्तम ideas प्राप्त हो सकेंगे। साथ ही इस वर्ष से प्रत्येक विद्यालय (राजकीय, गैर राजकीय अनुदानित या गैरअनुदानित, केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकार या लोकल बॉडिज द्वारा संचालित) हर वर्ष अपने विद्यालय के विद्यार्थियों का नॉमिनेशन कर सकेगा, पूर्व में यदि एक बार नॉमिनेशन कर दिया है तो पंचवर्षीय योजना में अग्रिम वर्षों में विद्यालय के छात्रों को इन्सपायर अवार्ड प्राप्त नहीं हो पाता था परन्तु अब से यह प्रतिबन्ध हटा दिया गया है।
3. यह भी ध्यान रखें कि इस वर्ष से विद्यार्थियों को नॉमिनेट करते समय उनके **INNOVATIVE IDEA** का सारांश (synopsis)

word या pdf format में अपलोड करना आवश्यक है। इसको अपलोड न करने की स्थिति में विद्यार्थी का चयन योजना में नहीं किया जा सकेगा तथा संस्था प्रधान से इसका कारण भी पूछा जा सकता है।

4. जिला स्तरीय इन्सपायर अवार्ड प्रदर्शनी में चयनित हो कर राज्य स्तरीय इन्सपायर अवार्ड प्रदर्शनी में भाग लेने वाले विद्यार्थियों में से 10 प्रतिशत विद्यार्थियों का चयन कर उन्हें अपने **INNOVATIVE IDEA** को मूर्त रूप प्रदान करने के लिए 20,000 रु. पुनः उनके खाते में डीबीटी द्वारा जमा करवा दिए जाएँगे। विद्यार्थी के IDEA को मॉडल के रूप में लाने के लिए NIF के वैज्ञानिक विद्यार्थी की सहायता करेंगे।

5. उक्त चयनित मॉडल राष्ट्र स्तरीय इन्सपायर अवार्ड प्रदर्शनी में भाग लेंगे। इस प्रदर्शनी में चयनित कतिपय नवाचारी मॉडल विद्यार्थी के नाम से पेटेन्ट कराने में TIFAC नामक संस्था विद्यार्थियों का मार्गदर्शन एवं सहायता करेगी।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा, 'इन्सपायर अवार्ड मानक' हेतु विस्तृत दिशा-निर्देश पूर्व में वर्णित प्रशिक्षण एवं कार्यशाला में आपके जिले के शैक्षिक प्रकोष्ठ अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी एवं जिला स्तर पर गठित तीन सदस्यीय दल को दिए जा चुके हैं। वे समस्त अपने दायित्व का पूर्ण मनोयोग से पालन करते हुए जिले में वर्ष 2016-17 का इन्सपायर अवार्ड संबंधित समस्त कार्य सम्पादित करावें।

● **(बी.एल. स्वर्णकार)** आई.ए.एस., निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

5. योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा पर प्रकाशित 'बाल आरोग्यम्' पुस्तक को विद्यालयों एवं पुस्तकालयों में खरीदने बाबत।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : उनि/सशि/पत्र-पत्रिका/राज्य निर्देश/एफ-2005/15-16/340 दिनांक 30.11.2016 ● 1. समस्त उपनिदेशक माध्यमिक 2. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम/द्वितीय) ● योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा पर प्रकाशित **'बाल आरोग्यम्'** पुस्तक को विद्यालयों एवं पुस्तकालयों में खरीदने बाबत।

राज्य सरकार के आदेश प-24 (36) शिक्षा-6/2015 जयपुर दिनांक 03.11.2016 के निर्देशानुसार राज्य में संचालित राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुस्तकालयों/वाचनालयों में उपलब्ध बजट प्रावधान अन्तर्गत योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा पर प्रकाशित 'बाल आरोग्यम्' पुस्तक खरीदने की स्वीकृति प्रदान की जाती है।

क्र.सं	पुस्तक का नाम	प्रकाशक का नाम एवं पता
01	योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा पर प्रकाशित 'बाल आरोग्यम्' पुस्तक	श्रीमती फूसीदेवी योगा एण्ड नैचुरोपैथी संस्थान, सी-07, द्वितीय मंजिल, लक्ष्मी प्लाजा, जी.एस. रोड बीकानेर- 334001

●उपनिदेशक, समाज शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

माह : जनवरी, 2017		विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम		प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक	
दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ का नाम
11.1.2017	बुधवार	जयपुर	12	जीव विज्ञान	परीक्षामाला
12.1.2017	गुरुवार	उदयपुर		गैर पाठ्यक्रम	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (राष्ट्रीय युवा दिवस उत्सव)
13.1.2017	शुक्रवार	जयपुर	12	भौतिक विज्ञान	परीक्षामाला
14.1.2017	शनिवार	उदयपुर		गैर पाठ्यक्रम	मकर संक्रान्ति उत्सव
16.1.2017	सोमवार	जयपुर	12	अर्थशास्त्र	परीक्षामाला
17.1.2017	मंगलवार	उदयपुर	12	हिन्दी साहित्य	परीक्षामाला
18.1.2017	बुधवार	जयपुर	12	व्यवसाय अध्ययन	परीक्षामाला
19.1.2017	गुरुवार	उदयपुर	12	गणित	परीक्षामाला
20.1.2017	शुक्रवार	जयपुर	12	गृह विज्ञान	परीक्षामाला
21.1.2017	शनिवार	उदयपुर	12	लेखाशास्त्र	परीक्षामाला
23.1.2017	सोमवार	जयपुर		गैर पाठ्यक्रम	देश प्रेम दिवस (सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती)
24.1.2017	मंगलवार	उदयपुर	12	कृषि	परीक्षामाला
25.1.2017	बुधवार	जयपुर	12	अनिवार्य हिन्दी	परीक्षामाला
27.1.2017	शुक्रवार	उदयपुर	12	चित्रकला	परीक्षामाला
28.1.2017	शनिवार	जयपुर	12	भूगोल	परीक्षामाला
30.1.2017	सोमवार	उदयपुर		गैर पाठ्यक्रम	हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी (शहीद दिवस)
31.1.2017	मंगलवार	जयपुर	12	राजनीति विज्ञान	परीक्षामाला

शिविरा पञ्चाङ्ग सत्र 2016-17

जनवरी 2017

रवि	1	8	15	22	29
सोम	2	9	16	23	30
मंगल	3	10	17	24	31
बुध	4	11	18	25	
गुरु	5	12	19	26	
शुक्र	6	13	20	27	
शनि	7	14	21	28	

जनवरी 2017 ● कार्य दिवस-20, रविवार-5, अवकाश-6, उत्सव-5 ● 1 से 7 जनवरी-शीतकालीन अवकाश। **5 जनवरी-**गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती (अवकाश-उत्सव)। **12 जनवरी-1.** स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (राष्ट्रीय युवा दिवस-उत्सव), केरियर डे का आयोजन (माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय) **2.** विद्यालय स्तरीय/जिला स्तरीय व्यावसायिक शिक्षा कौशल विकास प्रतियोगिता (RMSA)। **14 जनवरी-**मकर संक्रान्ति (उत्सव)। **15 से 31 जनवरी-**केजीबीवी में शैक्षिक किशोरी मेलों का आयोजन करना। **16 से 18 जनवरी-**राज्य स्तरीय 'जीवन कौशल विकास' बाल मेला का आयोजन (उच्च प्राथमिक कक्षाओं हेतु) (SIERT)। **23 जनवरी-**सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती, देश प्रेम दिवस (उत्सव)। **26 जनवरी-**गणतंत्र दिवस (उत्सव अनिवार्य, अवकाश)। **27 जनवरी (अमावस्या)-**समुदाय जागृति दिवस। **30 जनवरी-**शहीद दिवस (प्रात: 11.00 बजे दो मिनट का मौन)। **नोट:- 1.** माध्यामिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों के लिए सृजनात्मक प्रतियोगिता का जिला स्तरीय आयोजन। **2.** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल उन्नयन की राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं का आयोजन। **3.** तृतीय योगात्मक आकलन का आयोजन (जनवरी के तृतीय सप्ताह में) (SIQE /CCE संचालित विद्यालयों में)।

फरवरी 2017

रवि		5	12	19	26
सोम		6	13	20	27
मंगल		7	14	21	28
बुध	1	8	15	22	
गुरु	2	9	16	23	
शुक्र	3	10	17	24	
शनि	4	11	18	25	

फरवरी 2017 ● कार्य दिवस-23, रविवार-4, अवकाश-1, उत्सव 4 ● 1 फरवरी-बसन्त पंचमी/सरस्वती जयन्ती (उत्सव), गार्गी पुरस्कार समारोह, बालिका दिवस आयोजन। **9 से 11 फरवरी-**तृतीय परख का आयोजन। **10 फरवरी-**राष्ट्रीय डी-वर्मिंग दिवस पर सभी छात्र छात्राओं को मध्याह्न भोजन उपरान्त डी-वर्मिंग दवा का वितरण (एलबेन्डाजोल गोली) (SSA)। **15 फरवरी-**डी-वर्मिंग मॉप अप डे-10 फरवरी को वंचित छात्र-छात्राओं को डी-वर्मिंग दवा का वितरण (SSA)। **17 से 18 फरवरी-**सत्रान्त की संस्था प्रधान वाक्पीठ (प्रावि/उप्रावि /मावि/उमावि) का आयोजन। **21 फरवरी-**स्वामी दयानन्द जयन्ती (उत्सव)। **24 फरवरी-**महा शिवरात्रि (अवकाश-उत्सव)। **27 फरवरी-**समुदाय जागृति दिवस। **28 फरवरी-**राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (उत्सव)। **नोट :-1.** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोज्य कक्षा 10 एवं 12 की परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों हेतु 14 दिवस का परीक्षा पूर्व तैयारी अवकाश रहेगा। **2.** 26 फरवरी 2017 को अमावस्या के दिन अवकाश होने के कारण समुदाय जागृति दिवस अगले कार्य दिवस 27 फरवरी को आयोजित किया जाएगा।

आवश्यक सूचनाएँ

1. 'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा- नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ। कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अतः अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है। कतिपय रचनाकार अपने एकाधिक बैंक खाता लिखकर भिजवा देते हैं और उक्त खाते का उपयोग समय-समय पर नहीं करने के कारण वह बंद भी हो चुका होता है। परिणामस्वरूप उक्त मानदेय खाते में जमा नहीं हो पाता। जिसकी शिकायत प्राप्त होती है। किसी रचनाकार के एकाधिक खाते हैं तो रचनाकार अपने SBBJ बैंक खाते को प्राथमिकता देकर अद्यतन व्यक्तिगत जानकारी उपर्युक्तानुसार प्रत्येक रचना के साथ अलग-अलग संलग्न करें।
2. व्यक्तिगत रूप से पत्रिका मंगवाने वाले ग्राहक पत्राचार का पूर्ण पता (यथा ग्राहक संख्या/ग्राहक का नाम/पिता का नाम/मकान नं. गली/मोहल्ला/पता/ग्राम/पोस्ट/ग्राम पंचायत/पंचायत समिति/तहसील/वाया/ जिला/पिनकोड) का उल्लेख करते हुए तथा जिन रामावि/राउमावि/राबामावि/राबाउमावि. में पिनकोड के अभाव/अपूर्ण पते के कारण पत्रिका नहीं पहुँच पाती है वे तत्काल विद्यालय का पत्राचार का पूर्ण पता (यथा विद्यालय का नाम/ग्राम/ पोस्ट/ग्राम पंचायत/पंचायत समिति/तहसील/वाया/जिला/पिनकोड) ग्राहक/संस्था प्रधान स्वयं 'वरिष्ठ संपादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर' को पोस्ट कार्ड पर लिखकर भिजवाएँ, ताकि पत्रिका की पहुँच को सुनिश्चित किया जा सके।

-वरिष्ठ संपादक

नव वर्ष-नव संकल्प

अरुण यह मधुमय देश हमारा

❒ ओमप्रकाश सारस्वत

नव वर्ष 2017 का आगाज हो चुका है। शरद ऋतु शीघ्र ही बासन्ती बयार में बदलने को है। नए संकल्पों के साथ नूतन वर्ष की अगवानी हमने की है। नूतन वर्ष के सुखमय एवं कल्याणकारी सिद्ध होने के लिए सर्वत्र शुभकामनाएँ की जा रही हैं। वे सब सफलीभूत हों, इसके लिए लक्ष्य निर्धारित कर मनोयोगपूर्वक परिश्रम करना आवश्यक है। उद्यम करने से ही सिद्धि प्राप्त होती है, केवल मनोरथ से नहीं। मानव असंख्य एवं अनन्त सम्भावनाओं का पुंज है और हमें मानव बनने का सौभाग्य परमात्मा ने दिया है। दसों दिशाओं और तीनों लोकों में व्याप्त भव्य संसाधनों के साथ डील करने का सामर्थ्य केवल मानव में है।

भारत देवों की धरती है। देव होने का गूढ़ आशय चरित्र में नैतिकता, संस्कार एवं सदाशयता से है। ये गुण भारत-संतति के व्यक्तित्व के आभूषण हैं, जहाँ ज्ञान-धन एवं संसाधन-धन पाकर व्यक्ति से अतिरिक्त विनम्र बनने की अपेक्षा की जाती है-**विद्या ददाति विनयम्।** धन एवं संसाधनों का अर्जन (To Earn) पुरुषार्थ का परिचायक है, मगर हमारे यहाँ अर्जन से महतर जनहित के कल्याणकारी कार्यो में उनके विसर्जन (To Donate) को माना जाता है। मधुमय देश भारत की वास्तविक पहचान स्वहित से परे रहकर परहित एवं पर मंगलभाव के साथ परसेवा करने वाले देश के रूप में रही है। सद्गुणों को धारण करना यहाँ धर्म कहा जाता है, पीड़ित के आँसू पोंछना और भूखे को भोजन कराना कर्त्तव्य कहा जाता है। ये संस्कार नवजात शिशु का पालन पोषण करते समय माँ अपने दूध के साथ उसके खून में स्थापित करती है। सरलता, सादगी तथा उच्च विचार भारतीय कहलाने वाले व्यक्ति में सहज ही में दिखाई देते हैं। भोजन यहाँ स्वाद के लिए नहीं प्रत्युत: शरीर रक्षा के लिए परमात्मा का प्रसाद मानकर ग्रहण किया जाता है। भारतीय और भारतवंशी होना एक उज्ज्वल परम्परा का नाम है। भारतवंशी यदि विश्व के किसी भी देश भाग में है तो भी वह अपनी अनमोल विरासत एवं परम्पराओं का पालन करता दिखाई देगा। दूसरों को सम्बलन, संरक्षण एवं सहारा देने का भाव भारत की बहुश्रुत थाती रही है। साहित्य मनीषि जयशंकर प्रसाद के हृदय से निकले ये शब्द पुष्प हमें हमारे गौरव एवं विश्व मंडल में हमारे विशिष्ट स्थान का भान कराते हैं:-

अरुण यह मधुमय देश हमारा,
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को,
मिलता एक सहारा।
अरुण यह मधुमय देश हमारा....

अपने राष्ट्र, अपनी जन्मभूमि, अपनी कर्मभूमि और अपनी वंश-परम्परा के उज्ज्वल पक्ष पर गर्वानुभूति होनी चाहिए। इनकी उज्ज्वली विरासत एवं परम्परा को हृदय में न केवल संजोकर उसके प्रति आदर भाव ही हो अपितु उनमें वृद्धि करने का कर्तव्यबोध भी होना चाहिए। जीविकोपार्जन के लिए जो कार्य हमें मिला है, उसके प्रति श्रद्धा एवं सम्मान भाव रखते हुए अधिकाधिक जनहित की मंगल भावना मन में रखकर कर्त्तव्यपथ पर चलते रहना चाहिए। याद रखिए कि व्यक्ति महज दृश्यवान है, बाकी काम तो व्यवस्था एवं प्रक्रिया करती है। यह अभिमान भूल से भी मन में नहीं आना चाहिए कि 'यह मैं कर रहा हूँ अथवा यह मेरे द्वारा ही किया जा सकता है।' आपको तो बस यह सुखानुभूति होनी चाहिए कि परमात्मा की कृपा से आज जो अच्छा हो रहा है, उसके श्रेयाधिकारी व्यक्तियों में आपकी भी कोई भूमिका है। आप ऐसे संस्कार सम्पूर्ण प्रक्रिया एवं व्यवस्था में डाल दीजिए कि जब आप नहीं भी हो तो आपके संस्कारों के अनुरूप अच्छा काम होता रहे। आपका काम, 'आज' में भौतिक रूप से जो करना है, उससे भी अधिक 'कल' के लिए एक आदर्श व्यवस्था निर्मित कर भावी संतति के हाथों में सौंपने का है। व्यक्ति आते और जाते रहते हैं लेकिन व्यवस्थाएँ एवं संस्कार चिर स्थाई रहते हैं। ऐसा बोध हमारे भीतर में होना चाहिए। और हाँ, इसके उपरान्त भी ईश्वर इच्छा को

अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँचअनजान क्षितिज को,
मिलता एक सहारा।
अरुण यह मधुमय देश हमारा....

सरस तामरस गर्भ विभा पर,
नाच रही तरुशिखा मनोहर।
छिटका खग जिस ओर मुँह किए,
समझ नीड़ निज प्यारा।।
अरुण यह मधुमय देश हमारा....

लघु सुरधुन से पँख पसारे,
शीतल मलय समीर सहारे।
उड़ते खग जिस ओर मुंह किए,
समझ नीड़ निज प्यारा।।
अरुण यह मधुमय देश हमारा....

बरसाती आँखों के बादल,
बनते जहाँ भरे करुणा जल।
लहरें टकराती अनन्त की,
पाकर जहाँ किनारा।।
अरुण यह मधुमय देश हमारा....

हेम कुम्भ ले उषा सवेरे,
भरती ढुलकाती सुख मेरे।
मदिर ऊँघते रहते जब,
जग कर रजनी भर तारा।।
अरुण यह मधुमय देश हमारा....

अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँचअनजान क्षितिज को,
मिलता एक सहारा।
अरुण यह मधुमय देश हमारा....

❒ जय शंकर प्रसाद

सर्वोपरी मानना चाहिए। ऐसी मनोवृति वाले व्यक्ति अपने काम में न केवल सफल होते हैं अपितु सफलता में किंचित कमी रहने और यहाँ तक कि असफल हो जाने पर भी मलीन नहीं होते प्रत्युत: इसे ईश इच्छा समझ कर सब सहन कर जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों का मनोबल उच्च कोटि का होता है। ऐसी साधना हमें करनी चाहिए। ऐसी साधना पर सिद्धि प्राप्त किए अनेक व्यक्तियों के दृष्टांत हमें देखने को मिलते हैं।

भारतीय मूल जीवन शैली, सामाजिक संस्कार एवं संस्कृति की ताशीर यही है। तभी तो यजुर्वेद (7/14) में भारतीय संस्कृति को संसार में सर्वश्रेष्ठ संस्कृति कहा गया है। **(सा प्रथमा संस्कृति विश्वधारा)** भारतीय संस्कृति अद्‌भुत एवं अनुकरणीय है जिसे वरण करने वाला कभी दु:खी नहीं रह सकता। **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** का घोष भारतीय संस्कृति की मूल आत्मा है और यही कारण है कि भारतीय विचारधारा के जन सदा सुखी, सदाबहार रहते हैं। ईश्वरीय व्यवस्था का पक्का प्रमाण है कि दूसरों की रोटी के इंतजाम में प्रवृत्त व्यक्ति स्वयं कभी भूखा नहीं रह सकता क्योंकि उसकी चिन्ता स्वयं जगत पिता करते हैं। यह हमारी संस्कृति का केन्द्रीय भाव है। प्रख्यात साहित्य सृजक डॉ. महादेवी वर्मा के ये विचार कितने प्रेरणादायी हैं, ''हमारी संस्कृति प्रवाहिनी ऊपर से सम और शांत है परन्तु उसके भीतर में अनेकानेक ज्वालामुखियाँ जली बुझी हैं, असंख्य तूफान जागे-सोए हैं। दर्शन, धर्म, साहित्य, नीति, कर्म आदि सभी क्षेत्रों में विद्रोहियों की स्थिति रही है, लेकिन तोड़ने वाले हथोड़े को मूर्तिकार की छेनी बना लेने की विशेषता हमारी अपनी है। इसी कारण विद्रोह ने हमारी जीवन-प्रतिभा को पूर्णता दी है, उसे विकलांग नहीं बनने दिया।''

ज्ञान और काल दोनों अनन्त है। भारतीय संस्कृति में ज्ञान को सर्वाधिक पवित्र एवं बलशाली **(न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते-गीता 4/38)** और काल को सर्वोच्च निर्णायक माना गया है। समय आने पर सब निर्णीत हो जाता है तथा दुनिया भर का दन्द-फन्द करने वाला हाथ मलता हुआ दिखाई देता है। इसलिए हमारी संस्कृति निर्मल हृदय एवं विमल बुद्धि की नींव पर जीवन का आशियाना बनाने की सलाह देती है। हम भौतिक धन से बड़ा संस्कार रूपी धन को मानते हैं। भौतिक साधन सुविधाएँ ऊपरी और दिखावटी चकाचौंध दिखा सकती है लेकिन वास्तविक सुख और प्रसन्नता तो उत्तम संस्कारों में ही निहित है। श्री पाद दामोदर सातवलेकर ने कहा है, ''भारतीय संस्कृति का आशय प्रकाश मार्ग से अनुष्ठान करने से प्राप्त होने वाली संस्कार सम्पन्नता है। भारत (भा+रत) शब्द में 'भा' अर्थात् प्रकाश में, प्रकाश मार्ग में 'रत' अर्थात् दत्तचित होकर चलने/अनुष्ठान करने से जो संस्कार सम्पन्नता व्यक्ति में बढ़ती है, उसी का नाम भारतीय संस्कृति है।'' कितनी गहरी और अद्‌भुत बात इस विचार में छिपी हुई है। यह भारत की असल ताकत है जिसके कारण असंख्य झंझावतों, टक्करों एंव कोशिशों के बावजूद हम आज भी प्रवाहमान है-**कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, वर्षो रहा है दुश्मन दौरे जहाँ हमारा!** भारत महिमा में ऐसी सैकड़ों उपमाएँ प्राचीन काल में ऋषि मुनियों से लेकर आधुनिक काल के तत्ववेताओं के द्वारा दी जाती रहकर भारत माता का मान बढ़ाया है।

भारतीय संस्कृति अपरिग्रह व त्याग की समर्थक है। 'मन लाग्यो मेरो यार फकीरी में' चिन्तन की गहराई तक कोई पहुँच ही नहीं सकता। ऐसी मस्ती और यारानी के किस्से विदेशियों को दाँतों तले अंगुली दबाने को मजबूर कर देते हैं। यहाँ धन सम्पदा को व्यक्ति का दुश्मन माना गया है। वह तो स्वयं को प्राप्त धन एवं सम्पदा का रखवाला एवं वितरक (गाँधीजी का ट्रस्टीशीप सिद्धान्त) मानता है और सम्पति की सम्भाल का दायित्व निभाता जब और जहाँ उचित अवसर प्राप्त करता है, उसका विसर्जन कर देता है। यहाँ अर्थ, धर्म और पुरुषार्थ को जीवन प्रणाली की आधारशिला माना गया है और इनमें भी पुरुषार्थ को सर्वोपरी स्थान पर रखा गया है। चाहे कितनी भी सम्पन्नता क्यों न प्राप्त हो गई हो भारतीय संस्कृति निरन्तर पुरुषार्थ करते हुए अर्जन का आह्वान करती है ताकि वह अपने कमाए से जीवन निर्वाह करें तथा अर्जन से विसर्जन कर सामाजिक ऋण से स्वयं को मुक्त करने का प्रयास कर सके।

नए वर्ष 2017 का शुभागमन हो चुका है। आगत की स्वर लहरियों से मन मुदित हो रहा है। यह 365 दिन की यात्रा अभी भविष्य के गर्भ में है। क्या होगा, कितना कब और कैसा होगा ? यह सब सम्भावनाओं के पेटे है। Well begun in half done एवं आप भला तो जग भला सिद्धान्त का अनुशरण करते हुए पूर्ण निष्ठा, प्रतिबद्धता, समर्पण, सदाशयता एवं सर्वे भवन्तु सुखिन: की मंगल भावना मन में रखते हुए कार्य करने वालों के खाते में यश एवं प्रतिष्ठा मिलती ही है, इसमें कोई शक नहीं है।

शिक्षा विभाग तो मातृ विभाग है, सब विभागों का विभाग है। शिक्षा सब योग्यताओं में सिरेपूज है। शिक्षाधन से बड़ा कोई धन नहीं होता है। जिसने ज्ञान धन पा लिया, उसे और धनों की जरूरत शेष नहीं रह जाती है। वह सुखी होता है क्योंकि ज्ञान चक्षु सन्तोष एवं समाधान की राह दिखाते है और सन्तोष व परसुखभाव किसी भी अभाव को मिटा सकते हैं।

शिक्षा विभाग और शिक्षकों को समाज में ऐसा वातावरण बनाकर ज्ञान एवं कौशल से परिपूर्ण व्यवस्था का निर्माण करने में हरावल भूमिका निभानी चाहिए। नूतन वर्ष 2017 शिक्षा विभाग एवं उसके माध्यम से राष्ट्र, प्रान्त एवं समाज में उत्तम संस्कारों की निर्मिति तथा अपनी अनमोल विरासत को सम्भालने एवं संवारने के उदात्त भाव वर्तमान पीढ़ी के दिलों में भरने में समर्थ सिद्ध हो, ये ही मंगलकामनाएँ एवं प्रयास किए जाने चाहिए।

आइए, हम अपने प्यारे देश भारतवर्ष के महान इतिहास, यहाँ के रण बांकुरों के शौर्य, सन्तों के तप, मनीषियों के ज्ञान, बड़ों के संरक्षण व छोटों के सम्मान भाव, बच्चों की नादानी सबको स्मरण एवं साझा करते हुए महादेवी जी के इन शब्दों पर गौर करें :-

आ गए तुम ?
द्वार खुला है, अन्दर आओ..!
पर तनिक ठहरो
ड्योढ़ि पर पड़े पायदान पर,
अपना अहम् झाड़ आना....!

आइए, नव वर्ष शुभारम्भ अवसर पर हम अपना अहम भुलाकर सच्चे भाव से, उन्मुक्त हृदय से, प्रतिबद्धता, परिश्रम एवं समर्पण के साथ देश हित में कदम बढ़ाने का संकल्प लेते हुए समवेत स्वर में गुनगुनाएँ-'अरुण यह मधुमय देश हमारा।' जय हिन्द।

उप निदेशक (माध्यमिक)
बीकानेर मंडल, बीकानेर
मो. 9414060038

आलेख

स्मार्ट बजट प्रोजेक्टर

❒ दीपक जोशी

वर्तमान युग में विज्ञान द्वारा नवीन तकनीकी के विकास से मानव जीवन में कई क्राँतिकारी बदलाव आए हैं। साथ ही मानव जीवन पहले से बहुत अधिक सरल व सहज बना है। परन्तु नवीन तकनीकी के विकास के साथ-साथ उसका सरलीकरण भी उतना ही आवश्यक है, ताकि आमजन को वह सहजता से उपलब्ध हो सके। शिक्षा के क्षेत्र में भी नवीन वैज्ञानिक तकनीकी के निरन्तर प्रयोग से क्राँतिकारी परिवर्तन एवं परिणाम सामने आए हैं। विज्ञान से शिक्षा क्षेत्र में कई शैक्षिक नवाचारों को जन्म दिया है तथा जहाँ-जहाँ शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक नवाचारों का सफल प्रयोग हुआ है वहाँ परिणाम भी उत्साहजनक आए हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में मेरा छोटा सा प्रयोग, जिसे मैं आपके आगे प्रस्तुत कर रहा हूँ।

जहाँ शिक्षा के व्यवसायीकरण के कारण कई निजी संस्थानों में स्मार्ट क्लासेज के नाम पर हजारों रुपये की आमदनी की जाती है। वहीं अगर हम चाहें तो थोड़ी सी मेहनत व खर्च से ही अपने सरकारी विद्यालयों में भी 'स्मार्ट बजट प्रोजेक्टर' के माध्यम से स्मार्ट क्लासेज प्रारंभ कर, शैक्षिक नवाचार के द्वारा बच्चों में सरल, सहज व रोचक शिक्षण कार्य प्रदान कर सकते हैं।

सामग्री:- मेग्निफाईंग ग्लास (उत्तल लैंस)- 90-100 मि.मी. व्यास तथा 5×-10× शक्ति का (पावर), लकड़ी की पतली बोर्ड शीट, पतली चीप, कीलें, फेविकोल, ब्लेक शेलोटेप, हथौड़ी, आरी, फेवीक्विक, ब्लेक पेन्ट, ब्रुश आदि ब्राइट व्हाइट स्क्रीन के लिए सफेद पोस्टर या सफेद दीवार, ओडियो आऊटपुट के लिए ब्लूटूथ स्पीकर या मोबाइल फोन स्पीकर, स्पीकर कनेक्टिंग केबल लीड स्मार्ट फोन।

बनाने की विधि:-

- सर्वप्रथम लकड़ी की पतली बोर्ड शीटों की सहायता से एक 16 सेमी. ऊँचा, 18-20 सेमी. चौड़ा तथा 40 सेमी. लंबा बक्शा तैयार कीजिए।

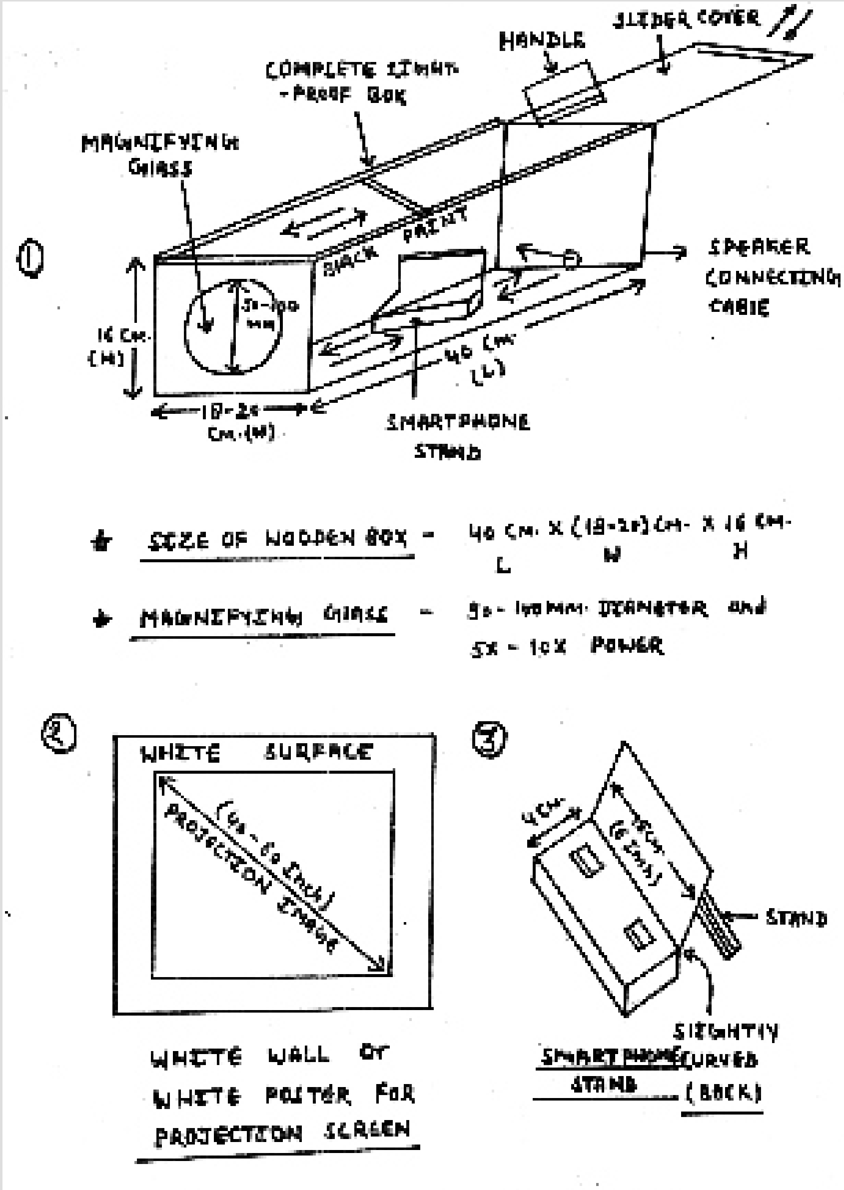

★ SMART BUDGET PROJECTOR ★

- अब बक्शे के फ्रंट वाली बोर्ड शीट के केन्द्र भाग पर मैग्निफाईंग लैंस की माप का एक गोलाकार बड़ा छिद्र (लगभग 90-100 mm.) कीजिए ताकि इसमें लैंस पूरी तरह से फिट हो जाए। अब इस फ्रंट बोर्ड सीट को बक्शे से जोड़ दीजिए।
- फिर लकड़ी की पतली चीप तथा बोर्ड शीट की सहायता से बक्शे के ऊपर का

स्लाइडर ढक्कन तैयार कीजिए।

- लकड़ी के बक्शे के सम्पूर्ण भीतरी भाग पर ब्लेक कलर का पेन्ट कीजिए। ताकि बक्शे के भीतर प्रकाश की ब्राइटनेस अधिक हो तथा रिफलेक्शन कम से कम हो।
- अब स्मार्ट फोन के लिए 15 सेमी. चौड़ा मोबाइल स्टैण्ड तैयार कीजिए, जिसमें बहुत हल्का सा पीछे की ओर कर्व (कोण) हो। मोबाइल स्टैण्ड को भी ब्लैक कलर कर लीजिए।
- बक्शे के पीछे की ओर स्पीकर कनेक्टिंग केबल के लिए एक छोटा सा छिद्र कर दीजिए।
- अब अंत में मैग्निफाइंग लैंस को बक्शे की फ्रंट बोर्ड शीट के छेद में फिट कर दीजिए।
- लकड़ी के बक्शे तथा लैंस के मध्य केन्द्र को ध्यान रखें। बक्शे के फर्श पर तथा मोबाइल स्टैण्ड के मध्य केन्द्र पर व्हाइट लाईन खींचिए। तो आपका स्मार्ट प्रोजेक्टर तैयार हुआ।
- आप इच्छानुसार बक्शे के निर्माण के लिए मजबूत गत्तों का उपयोग भी कर सकते हैं।

उपयोग की विधिः-

- सर्वप्रथम अपने स्मार्टफोन में गूगल प्ले स्टोर की मदद से निम्नलिखित एप्लीकेशन डाउनलोड कीजिए।

1. **Mx प्लेयर-** स्क्रीन रोटेशन को बंद करने के लिए Mx प्लेयर से किसी भी फोर्मेट की विडियो फाइल को प्ले कर सकते है।
2. Flip-वीडियो को फ्लीप करने के लिए ताकि शब्द उल्टे न दिखाई दें।
3. Lux lite-स्मार्ट फोन की ब्राइटनेस को बढ़ाने के लिए।
4. Snap Tube-इस एप्लीकेशन के द्वारा आप Youtube के किसी भी Educational Video को डाउनलोड कर सकते है। इस एप्लीकेशन को किसी भी इन्टरनेट ब्राउजर से डाऊनलोड किया जा सकता है।

- सबसे पहले अपने स्मार्टफोन की ब्राइटनेस को Maximum करिए। Flip एप्लीकेशन की सहायता से किसी भी शैक्षिक वीडियो को फ्लीप कर लीजिए। अब इसे Mx Player में ओपन करके, स्क्रीन रोटेशन को Mx Player की setting में जाकर ऑफ करके स्मार्ट फोन को उलटा करके प्रोजेक्टर के अंदर मोबाइल स्टैंड पर रख दीजिए। स्मार्टफोन स्क्रीन प्रोजेक्टर लेंस के ठीक सामने स्थित रहे।
- अब मोबाईल स्टैण्ड को प्रोजेक्टर के अंदर आवश्यकतानुसार आगे पीछे खिसका कर सामने की सफेद लाईन की दूरी बढ़ा के बनने वाली इमेज के आकार को बढ़ाया जा सकता है। सामान्यतः 40 ईंच से 60 ईंच की ईमेज को स्पष्ट देखा जा सकता है।
- अब ऊपर के स्लाईडर ढक्कन को बंद करके प्रोजेक्टर को पूर्णतया प्रकाशरोधी कर दीजिए।
- ऑडियो आऊटपुट के लिए इच्छानुसार ब्लूटूथ स्पीकर या स्मार्ट फोन स्पीकर का उपयोग किया जा सकता है।

सावधानियाँः-

- मैग्निफाईंग लैंस या ग्लास अच्छी गुणवत्ता का हो।
- प्रोजेक्टर के भीतरी भाग को पूरी तरह से ब्लैक पेन्ट करना चाहिए व प्रोजेक्टर से लैंस के अतिरिक्त अन्य किसी भी भाग से प्रकाश बाहर न निकल सके। अर्थात बक्शा पूर्णतः प्रकाशरोधी होना चाहिए।
- मेग्निफाईंग लैंस तथा स्मार्टफोन दोनों बराबर लेवल पर रहने चाहिए तथा प्रोजेक्टर की केन्द्रीय व्हाईट लाइन एवं मोबाईल स्टैण्ड की केन्द्रीय व्हाईट लाईन लेवल में रहनी चाहिए। स्मार्टफोन लैंस के लेवल से ऊपर या नीचे ना रहे तथा तिरछा भी न रहे।
- स्मार्टफोन की स्क्रीन ब्राइटनेस जितनी अधिक होगी प्रोजेक्शन ईमेज उतनी ही स्पष्ट दिखाई देगी।
- अच्छी गुणवत्ता की प्रोजेक्शन ईमेज के लिए वीडियो क्लिप की गुणवत्ता व ब्राइटनेस भी अच्छी हो।
- कमरे में अंधेरा होना अति आवश्यक है।
- वीडियो को फ्लीप करना तथा स्क्रीन रोटेशन को ऑफ करना अति आवश्यक है, वरना ईमेज उल्टी बनेगी।
- आवश्यकता पड़ने पर लैंस को थोड़ा सा अपनी जगह पर घुमाके प्रोजेक्शन ईमेज को साफ किया जा सकता है।
- मुझे अपने प्रयोगों में 100 मि.मी. व्यास तथा 5×Power मैग्निफाईंग ग्लास से बेहतरीन परिणाम मिले।

इस प्रकार से आप 700-800 रुपये के खर्च में एक सस्ता, सुंदर, टिकाऊ मल्टीमीडिया 'स्मार्ट बजट प्रोजेक्टर' बना सकते हैं, जबकि बाजार में 10,000/- से लेकर 1,00,000/- कीमत तक के मल्टीमीडिया प्रोजेक्टर मिल पाते हैं। मैग्निफाईंग ग्लास को आप ऑनलाइन या ऑफलाइन लगभग 300/- से 500/- तक खरीद सकते हैं।

इस प्रयोग को सफल बनाने हेतु मैं अपने प्रिय शिष्य श्री विकास भाटी (छात्र-रा.मा.वि., श्रीरामसर, बीकानेर कक्षा 10) के अमूल्य सहयोग का ऋणी हूँ।

व.अ. विज्ञान
रा.मा.वि. श्रीरामसर, बीकानेर

जीवन चन्दन का वन

वन में भटके हुए राजा को एक वनवासी ने अपने आतिथ्य के द्वारा भूख-प्यास से मुक्ति दिलायी तो दूसरे दिन चलते समय राजा ने प्रसन्न होकर उसे एक चन्दन का बाग उपहार में दे दिया। वनवासी उस चन्दन के बाग में रहने लगा, किन्तु चन्दन के महत्त्व को न जानने के कारण उन वृक्षों की लकड़ी से कोयला बनाकर नगर में बेचने लगा। धीरे-धीरे सभी वृक्ष समाप्त हो गए। एक अन्तिम पेड़ बचा। वर्षा होने के कारण कोयला न बन सका तो उसने लकड़ी बेचने का निश्चय किया। लकड़ी का गट्ठा बनाकर बाजार में पहुँचा तो उसकी सुगंध से प्रभावित होकर लोगों ने उसका भारी मूल्य चुकाया। आश्चर्य चकित वनवासी ने इसका कारण पूछा तो लोगों ने कहा "अरे यह चन्दन का काठ है। बहुत मूल्यवान है।" वनवासी अपनी नासमझी पर पश्चाताप करने लगा। तब उसे सांत्वना देते हुए एक विचारशील व्यक्ति ने कहा-"मित्र पछताओ मत। जीवन का एक-एक क्षण बहुमूल्य है। बहुत गंवाकर अन्त में संभल जाना भी बुद्धिमानी माना जाता है।"

-संकलन : **शैलेन्द्र कुमार शर्मा,** व्याख्याता
रा.उ.मा.वि. गुड़ाचन्द्रजी (करौली) **मो. 9460642842**

चिन्तन

बदलती जीवन शैली व हमारा स्वास्थ्य

❒ सुभाष सोनगरा

विज्ञान ने हमें सुविधाएँ प्रदान की है पर अन्धानुकरण व दिखावे की ललक के कारण बदलती जीवन शैली ने अनेक रोगों, कुंठा व तनाव को बढ़ाया है। अब सबको अनुभव होने लगा है कि स्वास्थ्य के नियमों का पालन करने से स्वस्थ रहा जा सकता है। इसका प्रयास बाल्यकाल से ही हो तो अच्छा है अन्यथा मानव शरीर की जैविक घड़ी को बदलना मुश्किल कार्य है।

स्वास्थ्य चेतना के द्वारा बालकों को न केवल 'पहला सुख निरोगी काया' के बारे में समझाया जा सकता है अपितु स्वास्थ्य के शारीरिक एवं मानसिक पहलुओं को स्वस्थ रखने की आज की आवश्यकता एवं भविष्य के सबल एवं श्रेष्ठ नागरिक के गुणों को भी विकसित किया जा सकता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार स्वास्थ्य सम्पूर्ण शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक स्वस्थता की स्थिति है। जबकि हम केवल अपंगता या रोग की उपस्थिति नहीं होने से स्वास्थ्य ठीक होना मान लेते है। स्वस्थ रहने का अर्थ यह है कि हमारा शरीर चुस्त दूरस्त तो रहे ही साथ में मन की शांति से परिपूर्ण शरीर समाज में अपने आपको सहजता से कार्य करने के योग्य भी हो।

स्वास्थ्य शिक्षा एक विज्ञान है जो कारण विशेष की पहचान कर लोगों को स्वास्थ्य संबंधी आदतों और व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करता है। साथ ही आवश्यक ज्ञान-विज्ञान से उन्हें अवगत कराने की प्रक्रिया समझा सके ताकि बालक/बालिकाओं को पूर्ण स्वास्थ्य की प्राप्ति हो सके। इसके लिए सर्वप्रथम हमें जन हानिकारक पहलुओं पर चर्चा करनी है जिसके कारण हम आदतन होकर स्वास्थ्य खराब कर रहे हैं।

सूर्योदय के बाद उठना एवं देर रात तक जागना:- मनुष्य शरीर की प्रकृति के अनुसार अधिकतम 6 घण्टे की नींद स्वस्थ शरीर को पर्याप्त होती है जो कि रात्रि के समय गहरी व पूरी एक साथ ली जाए तो शरीर एवं मन के लिए लाभकारी होती है। सम्पूर्ण शरीर की माँसपेशियों को आराम मिलने से शरीर पुनः क्षमतावान व ऊर्जावान हो जाता है।

अधिक व बार-बार खाना:- इस आदत से अनेक शारीरिक रोगों का जन्म हो जाता है यथा अपच, अल्सर, उल्टी, दस्त तथा पाचन तंत्र कमजोर हो जाता है। आहार विज्ञान के अनुसार प्रातःकाल राजकुमारों जैसा आहार, दोपहर में साधारण व्यक्ति भोजन एवं रात्रि में भिखारी जैसा खान-पान (मिले तो ठीक न मिले तो भी ठीक) होना चाहिए।

टी.वी. पास से लगातार देखना:- ऐसा करने से आँखें कमजोर हो जाती है। छोटी उम्र में ही चश्मा लग जाता है। टी.वी. कम से कम 10 फीट दूरी से देखना चाहिए। कुछ बालक, बालिकाएँ टी.वी. देखते-देखते भोजन करते हैं और वो भी बेड पर बैठकर। ऐसा करने से कब कितने देर तक भोजन किया व कितना खाया इसका अनुमान भी नहीं रहता है।

मोबाइल व कम्प्यूटर चलाना:- मोबाइल व कम्प्यूटर की आँखों से दूरी मात्र 1 या 2 फीट की ही दूरी रहती है। वीडियो गेम खेलते समय आँखें एकाग्रता के साथ एक तरफ ही देखती है ऐसा करने पर आँखें जल्दी कमजोर हो जाती है।

अंग्रेजी दवाइयों का अनावश्यक सेवन:- आजकल प्रत्येक घर में दवाइयों का डिब्बा या अलमारी में एक ड्रॉवर होता है, एक बार किसी भी घर के सदस्य के लिए लाई गई दवाई के हम बार-बार उसी दवाई का उपयोग अन्य घर के सदस्य के लिए भी करते रहते हैं। बिना डॉक्टरी परामर्श से दवा का सेवन अपने लिए जहर का सेवन करने जैसा होता है।

नशा:- गलत मित्रों की मंडली में रहने के कारण तम्बाकू, गुटखा आदि खाने की आदत से मुँह में छाले एवं अन्य रोगों में कैंसर होने की भी आशंका रहती है। शराब के सेवन से लीवर खराब हो जाता है। स्मरण शक्ति क्षीण होने लगती है।

इन्टरनेट का गलत उपयोग:- आजकल इन्टरनेट का बेजा इस्तेमाल होता है। गूगल पर सर्च करते समय वाट्सअप, फेसबुक चलाते समय अनचाही जानकारी जो अश्लील चित्रों एवं साहित्य के माध्यम से हमारे बाल मन को बार-बार कचोटती है। ऐसे में विषय सरलता से ऐसे विषयों के भ्रमण जाल में फँस जाता है और बार-बार विचारों में उफान आने से कुँठाएँ बढ़ने लगती है। जिनके समाधान में गलत तरीकों के उपयोग से स्वास्थ्य पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ता है।

यह सब विद्यार्थी तब तक करते रहते हैं जब तक उसे सही व उचित मार्गदर्शन नहीं मिले। उसकी लापरवाही का बड़ा कारण क्षणिक आनन्द होता है। आदत व लत के कारण वह स्वास्थ्य के प्रति जागरूक नहीं हो पाता है। जब तक विद्यार्थी वर्ग का मन व शरीर स्वास्थ्य का आदर्श प्रतिमान नहीं कर लेता तब तक न तो जीवन को प्रवाहमान बना सकेगा और ना ही जीवन की ऊँचाइयों को छूने का सपना देख सकेगा। अतः उसे सर्वप्रथम शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहने हेतु निम्न बिन्दुओं पर विचार करना पड़ेगा।

दिनचर्या:- प्रातःकाल जल्दी उठकर पढ़ना, रात को जल्दी सोना, प्रतिदिन स्नान, नाखून व दाँत की सफाई, कमरे में पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था (सामने एवं बायीं ओर) रखकर सीधे बैठकर नियमित अध्ययन।

भोजन:- फास्टफूड, कोल्ड ड्रिंक, डिब्बा बंद, अधिक तला हुआ भोजन व बासी पेय पदार्थों के सेवन से शरीर पर बुरा प्रभाव पड़ता हैं। इसलिए भोजन ताजा, शुद्ध व घर का बना हुआ ही पर्याप्त मात्रा में सेवन करना चाहिए।

ईश्वर आराधना:- प्रतिदिन निर्धारित स्थान पर एकान्त में बैठकर मन को आत्मिक

शांति देने के लिए ईश्वर की आराधना जरूरी होती है। जिससे प्रतिदिन सद्कार्यों के प्रति प्रेरणा मिलती है।

सद् साहित्यः– बौद्धिक विकास के लिए अच्छे साहित्य का पढ़ना आवश्यक होता है जिससे समाज हित एवं राष्ट्रहित के कार्यों को करने के मन में भाव जागरण होता है। महापुरुषों के जीवन से जुड़ी चारित्रिक कथाएँ और श्रेष्ठ जीवनियों का अध्ययन भी राष्ट्र में सच्चे व जागरूक नागरिक बनाने में अहम भूमिका निभाती हैं।

टी.वी. कार्यक्रमः– विभिन्न चैनलों पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों में अर्थहीन व संस्कार विहीन संदेशों की मात्रा अधिक होती है। इसलिए अपने विद्यार्थी काल में उपयोगी व आवश्यक सशील सांस्कृतिक कार्यक्रम जो आनंददायी हो तथा परिवार में बैठकर देख सके ऐसे कार्यक्रम एक निश्चित समय के लिए ही देखना चाहिए।

खेलः– विद्यार्थी खेल के नाम पर केवल वीडियो गेम खेलता है और क्रिकेट देखता है। इससे शारीरिक श्रम जैसा कोई काम नहीं होता है। खेल को मैदान में खेलने का चलन बंद हो गया है। ऐसे में बालक–बालिकाओं में आलस्य बढ़ता है और मोटापे जैसी समस्याओं से सामना करना पड़ता है।

मन की शुद्धताः– स्वयं के प्रति श्रेष्ठता का भाव रखें। हीनता व्यक्ति को कुंठित बनाती है इसलिए सभी के प्रति बुरे विचार आए ही नहीं। ऐसा विचार हमेशा मन में जाग्रत चाहिए। दूसरों के प्रति राग–द्वेष से परे केवल समभाव प्रेम ही मन में हमेशा पैदा होता रहे। तो तन के साथ मन की शुद्धता बनी रहती है। सकारात्मकता जीवन को आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

अतः शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहते हुए समाज को कर्णधार युवाओं को सम्यक प्रेम भाव मन में जाग्रत रखकर समाज परिवर्तन कर राष्ट्र के सबल व सजग नागरिक के रूप को स्वयं स्थापित करना होगा। तब ही हमारा भारत स्वस्थ भारत व समूह सजग भारत बन सकेगा।

अति. ब्लॉक प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी
सरदारशहर
मोः 9799490622

रपट

कार्यशाला

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की कार्यशाला में भाग

❒ रामावतार सबलानियां

शिक्षक पद कार्य करते हुऐ मुझे तीस वर्ष हो गए है राज्य स्तरीय व राष्ट्रीय स्तरीय कार्यशाला में भाग लेना व शैक्षिक भ्रमण के अवसर कई बार प्राप्त हो चुके हैं परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की गतिविधि कार्यशाला में भाग लेने का अवसर स्काउटिंग के माध्यम से मुझे दूसरी बार प्राप्त हुआ है। गतवर्ष 14 से 19 सितम्बर 2015 APR Work Shop For Environment Education in Scouting इस्लामाबाद पाकिस्तान में तथा इस वर्ष 19 से 23 सितम्बर 16 APR Work Shop For Environment Education in Scouting (च्योनबुरी) थाइलेण्ड में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ।

इस वर्क में मुझे भारत का प्रतिनिधित्व करने का अवसर प्राप्त हुआ। 28 जुलाई 2016 को स्काउट के इन्टर नेशनल डाइरेक्टर डॉ. अनाचाई राताकूल ने अपने पत्र द्वारा हमें इस गतिविधि में शामिल करने की स्वीकृत दी। इसमें पाँच भारतीयों को चयनित किया गया। जिसमें तीन झुंझुनूं (राजस्थान) के एवं दो केरल राज्य के स्काउट पदाधिकारी थे। राष्ट्रीय मुख्यालय नई दिल्ली ने राज्य के पदाधिकारी थे। राष्ट्रीय मुख्यालय नई दिल्ली ने राज्य मुख्यालय व राज्य मुख्यालय ने इसकी सूचना मण्डल मुख्यालय बीकानेर के द्वारा हम तक पहुंचाई। स्वीकृति एवं चयनित होने की सूचना से मैं बहुत प्रसन्न हुआ तथा साथियों ने भी खुशियाँ मनाई।

स्थानीय संघ नवलगढ़ के सचिव अर्जुन सिंह सांखणिया झुंझुनूं के सचिव राधेश्याम खारिया और मैं रामावतार सबलानियां लीडर ट्रेनर राजस्थान से एवं रामहरि रोवर लीडर व आसिफ रोवर केरल राज्य से भारतीय दल में चयनित हुए।

अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर की स्वीकृति के बाद विभागीय कार्यवाही एवं औपचारिकताएँ जो राजकीय सेवा में रहते करनी होती है शुरू हुई। स्थानीय शिक्षा अधिकारियों एवं स्काउट सी.ओ. ने हमारा पूरा सहयोग किया। समस्त औपचारिकता पूर्ण होने एवं वीजा टिकट बनने के बाद हम निर्देशानुसार पूर्ण तैयारी के साथ 17.9.2016 को भारत स्काउट गाइड राष्ट्रीय मुख्यालय इन्द्रप्रस्थ नई दिल्ली पहुँचे। भारत के निदेशक एस. सुकुमारा व उपनिदेशक अमर क्षत्रिय ने भारतीय ध्वज व प्रतीक चिह्न देकर अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधि में भाग लेने हेतु थाइलेण्ड के लिए विदा किया।

इंडियन एयर लाईन्स का विमान जो नई दिल्ली से दिनांक 18.9.2016 को 13.50 बजे रवाना हुआ और हमें लगभग 18 बजे बैंकॉक पहुंचाया। थाईलेण्ड की घड़ी का समय भारत से 1 घण्टा 30 मिनट पहले है। उस समय वहाँ के 16.30 बजा था। हमने बैंकॉक हवाई अड्डे पर होने वाली औपचारिकताएँ पूरी करके हवाई अड्डे से बाहर की और आए। बाहर थाइलेण्ड स्काउट गाइड के निदेशक रथापुम एवं उनके साथियों ने हमारी अगवानी की और अपनी गाड़ी से स्काउट गाइड राष्ट्रीय मुख्यालय च्योनबुरी ले गए।

च्योनबुरी बैकॉक से 300 कि.मी. दूर था। रात 11 बजे हम शिविर स्थल पर पहुँचे और शिविर नियमानुसार हट अलोट की गई। एक हट में एक पेट्रोल (टोली) जिसकी संख्या आठ होती है सभी सदस्य अलग–अलग देशों के होते है। हट्स वातानुकूलित एवं सुविधा पूर्ण भी।

APR Work Shop जो दिनांक 19–23 सितम्बर 2016 का है, का शुभारम्भ 19.9.2016 को थाइलेण्ड के मुख्य अधिकारियों व अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय के पदाधिकारियों की उपस्थिति में हुआ।

कार्यशाला का समय प्रातः 9 से सायं 6 बजे का था बीच में नाश्ता व भोजन का विश्राम था। रात 8 से 10 तक रात्रिकालीन सत्र सांस्कृतिक कार्यक्रम था। कार्यशाला में– सिंगापुर, आस्ट्रेलिया, मलेशिया, श्रीलंका, बांग्लादेश, मालदीप, फिलीफिन्स, पाकिस्तान, डेनमार्क, नेपाल, भारत व थाईलेण्ड के चयनित

32 सम्भागियों ने भाग लिया।

कार्यशाला का उद्देश्य APR Work Shop For Environment Education in Scouting?

1. पर्यावरण संतुलन हेतु राष्ट्रों द्वारा प्रयास – पर्यावरण संतुलन हेतु राष्ट्रों द्वारा कौन-कौन से प्रयास किए जा रहे है कार्यशाला में विस्तारपूर्वक सभी द्वारा अपने-अपने देश के प्रयास बताना।

2. पर्यावरण हेतु उस राष्ट्र में स्काउटिंग का योगदान – विश्व के अधिकतर देशों में स्काउटिंग आन्दोलन चल रहा है जो पर्यावरण को स्वच्छ रखने में अपनी परियोजनाओं का विस्तारपूर्वक कार्यशाला में साझा करेगें।

3. विश्व बन्धुत्व भाव विकसित करना – विश्व में स्काउटिंग आन्दोलन में एक ही नियम, प्रतिज्ञा तथा उद्देश्य है जिसमें विश्व से आने वाले स्काउटिंग के पदाधिकारी मिलते हैं भाईचारे का विकास होता है। दुनिया के सभी स्काउटर, गाइडर अपनी जेब पर विश्व बन्धुत्व का बैज लगाते हैं तथा पूरी दुनिया को अपना परिवार समझते हैं।

4. पर्यावरण संरक्षण पर योगदान – सभी राष्ट्रों के स्काउटर अपने-अपने देश में पर्यावरण संरक्षण में क्या-क्या प्रयास किया जा रहा है तथा प्रदूषण खत्म करने कौन-कौनसी परियोजनाएँ चल रही है, तथा एक दूसरे देशों के प्रतिनिधियों में जानकारी का आदान-प्रदान करना। वन सम्पदा, जल सम्पदा, का संरक्षण ओजोन पर असर डालने वाले कारकों को सीमित करना, सौर व पवन ऊर्जा का उपयोग बढ़ाना आदि विषयों पर एक दूसरे देशों के उपायों पर जानकारी का आदान-प्रदान करना।

हमने भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों को कार्यशाला में बताया। सरकार की योजनाएँ-स्वच्छ भारत, स्वच्छ जल, वृक्षारोपण, जल संरक्षण, वन संरक्षण, सौर ऊर्जा के बारे में प्रयासों की जानकारी दी। इस वर्कशॉप में हम दिनांक 18 से 27 सितम्बर 16 तक थाइलेण्ड में रहे तथा वहाँ के बारे जो विशेषताएँ नजर आई वो इस प्रकार है

- राजतंत्र में अच्छा विकास तथा वहाँ के नागरिकों की सम्पन्नता यह दर्शा रही थी कि वे बेहद सुखी व वैभवशाली है।
- जलवायु वहाँ की चारों ओर समुद्र होने के कारण गर्म है। वहाँ अक्सर रात के समय वर्षा होती है।
- वहाँ की सड़कें-वाहन भवन पार्क आदि को देखने पर लगा कि वहाँ शिल्पकारी, पर्यावरण प्रेम, वैभवता व सम्पन्नता है।
- किसी तरह का शोरगुल शहर में भी नहीं था।
- वहाँ की सरकार स्वास्थ्य पर भी अधिक ध्यान देती है। मुख्य चौराहों पर जिम लगा हुआ है जिनसें समयानुसार स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करते हैं।
- लिंग भेद देखने को नहीं मिला। एयरपोर्ट, ऑफिस दुकानें हमने देखी जहाँ ज्यादातर महिलाएँ सेवा दे रही थी।
- तकनीकी विकास देखा जाए तो वहाँ खेतों में मशीनों से काम होता है। जन शक्ति वहाँ नजर नहीं आ रही थी। घास काटने की भी बड़ी मशीन है।
- भोजन में वहाँ चावल, ब्रेड, हरी सब्जियाँ, मांस, अण्डा, मुर्गा, मछली व समुद्री जीव ही मुख्य है। वहाँ सब्जियों में तेल मिर्च मसाला नहीं डालकर केवल उबाल के रखते है। आलू, गेहूं, मेदा, दाल वहाँ देखने को नहीं मिला।

पहनावा : पाश्चात्य देशों के लोगों की तरह ही वहाँ का पहनावा है। गर्म जलवायु के कारण महिला व पुरुष छोटे व कम ही वस्त्र पहनते हैं। हाफ पेन्ट ही ज्यादातर पहनते हैं।

प्रधानाध्यापक एवं लीडर ट्रेनर स्काउटर
रा.उ.प्रा.वि. हरिजन बस्ती, नवलगढ़
मो. 9413548179

सुभाषित

उत्तम जन सो मिलत ही,
अवगुण सो गुण होय।
घन संग खारो उदधि मिलि,
बरसैं मीठो तोय।।

अर्थात्: अच्छे लोगों के साथ सम्पर्क रखने से अवगुण गुणों में बदल जाते हैं जैसे समुद्र का खारा पानी बादलों का रूप लेकर मीठा जल बरसाता है।

माँ का अपमान असह्य

एक बार जब स्वामी विवेकानन्द जी विदेश से भारत आ रहे थे तब दो ईसाई मिशनरी जान बूझकर स्वामीजी के साथ हिन्दू धर्म एवं ईसाई धर्म की तुलनात्मक चर्चा करने लगे। जब आलोचना में वे पछाड़ खाने लगे तब उन्होंने अत्यंत भद्दी एवं अश्लील भाषा में हिन्दू एवं हिन्दू धर्म की निंदा शुरू कर दी। स्वामीजी जब तक हो सका धैर्य धारण किए रहे, परन्तु अन्त में उनसे रहा न गया।

धीरे से एक के पास जाकर अचानक उन्होंने उसकी कमीज का कॉलर कस कर पकड़ा। उसके बाद मजाक में, परन्तु दृढ़ स्वर से बोले- ''अगर मेरे धर्म की निंदा की तो जहाज से नीचे फेंक दूँगा।'' वह मिशनरी डर के मारे काँपता हुआ बोला-''कृपया मुझे छोड़ दीजिए, फिर कभी ऐसी भूल न करूंगा'' उसके पश्चात जब भी जहाज में उनकी स्वामीजी से मुलाकात होती, तब नम्रता से वे पेश आते थे।

इस घटना का उल्लेख करते हुए स्वामीजी ने भारत वापस आकर एक दिन अपने शिष्य श्री प्रियनाथ जी से कहा- ''अच्छा प्रियनाथ, तुम्हारी माँ का यदि कोई अपमान करे तो तुम क्या करते?'' प्रियनाथ बाबू ने जवाब दिया-''स्वामीजी मैं उसकी गर्दन पकड़कर उसे उचित शिक्षा देता।''

स्वामीजी बोले- ''अच्छी बात है! तुम लोगों में कितनों का रक्त इससे गर्म हो जाता है?'' उत्कृष्ट देश भक्ति की प्रेरणा सभी को लेनी चाहिए।

संकलन : **अन्नराज** व.अ.
रा.उ.मा.वि., मोर्रा (नागौर)
मो. 9982632142

चिन्तन

विद्यार्थियों में आत्मानुशासन की भावना

❒ बल्लू राम मीणा

विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों को दी जाने वाली शिक्षा एवं शिक्षण प्रणाली नवाचारों से युक्त, हो तो मैं समझता हूँ कि हम विद्यार्थियों का समग्र विकास करने में कामयाबी हासिल कर सकते हैं। समग्र विकास से मेरा अभिप्राय विद्यार्थियों में संज्ञात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक विकास से है। अक्सर यह देखा जाता है कि विद्यार्थियों की भावना को समझे बिना ही केवल रटन्त या किताबी ज्ञान पर जोर दिया जाता है। यह विद्यार्थियों पर व्यर्थ का बोझ प्रतीत होता है।

हमारी शिक्षा प्रणाली बदलते समय चक्र के साथ नवाचारों की अपेक्षा रखती है, लेकिन देखने को ढाक के तीन पात मिलते हैं। शिक्षा नीति हो या कक्षा-कक्षों में शिक्षण-अधिगम की प्रणाली, परन्तु समय आ गया है कि या तो हमारी शिक्षण-अधिगम प्रणालियों में सुधार किया जाए जिससे समग्र विकास से युक्त भावी राष्ट्र निर्माता देश को समर्पित कर सके या फिर विद्यार्थियों में ऐसी भावना का विकास करे, जिससे वे स्वयं अनुशासित रहना सीखे। जिससे उनका समग्र विकास हो सके तथा भावी राष्ट्र निर्माता बने।

इस आलेख में कुछ ऐसे ही तथ्यों व नवाचारों की अभिव्यक्ति की जा रही है जिससे विद्यार्थियों में आत्मानुशासन की भावना का विकास हो सके।

शोध आलेख का उद्देश्य :-

प्रस्तुत शोध आलेख को लिखने के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य है जिनके क्रियान्वयन से व्यवहार गत परिवर्तनों की अपेक्षा रखी जा सकती है।

1. शिक्षकों को अपने कर्त्तव्यों के प्रति जवाब देह बनाने का प्रयास करना है। साथ ही आत्मानुशासित की भावना का विकास करना है। जिससे अभिप्रेरणा लेकर विद्यार्थी भी आत्म अनुशासित रहना सीखे।
2. शिक्षण-अधिगम को प्रभावशाली बनाने हेतु अभिप्रेरणा के स्रोत के रूप में प्रस्तुत आलेख को अभिव्यक्त करना।
3. विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षा पद्धति का विकास करना जिससे शिक्षक विद्यार्थियों की भावनाओं को समझकर अधिगम करा सके।
4. प्रस्तुत शोध आलेख का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों का समग्र विकास करने का प्रयास करना।

शोध आलेख में अभिव्यक्त प्रमुख तथ्य एवं नवाचार-

विस्तारपूर्वक विचारों को अभिव्यक्त करने से पूर्व मैं कुछ शब्दों में कविता के माध्यम से भाव प्रस्तुत कर रहा हूँ शीर्षक है 'सैल्प डिस्प्लिेन'

सीखा है विद्यार्थियों से, सैल्फ डिस्प्लिेन
तो उड़ गये मेरे चैन।
झाँक कर देखा उनकी भावनाओं में,
छुपा था जहाँ,
एक सच्चाई का पाठ।
तो मुझे समझ आ गए,
समय चक्र के कालांश आठ।।
अभिव्यक्ति व्यक्त करने का,
मिलने लगा मौका,
अन्तर-आत्मा से,
मैं, अपने आप चौंका।
पूछा स्वयं से ही आत्म प्रश्न।
क्या ? है ये सैल्फ डिस्प्लिेन।।
दिल को लगा थोड़ा-सा झटका।
दिमाग का दरवाजा एक दम खटका।।
होने लगी
आत्म-प्रश्नों के उत्तर की बौछार
थोड़ा डराओ, थोड़ा हँसाओ
पाठ पढ़ा कर, खूब समझाओ
छात्र केन्द्रित शिक्षण लाओ।
समझो उनकी भावना
स्वार्थ होगा त्यागना।
स्वयं करो,
कर्त्तव्यों का पालन
विद्यार्थियों के साथ
शेयर करो
निस्वार्थ भाव से
ज्ञान का लेन-देन।
अपने आप समझ में आ जाएगा
कि
क्या ? है, सैल्फ डिस्प्लिेन।।

उपरोक्त कविता की अभिव्यक्ति से शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को कुछ हद तक अभिप्रेरणा मिल सकती है परन्तु विद्यार्थियों में आत्म अनुशासन की भावना विकसित करने से पूर्व हम शिक्षकों को भी अपने आप में आत्म संयमित तथा सैल्फ डिस्प्लिेन में रहना सीखना होगा। यदि हम ऐसा नहीं कर पाए तथा विद्यार्थियों को ही शिक्षा देने का ढिंढोरा पीटते रहे तो इस तरह होगा जैसे एक कहावत है कि 'आप गुरु जी बैंगन खाए, दूसरों को परवल बताए।' अर्थात् दूसरो में सुधार की अपेक्षा रखने से पूर्व हमें अपने स्वयं के चरित्र में झाँक कर देखना जरूरी होगा कि हम स्वयं अनुशासित हैं या नहीं।

यहाँ एक तथ्य का जिक्र करना और दिमाग में आ रहा है कि इस्लाम धर्म के पैगम्बर मोहम्मद साहब के पास एक मुस्लिम महिला ने अपनी वेदना अभिव्यक्त करते हुए कहा कि महोदय मेरा बच्चा मिठाई खाने का आदी हो गया है, आप मेरे बच्चे से कहे तो शायद उसकी यह आदत छूट जाए। मोहम्मद साहब स्तब्ध बन कर रह गए और मन ही मन चिन्ता में पड़ गए कि जब मैं स्वयं मिठाई अत्यधिक खाने का शौकीन हूँ तो बच्चे को मिठाई खाने से कैसे रोक सकूंगा ? एक पल सोचकर पैगम्बर साहब ने महिला को जवाब दिया कि आप एक सप्ताह बाद बच्चे को मेरे पास लाना मैं आपके बच्चे में अपेक्षित सुधार कर दूँगा। यहाँ आप सोच रहे होंगे कि मोहम्मद साहब ने महिला को एक सप्ताह बाद आने का समय क्यों दिया ? तो उसका सीधा सा जवाब है कि एक सप्ताह तक मोहम्मद साहब ने स्वयं अपनी मिठाई खाने की आदत में सुधार कर

लिया और एक सप्ताह बाद महिला द्वारा बच्चे को पैगम्बर साहब के पास लाने पर उन्होंने प्यार से बच्चे को समझाया कि अत्यधिक मिठाई खाने से तुम्हारा पेट खराब हो सकता है। बच्चे को समझ आ गया तथा उसने भी अपनी आदत में सुधार कर लिया।

तो यहाँ मेरा इस कथा को देने का उद्देश्य सिर्फ इतना है कि जैसे पैगम्बर साहब ने बच्चे को अनुशासित करने से पहले स्वयं को अनुशासित किया उसी तरह हम शिक्षक भी सैल्फ डिस्प्लिन (आत्मानुशासन) में रह कर विद्यार्थियों में आत्मानुशासन की भावना का विकास कर सकते हैं।

सैद्धान्तिक रूप से तो हमें आत्मानुशासित रहने के लिए शिक्षण-अधिगमों की आचार संहिताएँ बनी हुई है परन्तु व्यावहारिक रूप से अक्सर इनकी अवहेलना ही हम शिक्षकों द्वारा की जाती है जिसका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हमारे पर बच्चों, विद्यार्थियों, सामाजिक विकास यहाँ तक कि राष्ट्र निर्माण पर भी प्रभाव पड़ता है। अतः हम सभी को मिलकर हमारे कर्त्तव्यों का उचित तरीके से निर्वहन करना चाहिए। जिनका जिक्र मैं संक्षेप में करना चाहूँगा जो निम्न प्रकार है।

1. शिक्षण अधिगम के समय एवं कक्षा-कक्ष में जाते समय सहायक सामग्री को बोझ समझकर प्रायः अवहेलना कर दी जाती है। जिसका सीधा प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ता है। हमारा थोड़ा सा आलस्य इन विद्यार्थियों के भविष्य के साथ अन्याय हो सकता है चूँकि उस समय हम भूल जाते हैं कि सहायक सामग्री के अनुप्रयोग से बच्चों में सीखने की प्रवृति शीघ्र विकसित होती है अतः हमें आत्मानुशासित होकर कक्षा-कक्ष में जाते समय उचित सहायक सामग्री को ले जाने का ध्यान रखना चाहिए जिससे बच्चों पर भी प्रभाव पड़ेगा तथा भविष्य में बच्चों में भी इस प्रवृत्ति का विकास हो सकेगा।

2. समय का उचित प्रबन्धन न हो पाना ज्यादातर व्यावहारिक रूप में देखने को मिलता है चूँकि सैद्धान्तिक रूप में तो हम वार्षिक पाठ योजना, ईकाइ योजना बना लेते हैं परन्तु ये सभी सिर्फ नियमावली में ही सिमट कर रह जाते हैं तथा अक्सर होता यह है कि विद्यार्थियों का पाठ्यक्रम समय पर पूरा न होता देखते हुए जल्दबाजी में पाठ्यक्रम पूरा करने में लग जाते हैं। जबकि अपेक्षा की जाती है कि विद्यार्थियों में व्यावहारिक ज्ञान से जानकारी प्राप्त हो, मॉडल, प्रतिमान, प्रैक्टीकल से सीखने को मिले, वह केवल रटन्त तक ही सीमित न रहे तथा विद्यार्थियों में भी एक भावना घर कर जाती है कि जैसे-तैसे करके परीक्षा में पास हो जाएँ।

परन्तु हम यह भूल जाते हैं कि हमारे थोड़े से गलत तरीकों से अधिगम कराने की प्रवृत्ति विद्यार्थियों के आधार को कमजोर बनाती है चूंकि हम यह तो अच्छे से जानते है कि जिस भवन की नींव ही मजबूत नहीं है उस पर इमारत कैसी? बन पाएगी यदि जैसे-तैसे बन भी जाएगी तो वह ज्यादा दिन नहीं टिक पाएगी अतः हमें विद्यार्थियों की भावनाओं को समझ कर ही अधिगम कराना उचित होगा जिससे विद्यार्थियों का भविष्य भी प्रकाश मय हो सके।

3. विद्यार्थियों हेतु भी एक संदेश जरूर दूँगा चूंकि कई बार यह होता है कि शिक्षक शिक्षण अधिगम कराने में यदि कोई कमी नहीं रख रहे है तो कहीं न कहीं विद्यार्थियों में लापरवाही अवश्य है परन्तु ऐसी परिस्थितियों में हम शिक्षकों का कर्त्तव्य बनता है कि उचित मार्गदर्शन कर लापरवाह विद्यार्थियों को समझाने का प्रयास करें तथा उन्हें बताएँ कि यह आपका समय बहुत कीमती है इसे व्यथ न गवायें, चूंकि आज आप लापरवाह होकर पढ़ाई को बोझ समझ रहे हो परन्तु आपका आगामी भविष्य कठिन परिश्रम का है क्योंकि प्रत्येक क्षेत्र में प्रतियोगिता के माध्यम से सक्षम व्यक्ति का ही चयन किया जाता है। आज जो तथ्य हम तुम्हे सिखा रहे हैं उन्हीं को सीखने के लिए आप पछताओगे एवं दर-दर कोचिंग सेन्टरों का दरवाजा खट-खटाकर भी पिछड़ जाओगे। चूंकि आपकी बैसिक जानकारी पर लापरवाही की वजह से पकड़ नहीं रहेगी तथा एक-एक आँख से नौ-नौ आँसू टपका कर भूतकाल को याद करोगे परन्तु कुछ नहीं होगा जब तक बहुत समय गुजर चुका होगा। अतः श्रेष्ठ यही है कि जो शिक्षण अधिगम कराया जाता है उसका अच्छे से ज्ञान ग्रहण करें तथा व्यावहारिक रूप में अनुप्रयोग कर समझने का प्रयास करें।

4. अक्सर यह भी देखने को मिलता है कि व्यावहारिक तरीका क्या है? कैसे विद्यार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करें। तो सीधा सा जवाब है कि जिस शीर्षक या बिन्दु को हम पढ़ा रहे है उसे प्रत्यक्ष समाज, धरातल, प्रकृति एवं स्वयं मानव से जोड़कर विश्लेषण करें तथा उचित उदाहरणों द्वारा विद्यार्थियों को समझाने का प्रयास करें। यहाँ तक कि विद्यार्थियों से कहें कि पढ़ाए गए बिन्दुओं को अपने आप पास के परिवेश में सिद्ध करके देखें तो निश्चय ही विद्यार्थी ऐसा करने का प्रयास करेंगे तथा जो बिन्दु उन्हें समझने में सैद्धान्तिक रूप से कठिन लग रहा था वही सामान्य प्रतीत होगा एवं समझ के विकास के साथ अधिगम में रुचि उत्साह के साथ बढ़ेगी।

जहाँ तक मेरा मानना है कि भूगोल जैसे विषय का अध्ययन-अध्यापन व्यावहारिक तरीकों से जितना अच्छा हो सकेगा उतना अच्छा तरीका शायद ही कोई और हो सकता है। अर्थात प्रत्यक्ष अवलोकन (व्यावहारिक), न भूल सकने वाला तरीका है।

इस तथ्य को लिखते हुए माफी चाहूँगा परन्तु सत्य हमेशा कटु ही होता है और वह कटु सत्य यह है कि हम कितना ही यह ढिंढ़ोरा पीटते रहे कि विद्यालयों में भौतिक संसाधनों (स्टाफ, भवन, कक्षा-कक्ष, खेल मैदान, स्वच्छ वातावरण आदि) को उपलब्ध कराया जा रहा है परन्तु यह 'रहा' शब्द हमारी व्यवस्था में ज्यों का त्यों बना हुआ है कब? यह शब्द 'हो चुका' में बदलेगा। यह विचारणीय है।

चूँकि जहाँ पर्याप्त संसाधन उपलब्ध नहीं है वहाँ हम कैसे उचित प्रबन्धन व नियोजन की अपेक्षा रख कर सैल्फ डिस्प्लिन की कल्पना कर सकते हैं?

6. मेरे दिमाग से एक नवाचार की भी उपज हुई जो मैंने कार्य स्थल पर लागू कर विद्यार्थियों के व्यावहारिकता में अपनाने का प्रयास भी किया एवं उसके सकारात्मक परिणाम भी मुझे प्राप्त हुए हैं जिससे विद्यार्थियों में सैल्फ डिस्प्लिन की भावना भी लगभग विकसित हुई है वह नवाचार निम्न प्रकार है-

शिक्षण अधिगम से कहीं ज्यादा अभिप्रेरक मूल्यांकन विद्यार्थियों के लिए लाभकारी हो सकता है परन्तु मूल्यांकन का तरीका कुछ परम्परागत तरीकों से हट कर होना चाहिए जिससे समय की बर्बादी भी न हो सके।

अभी मैं बोर्ड परीक्षा वाले विद्यार्थियों पर ही यह नवाचार अनुप्रयुक्त कर सका हूँ जिसके तहत प्रत्येक सप्ताह के सोमवार को पाठ्यक्रम में पढ़ाए गए अध्ययनों से निर्धारित समय में विद्यार्थियों द्वारा प्रश्न हल किए जा सके। प्रश्नों का प्रश्न-पत्र बनाकर टेस्ट (जाँच परख) द्वारा मूल्यांकन करता हूँ, जिसके सकारात्मक परिणाम भी मुझे प्राप्त हुए है, जिसकी प्रक्रिया निम्न प्रकार हो सकती है।

प्रश्न-पत्र बनाते समय बोर्ड के प्रश्न-पत्र पैटर्न का ध्यान भी हमें रखना होगा। बोर्ड पैटर्न के अनुसार मूल्यांकन हेतु वस्तुपरक, अति लघुत्तरात्मक, लघुत्तरात्मक तथा व्याख्यात्मक प्रश्नों का समावेश प्रश्न पत्र में करें जिससे विद्यार्थियों की समझ, विश्लेषण क्षमता एवं व्यावहारिक ज्ञान का विकास हो सकेगा।

उत्तर लिखने का स्थान प्रत्येक प्रश्न के साथ ही निर्धारित करेंः अलग से उत्तर पुस्तिका उपलब्ध नहीं कराएँ (व्यवहार में विद्यार्थियों को ये जरूर समझावें कि यह पैटर्न यहाँ केवल आपके समग्र विकास हेतु है बोर्ड परीक्षा में तो उत्तर पुस्तिका अलग से उपलब्ध होगी) जिसका उद्देश्य केवल इतना है कि विद्यार्थियों में अनुशासित रहकर संक्षिप्त, सटीक एवं निश्चित शब्दों में प्रश्नों के उत्तर लिखने के कौशल का विकास होगा। चूँकि हम प्रश्न पत्र में निर्धारित शब्दों में उत्तर लिखने हेतु स्थान रखेंगे तो विद्यार्थी सोच समझ कर ही प्रश्नों का उत्तर लिखने का प्रयास करेंगे चूंकि अधिक लिखने हेतु स्थान ही नहीं मिलेगा।

यदि हम ऐसा नहीं कर पाते हैं तो अक्सर यह देखने को मिलता है कि विद्यार्थी एक प्रश्न का उत्तर जहाँ मात्र 20 शब्दों में देना होता है वहीं उत्तर 100 शब्दों तक पहुँचा देता है। तथा जिसका 100 से 150 शब्दों में देना होता है उसका उत्तर 400 से 500 शब्दों मे लिख देता है जिससे बोर्ड परीक्षा में प्रश्न-पत्र के प्रश्न हल किए बगैर ही छूटने की आशंका रहती है तथा इसका मूल कारण यह भी है कि विद्यार्थियों में एक गलत भावना घर बनाए हुए है कि ज्यादा लिखेंगे तो ज्यादा अंक मिलेंगे जबकि वास्तविकता यह होती है कि जो पूछा जाता है उसका मूल भाव ही निर्धारित शब्दो में संक्षिप्त व सारगर्भित लिखने का प्रयास करना चाहिए।

विद्यार्थियों को यह भी विश्वास दिला दें कि यह तुम्हारे स्वयं के मूल्यांकन हेतु है अतः प्रश्नों के उत्तर ईमानदारी से देने का प्रयास करें। मेरा मानना है कि विद्यार्थियों में इससे ईमानदारी से उत्तर लिखने की भावना का विकास अवश्य ही हो सकेगा।

प्रश्न-पत्र की फोटो प्रति (जिसमें उत्तर लिखने का स्थान भी प्रत्येक प्रश्न के साथ निर्धारित हो) करवाकर विद्यार्थियों को दूर-दूर बैठाकर हल करने हेतु देवें। इस हेतु एक समस्या आएगी कि फोटो प्रति कराने हेतु खर्च (रुपये) कहाँ से लेवें तो सीधा सा तरीका है कि विद्यार्थियों को समझादे कि जाँच करने के बाद ये साप्ताहिक मूल्यांकन की प्रश्नोत्तर कॉपियाँ आपको दे दी जाएगी प्राप्तांकों का हमारे पास एक रजिस्टर विशेष में रिकॉर्ड रहेगा तो विद्यार्थी स्वयं अपने आप ही प्रत्येक टेस्ट के प्रश्नोत्तर पत्रों की फोटो प्रति करवाने हेतु रुपये इकट्ठे कर लेंगे। चूंकि एक प्रश्न पत्र की एक फोटो प्रति (प्रत्येक छात्र हेतु) कराने में मात्र 2 रुपये का खर्च आएगा जिस हेतु विद्यार्थी स्वयं तैयार हो जाएँगे। यदि नहीं भी होते है तो भी विद्यार्थियों के हित को देखते हुए विद्यालय के किसी एक फण्ड से भी प्रधानाचार्य से आग्रह कर प्रश्न-पत्रों की फोटो प्रति करा लेवें।

एक विशेष तथ्य और यह है कि जब विद्यार्थी दूर-दूर बैठ कर प्रश्नोत्तर पत्र हल करने जावें (कक्षा-कक्ष या फिल्ड में बैठें) तो उनसे सम्बन्धित विषय की गृह कार्य उत्तर पुस्तिका (बंद करके) साथ लेकर बैठने को कहें जिससे

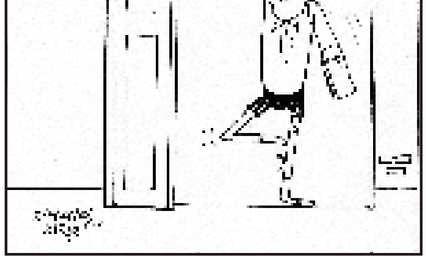

एक तरफ ईमानदारी से विद्यार्थी प्रश्नोत्तर-पत्र हल करेंगे उसी समय में शिक्षक गृह कार्य उत्तर पुस्तिका भी प्रत्येक विद्यार्थी के पास जाकर विद्यार्थी को खड़ा करते हुए जाँच सकेगा। साथ ही गृह कार्य उत्तरपुस्तिका जाँचते समय प्रत्येक विद्यार्थी से सम्बन्धित अध्याय में से मौखिक प्रश्न भी पूछे। जिससे एक ही समय में 'एक पंथ तीन काज' सम्पन्न हो सकेंगे। अर्थात् विद्यार्थियों की लिखित परीक्षा द्वारा मूल्यांकन, मौखिक प्रश्नोत्तर पूछने से साक्षात्कार कौशल का विकास तथा विद्यार्थियों के गृह कार्य की जाँच भी एक निश्चित समयान्तराल पर हो सकेगी।

साप्ताहिक जाँच परख की कॉपियाँ जाँचने का तरीका निम्न प्रकार रख सकते हैं जिससे समय की बचत के साथ-साथ विद्यार्थियों के समक्ष पारदर्शिता भी रहेगी और विद्यार्थी स्वयं अपने आप का आकलन भी कर सकेंगे।

कक्षा में विद्यार्थियों को साप्ताहिक टेस्ट की कॉपियाँ रो. नं. अनुसार वितरित करने के बाद कॉपियों को इन्टर चेन्ज (पास बैठे विद्यार्थियों से कॉपियाँ की अदला-बदली) करवा देवें तथा एक शब्द के उत्तर वाले प्रश्न, अतिलघुत्तरात्मक एवं लघुत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर ग्रीन बोर्ड पर शिक्षक द्वारा लिख दिए जाएँ एवं विद्यार्थियों से कहे कि सम्बन्धित प्रश्न का उत्तर मिलाकर कॉपियाँ जाँचे (उत्तरों में अंक देवें) तो समय की बचत हो जाएगी तथा कॉपियाँ कम समय में ही चैक भी हो जाएगी अब रही व्याख्यात्मक, विश्लेषणात्मक निबन्धात्मक प्रश्नों को जाँचने की बात तो कॉपियाँ एकत्रित करके स्वयं शिक्षक द्वारा ही चैक करनी होगी जो कार्य थोड़े ही समय में सम्पन्न हो जाएगा।

व्याख्याता (भूगोल)
राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय,
चन्दीपुर (मनोहरथाना) जिला-झालावाड़
मो. 8094871193

हे ईश! भारतवर्ष में शत बार मेरा जन्म हो।
कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारी कर्म हो।।

जो चाहे हित सीखिबो तो तरु ते सिख लेय।
पाहन हनें सुमधुर फल बिटप सहज ही देय।।

नारायन दो बात को, दीजै सदा बिसार।
करी बुराई और ने, आप कियो उपकार।।

रपट

इन्सपायर अवार्ड

छठी राष्ट्र स्तरीय प्रदर्शनी एवं परियोजना प्रतियोगिता 2016

❒ डॉ. संजय सिंह सेंगर

हर वर्ष की भाँति 10-11 दिसम्बर 2016 को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली द्वारा छठी राष्ट्र स्तरीय इन्सपायर अवार्ड प्रदर्शनी (NLEPC-2016) का आयोजन देश की राजधानी दिल्ली की सी.एस.आई.आर.-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला (CSIR-NPL) के वृहद परिसर में किया गया। यह प्रदर्शनी विश्व के सबसे बड़े विज्ञान महोत्सव India International Science Fest 2016 का एक भाग थी। भारतवर्ष के प्रत्येक राज्य एवं केन्द्र शासित प्रदेशों से श्रेष्ठता के आधार पर चयनित कुल 600 बाल वैज्ञानिक विद्यार्थियों को इस राष्ट्र स्तरीय प्रदर्शनी के लिए आमंत्रित किया गया था। इस वर्ष पहली बार राजस्थान राज्य से सर्वाधिक 64 विद्यार्थी राष्ट्र स्तरीय इन्सपायर अवार्ड प्रदर्शनी में आमंत्रित किए गए इतना ही नहीं पहली बार राजस्थान के 6 बाल वैज्ञानिक विद्यार्थी राष्ट्र स्तर पर प्रथम 60 में चयनित हुए जो कि अगले माह जनवरी 2017 में राष्ट्रपति भवन में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय नवप्रवर्त्तन उत्सव (National Innovation Festival) में अपने नवाचार के साथ भाग लेंगे तथा महामहिम राष्ट्रपति जी से व्यक्तिश: मिलने का अवसर उन्हें प्राप्त होगा। इन सब बातों के मध्य एक बड़ी उपलब्धि जो कि राजस्थान को मिली वो यह थी कि सम्पूर्ण भारत वर्ष में चयनित प्रथम 60 बाल वैज्ञानिक विद्यार्थियों में दूसरा स्थान कोटा के शिबाज्योति चौधरी कक्षा-8 तथा चौथा स्थान प्रतापगढ़ के सुमित शर्मा कक्षा-8 के रूप में राजस्थान की झोली में रहे।

इस वर्ष राज्य स्तरीय 'इन्सपायर अवार्ड' प्रदर्शनी के आयोजन का दायित्व मण्डल उपनिदेशक माध्यमिक, उदयपुर द्वारा निर्वहन किया गया था। उदयपुर से राजस्थान का यह दल पूरे जोश-खरोश के साथ राजस्थान राज्य परिवहन की दो आरक्षित बसों में सायं 04:15 बजे दि. 8.12.2016 को रवाना हुआ। रास्ते में बस की वायरिंग शॉट हो जाना वाहन चालक द्वारा उसे ठीक करना तथा नाथद्वारा में उत्साही नागरिकों द्वारा भोजन करवाना इत्यादि खट्टे-मीठे अनुभवों से गुजरते हुए, गाते-गुनगुनाते, सोते-जागते अगले दिन 09.12.2016 को सुबह हमारा दल दिल्ली में हमारे पूर्व निर्धारित आवास स्थल पर पहुँचा। अधिकांश बाल वैज्ञानिक विद्यार्थी ग्रामीण पृष्ठभूमि से थे अत: उन्हें आवास स्थल के सुसज्जित कक्ष, लिफ्ट और बड़े एलईडी टीवी बहुत आकर्षित कर रहे थे। अपने नए आवास को एन्जॉय करते सभी नहाने-धोने और तैयार होने में व्यस्त थे। मुझे सौभाग्यवश इस दल में 'स्टेट नोडल ऑफिसर' के रूप में दायित्व मिला, मेरे साथ श्री शान्ति लाल चौबीसा, शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी, कार्या. उपनिदेशक माध्यमिक कार्यालय उदयपुर रहे जिन्हें समस्त प्रबन्धन का कार्य उपनिदेशक माध्यमिक उदयपुर द्वारा प्रदान किया गया था श्री शाकिरुद्दीन काजी, प्रधानाचार्य राउमावि बदारना, उदयपुर 'असिस्टेन्ट टीम लीडर' के रूप में अन्य सहयोगी अध्यापक साथियों एवं अध्यापिका बहिनों के साथ उपस्थित थे।

समस्त दल को श्री शान्ति लाल चौबीसा के नेतृत्व में समस्त बाल वैज्ञानिकों को इंडिया गेट देखते हुए प्रदर्शनी स्थल पहुँचने का निर्देश प्रदान कर मैंने श्री शाकिरुद्दीन काजी एवं निदेशालय के साथियों के साथ पूसा रोड पर स्थित सी.एस.आई.आर.-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला परिसर की ओर दल के पंजीकरण के लिए प्रस्थान किया। प्रदर्शनी स्थल पहुँचने पर ज्ञात हुआ कि यहाँ तो विश्व का सबसे बड़ा विज्ञान महोत्सव India International Science Fest 2016 दिनांक 07 से 11.12.2016 चल रहा है और हमारी प्रदर्शनी भी इसका एक हिस्सा है। मुख्य द्वार की भव्यता देखते ही बनती थी। प्रवेश करते ही परिसर की विशालता का भी भान हो गया।

पंजीकरण पटल (Registration Counter) जैसे ही राजस्थान के विशाल दल के पहुँचने की सूचना हमने दी, समस्त पंजीकरण दल प्रफुल्लित हो उठा, ऐसा अनुभव हुआ कि जैसे हमारे पहुँचने की हमसे अधिक प्रसन्नता उन्हें हुई है। उनका आत्मीय व्यवहार और सहज स्वागत का अंदाज अनुकरणीय था। पंजीकरण की समस्त औपचारिकताएँ सम्पन्न कर हम हमारे बाल वैज्ञानिक विद्यार्थियों हेतु नियत की गई 'स्टॉल्स' का अवलोकन करने निकल पड़े। राजस्थान के दल में चूँकि बाल वैज्ञानिक विद्यार्थी अधिक थे अत: हमें तीन दीर्घाएँ आवण्टित की गई थीं। कुछ 'स्टॉल्स' बन कर तैयार थीं, लगभग 6x6 की 'स्टॉल्स' जिनमें बाल वैज्ञानिक विद्यार्थियों की फोटो युक्त उनके द्वारा प्रदर्शित नवाचार/प्रादर्श का विवरण दर्शाता एक फ्लैक्स-बैनर, दो टेबल, दो कुर्सियाँ, बिजली पॉइंट तथा 'स्टॉल्स' पर राज्य के नाम सहित बाल वैज्ञानिक विद्यार्थियों के नाम का साइन-बोर्ड। शेष बचीं 'स्टॉल्स' का निर्माण कर रहे श्रमिकों के सधे हाथों की तीव्रता और उनके चेहरे पर थकान रहित मुस्कुराहट देखते ही बनती थी।

जब तक हमने हमारे दल की प्रदर्शन दीर्घा, भोजन स्थल आदि की जानकारी ली, हमारा दल भी प्रदर्शनी स्थल राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला परिसर में आ पहुँचा। बाल वैज्ञानिक विद्यार्थियों की फटी आँखें और दमकते चेहरे उनकी अशाब्दिक भावनाएँ व्यक्त कर रही थीं और मुझे अपने बचपन के दिन याद हो आए। कुछ समय परिसर की भव्यता को निहारने तथा परस्पर उसके बारे में अपने अपने विचार साझा करने के बाद राजस्थान के दल को एकत्र कर समस्त बाल वैज्ञानिक विद्यार्थियों को प्रदर्शनी के बारे आवश्यक निर्देश प्रदान करते हुए उन्हें किट-बैग वितरित किए गए। सभी को उनके 'स्टॉल्स' दिखा कर तथा अगले दिन की आवश्यक तैयारियाँ कर हम हमारे आवास स्थल की ओर लौट चले।

10 दिसम्बर 2016 प्रदर्शनी का प्रथम दिवस सभी बाल वैज्ञानिक विद्यार्थियों सहित राजस्थान का हमारा दल अल सुबह पाँच बजे ही जाग गया था। तैयार हो कर एवं नाश्ता कर हम प्रात: ठीक 08:00 बजे प्रदर्शनी स्थल पर पहुँच गए थे और 08:15 बजे तो सब अपनी अपनी निर्धारित 'स्टॉल्स' पर पहुँच कर उन्हें करीने से सजाने में मशगूल हो चुके थे। देखते ही देखते 09:00 बजे राजस्थान के समस्त 'स्टॉल्स'

एकदम तैयार हो चुके थे। अब दौर था आगन्तुकों के 'स्टॉल्स' पर आने का। मैंने देखा कि राजस्थान की 'स्टॉल्स' पर आगन्तुकों की संख्या अधिकतम नजर आ रही थी। कारण केवल यह नहीं था कि हमारे प्रदर्शित मॉडल अद्वितीय या अत्युत्तम थे, अपितु कारण यह भी था कि हमने राजस्थान के बाल वैज्ञानिक विद्यार्थियों को कहा था कि आगंतुक चाहे छोटा हो या बड़ा उसके हर प्रश्न, हर जिज्ञासा का जवाब आप जरूर दें। यही कारण था कि जहाँ एक ओर अन्य राज्यों की 'स्टॉल्स' पर आगन्तुकों को विद्यार्थी मिल नहीं रहे थे वहाँ राजस्थान की 'स्टॉल्स' पर हमारे बाल वैज्ञानिक विद्यार्थियों ने खाने-पीने की सुध-बुध खो रखी थी और वे आगन्तुकों के साथ हिल-मिल कर उनके हर सवाल का जवाब दे रहे थे। आगन्तुक भी उनसे मिलकर खुशी-खुशी आगे बढ़ते जाते थे। मैंने साथी अध्यापकों से कह कर बाल वैज्ञानिक विद्यार्थियों के नाश्ते तथा भोजन आदि के पैकेट्स उन्हें 'स्टॉल्स' पर ही उपलब्ध करवाए, ताकि वे इस उल्लास में भूखे ही न रह जाएँ। मजे की बात तो यह रही कि 'ज्यूरी मेम्बर' भी राजस्थान की 'स्टॉल्स' पर आगन्तुकों की संख्या देख कर हैरान हो रहे थे क्योंकि इस भीड़ के कारण वे भी राजस्थान की 'स्टॉल्स' का परीक्षण नहीं कर पा रहे थे परन्तु वे बाल वैज्ञानिक विद्यार्थियों की सक्रियता से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। वे खड़े रह कर प्रतीक्षा करते व अपनी बारी आने पर 'स्टॉल्स' का परीक्षण करते, अद्भुत नजारा था। दिन कैसे निकल गया पता ही नहीं चला। सायं 6:00 बजे पूरे दल-बल सहित हम हमारे आवास स्थल की ओर लौट चले।

11 दिसम्बर 2016 प्रदर्शनी का अंतिम दिवस सुबह-सुबह तैयार हो कर व नाश्ता कर हमारा दल ठीक 08:30 बजे प्रदर्शनी स्थल पर पहुँच गया। सुबह 09:30 से फिर एक बार आगन्तुकों का आना प्रारम्भ हुआ 'ज्यूरी मेम्बर' भी एक बार पुन: अपने विचार को पुख्ता करने 'स्टॉल्स' पर पहुँच रहे थे। लगभग 11:30 पर पहली खुशखबरी प्राप्त हुई कि राजस्थान के दो बाल वैज्ञानिक विद्यार्थियों को 'ज्यूरी मेम्बर' चयन का प्रपत्र दे कर गए हैं जिसे कि पूरित करना है। उन्हें पूरित कर ही रहे थे कि दो और चयन की सूचना मिली। इस खुशी में चार चाँद तब लगे जबकि राजस्थान से कुल छ: बाल वैज्ञानिक विद्यार्थियों के चयन की अधिकृत सूचना मिली और यह निर्देश भी प्राप्त हुए कि केन्द्र सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी कैबिनेट मंत्री डॉ. हर्षवर्द्धन इन बाल वैज्ञानिकों से व्यक्तिश: मिलेंगे। अत: इन्हें 01:30 बजे 'वी.आई.पी. लाउन्ज' में पहुँचा दिया जावे। चयनित छह बाल वैज्ञानिक विद्यार्थियों को 'वी.आई.पी. लाउंज' में पहुँचा कर हम सभी एक साथ 'आकाश' नामक विशाल सभागार में पहुँचे। सभागार की भव्यता आयोजन के अनुरूप ही मनमोहक थी। कुछ समय की प्रतीक्षा के पश्चात अतिथिगण का शुभ-आगमन हुआ। डॉ. हर्षवर्द्धन कैबिनेट मंत्री विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय केन्द्र सरकार मुख्य-अतिथि थे इनके साथ श्री ए. जावाकुमार विज्ञान भारती, डॉ. वी.पी.भटकर वरिष्ठ वैज्ञानिक, प्रो. आशुतोष शर्मा सचिव विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, डॉ. गिरीश साहनी सचिव सीएसआईआर एवं डॉ. डी.के.असवाल निदेशक सीएसआईआर-एनपीएल मंचासीन थे। डॉ. हर्षवर्द्धन ने अपने उद्बोधन में कहा कि ''मैंने विश्व के बहुत से साइन्स फेस्ट में भाग लिया है परंतु यह विश्व का सबसे बड़ा विज्ञान महोत्सव India International Science Fest 2016 है जिसके कि हम सब यहाँ साक्षी बने हैं। इस महोत्सव में भागीदारी करने वाले तथा इसे देखने के लिए आने वाले आगंतुकों की संख्या विश्व के किसी भी विज्ञान-महोत्सव से कहीं अधिक रही है, यह एक नया रेकॉर्ड है।'' साथ ही उन्होंने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली द्वारा छठी राष्ट्र स्तरीय इन्सपायर अवार्ड प्रदर्शनी NLEPC-2016 में भाग लेने वाले समस्त बाल वैज्ञानिक विद्यार्थियों के नवाचारों की प्रशंसा करते हुए कहा कि ''राष्ट्रीय स्तर पर आ कर स्वयं को प्रदर्शित करना ही एक बड़ा पुरस्कार है।'' उन्होंने प्रथम 60 स्थानों पर रहने वाले बाल वैज्ञानिक विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किए जो कि माह जनवरी 2017 में राष्ट्रपति भवन में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय नवप्रवर्त्तन उत्सव (National Innovation Festival) में अपने नवाचार के साथ भाग लेंगे। राजस्थान के लिए अतीव प्रसन्नता का विषय रहा कि सम्पूर्ण भारतवर्ष में दूसरा स्थान कोटा के शिबाज्योति चौधरी कक्षा-8 तथा चौथा स्थान प्रतापगढ़ के सुमित शर्मा कक्षा-8 को मिला तथा इनके अतिरिक्त चारुल चौहान उदयपुर, काजल राठौड़ झालावाड़, रामरतन जोधपुर, भूपेन्द्र जांगीड़ टौंक ने भी संपूर्ण भारतवर्ष में प्रथम 60 में अपना स्थान बनाया। माननीय केबिनेट मंत्री डॉ. हर्षवर्द्धन के हाथों सम्मानित होने पर समस्त बाल वैज्ञानिक विद्यार्थी उत्साहित उल्लसित थे। जैसे ही मंच से राजस्थान के किसी बाल वैज्ञानिक विद्यार्थी का नाम पुकारा जाता दल के अन्य सभी सदस्यों को गर्व होता। पुरस्कार वितरण के साथ ही समारोह सम्पन्न हुआ। हम सभी का दिल बल्लियों उछल रहा था। बाहर आ कर पूरे दल ने सी.एस.आई.आर.-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला (CSIR-NPL) के मुख्य भवन के सम्मुख एक समूह चित्र कैमरे में कैद किया और पुन: लौट चले अपने प्रिय मरुप्रदेश राजस्थान की ओर।

छठी राष्ट्र स्तरीय इन्सपायर अवार्ड प्रदर्शनी NLEPC-2016 में हुई उपलब्धियों का कारण रहा मजबूती से की गई तैयारी। इस सत्र के प्रारम्भ से ही हमारी निदेशालय की टीम ने यह ठान रखा था कि जिला व राज्य स्तर पर संख्यात्मक तथा गुणात्मक दृष्टि से अच्छा संभागित्व रहे यह प्रयास करेंगे। इसके लिए सर्वप्रथम तो धन्यवाद विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली की टीम को जिन्होंने पहली बार जिले के समस्त अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी शैक्षिक प्रकोष्ठ के लिए आई.आई.एम अहमदाबाद के परिसर में वैस्टर्न रेन्ज की वर्कशॉप 22 व 23 अगस्त 2016 आयोजित कर इंस्पायर अवार्ड-मानक योजना के बारे में विस्तृत विमर्श किया। तदन्तर 08 सितम्बर 2016 को माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर परिसर में समस्त जिलों के अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी शैक्षिक प्रकोष्ठ तथा जिलों पर मनोनीत त्रिसदस्यीय कार्य समिति के सदस्यों की एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई जिससे योजना का उद्देश्य जमीनी स्तर तक पहुँच पाया। इन अल्प प्रयासों का इतना सुंदर परिणाम मिल सकता है तो क्यों न हम अगले वर्ष के लिए अभी से कमर कस लें। समस्त संस्थाप्रधानों से मेरा आग्रह है कि इंस्पायर अवार्ड के पोर्टल E-MIAS पर निदेशालय के पत्र दिनांक 15 दिसम्बर 2016 के अनुरूप विद्यार्थियों के गुणवत्ता युक्त नव-विचार मय आलेख अपलोड करें। पोर्टल 01 दिसम्बर 2016 से 28 फरवरी 2017 तक ही खुला रहेगा। परिवर्त्तन को स्वीकारते व ध्यान में रखते हुए किया गया हर छोटे से छोटा प्रयास सदैव बड़ी उपलब्धियाँ ले कर आता है।

सहायक निदेशक
(छात्रवृत्ति एवं प्रोत्सा. प्रकोष्ठ)
मा.शि. राज., बीकानेर
मो. 9414324303

रपट

सम्मान समारोह-2016

शिक्षा विभागीय राज्य स्तरीय मंत्रालयिक एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

❒ आनन्द कुमार साध

सन् 1990 से तत्कालीन निदेशक डॉ. ललित के. पंवार के कार्यकाल से निरंतर चल रही गौरवपूर्ण परम्परा के क्रम में बीकानेर शिक्षा निदेशालय की स्थापना दिवस की स्मृति में प्रतिवर्ष की भाँति 16 दिसम्बर 2016 को वेटरनरी ऑडिटोरियम बीकानेर में राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह आयोजित किया गया। जिसमें राज्यभर से 38 मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारियों का चयन किया जाकर इन्हें सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अशोक आचार्य, उप महापौर, नगर निगम बीकानेर, कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री बी.एल. स्वर्णकार, निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, विशिष्ट अतिथि श्री हरिप्रसाद पिपरालिया, अतिरिक्त निदेशक प्रा.शि. एवं श्री ओमप्रकाश सारस्वत, उपनिदेशक माध्यमिक बीकानेर के साथ-साथ श्री भवानी सिंह शेखावत, अतिरिक्त निदेशक, मा.शि., श्री राजकुमार दाधीच, वित्तीय सलाहकार, मा.शि., श्री विजय शंकर आचार्य, संयुक्त निदेशक-कार्मिक, श्री ज्ञानरूपराय माथुर, प्रशासनिक अधिकारी मा.शि. भी गरिमामय मंच पर शोभायमान थे।

कार्यक्रम का आरम्भ सरस्वती वंदना के साथ मुख्य अतिथि एवं अध्यक्ष महोदय द्वारा दीप प्रज्वलन किए जाने से हुआ। श्री ज्ञानेश्वर सोनी, भावना तिवारी, पदमा टिटलानी के निर्देशन में पूजा राजपुरोहित, योगिता नागल, आशा कंवर, निशा बारासा, योगिता मेड़तिया, किरण कंवर व चन्द्रकान्ता टाक (रा.बा.मा.वि. बारहगुवाड़ एवं रा.बा.उ.मा.वि. महारानी बीकानेर की छात्राएँ) ने सरस्वती वंदना व स्वागत गीत प्रस्तुत कर सभी को भाव-विभोर कर दिया।

मंचासीन अतिथियों का स्वागत सर्व श्री सुभाष महलावत, रमेश हर्ष, संजय सेंगर, कृष्णकान्त अत्रे, हरिराम वर्मा, मुकेश व्यास, निर्मल व्यास, पंकज भटनागर, अजय आचार्य, गिरिराज हर्ष, महेश आचार्य, महेन्द्र रंगा, सुनील ढाका, नवरतन सोनी, सुदेश भाटी, नीरज भटनागर, नरेन्द्र पाल जोशी, राजकुमार तंवर व देवराज जोशी द्वारा किया गया।

मंचासीन अतिथि परिचय व स्वागत भाषण सम्मानित होने वाले कर्मचारी श्री राजेश व्यास ने दिया। माननीय शिक्षा मंत्री व मुख्य सचिव राजस्थान सरकार के प्राप्त संदेश का वाचन श्री मदन मोहन व्यास ने किया।

कर्मचारियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की प्रशस्ति पुस्तिका का विमोचन सम्मानित मंच ने किया। इसके प्रकाशन में 'शिविरा' के सर्व श्री प्रकाशचन्द्र जाटोलिया, गोमाराम जीनगर के साथ मदन मोहन व्यास एवं वेदप्रकाश ढल्ला का भी सहयोग रहा।

सम्मान की शृंखला श्री राजेन्द्र कुमार टाक, स्टेनोग्राफर ग्रेड-II, कार्यालय जि.शि.अ. (मा.) पाली से प्रारंभ होकर श्री पुष्करमल रावत लिपिक ग्रेड-I, कार्यालय ब्लॉक प्रा. शिक्षा अधिकारी, कोटपूतली (जयपुर) के सम्मान के साथ सम्पन्न हुई। 38 कार्मिकों को मंचस्थ अतिथियों द्वारा सर्वप्रथम तिलक लगाकर स्वागत करते हुए माल्यार्पण, शॉल, साफा, स्मृति चिह्न, प्रतीक चिह्न, प्रमाण पत्र, श्रीफल एवं पुस्तक सैट भेंट किए जाकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अशोक आचार्य, उपमहापौर, नगर निगम बीकानेर ने प्रेरणास्पद उद्बोधन देते हुए कहा कि ''स्वच्छ भारत के सपने को साकार करते हुए जनहित की सभी योजनाओं का प्रचार-प्रसार कर जनता को लाभान्वित करें।'' सम्मानित होने वाले कर्मचारियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना व बधाई अर्पित करते हुए कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

विशिष्ट अतिथि श्री ओमप्रकाश सारस्वत ने गीता के कर्मयोग 'योग कर्मेषु कौशलं', तथा 'कर्मण्ये वाधिकारस्ते' की व्याख्या करते हुए कहा कि ''कार्य ही योग है। जिस प्रकार मंत्रों द्वारा बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान हो सकता है। उसी प्रकार सरकारी तंत्र में होने वाली प्रशासनिक एवं क्रियात्मक समस्याओं का समाधान भी इन्हीं मंत्रालयिक वर्ग द्वारा ही किया जाता है।''

कार्यक्रम अध्यक्ष श्री बी.एल. स्वर्णकार, निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में कहा ''मंत्रालयिक एवं सहायक कार्मिक सरकारी तंत्र का महत्त्वपूर्ण अंग एवं सरकार द्वारा जारी निर्देश, नीतियों, कार्यक्रमों एवं विभिन्न योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए तत्पर कमांडर होते है।'' सम्मानित होने वाले कार्मिकों को हार्दिक बधाई देते हुए इन्हें सभी के लिए प्रेरणादायी बताया।

रा.बा.उ.मा.वि. महारानी बीकानेर की कलाप्रिय छात्राओं ज्योति आर्य व शीतल पुरोहित द्वारा मुख्य द्वार पर बनाई गई आकर्षक रंगोली ने कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाया।

कार्यक्रम में पधारे हुए सभी कर्मचारियों, अधिकारियों, विभिन्न व्यवस्थाओं में लगे कार्मिकों, मुख्य अतिथि महोदय, प्रेस मीडिया, सम्मानित होने वाले कर्मचारियों के परिजनों एवं सहयोगियों का आभार प्रकट करते हुए विशिष्ट अतिथि श्री हरिप्रसाद पिपरालिया ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ।

कोटा के श्री ओम पंचोली द्वारा कार्यक्रम का सफल संचालन किया गया।

सम्मानित होने वाले कार्मिकों के परिजनों ने भी सम्मान के क्षणों के साक्षी बनकर अपनी स्मृतियों में सहेजा। उनमें से श्री राजेश गहलोत की पत्नी श्रीमती इन्दुबाला ने भावुक होकर कहा ''आज मैं वो सब गिले शिकवे भूल गई जो मैं अपने पति को अपने परिवार से ज्यादा अपने कार्यालय-कार्य के प्रति दी जाने वाली प्राथमिकता के लिए दिया करती थी।''

कार्यक्रम के उपरांत निदेशालय परिसर में आयोजित स्नेहभोज का सभी ने रसास्वादन किया। कार्यक्रम के सफल संचालन हेतु शिक्षा निदेशालय के कर्मचारी एवं अधिकारी पूर्ण मनोयोग से समर्पित रहे। इसका प्रभाव इस रूप में दिख रहा था कि कार्यक्रम सरकारी कम एवं पारिवारिक ज्यादा लग रहा था सभी लोग अपने पद एवं प्रतिष्ठा को भूल कर कार्यक्रम में सहयोग प्रदान कर गौरवान्वित महसूस कर रहे थे।

प्रसंगवश ध्यान में आता है कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापनार्थ सहयोग प्राप्त करने हेतु महामना मदनमोहन मालवीय जी जब तत्कालीन बीकानेर रियासत पधारे, तब बीकानेर रियासत के कर्मचारियों द्वारा भी सहयोग स्वरूप एक बड़ी राशि महामना को प्रदान की गई थी। शायद तत्समय कर्मचारियों द्वारा शिक्षा हेतु दिए गए योगदान का ही परिणाम है कि राजस्थान शिक्षा विभाग के कर्मचारियों को सम्मानित किए जाने का सौभाग्य बीकानेर की पावन धरा को निरन्तर प्राप्त हो रहा है। सम्पूर्ण कार्यक्रम गरिमामय और सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

सम्मानित कार्मिकों की सूची

1 **श्री राजेन्द्र कुमार टाक,** स्टेनोग्राफर ग्रेड-II,
कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) पाली

2 **श्री सुनील माहेश्वरी,** लिपिक ग्रेड-I,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लेबर कॉलोनी, भीलवाड़ा

3 **श्री राजेश व्यास,** लिपिक ग्रेड-I,
कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

4 **श्री दुर्गा लाल जोशी,** लिपिक ग्रेड-I,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय आरजिया, भीलवाड़ा

5 **श्री चेतन कुमार शर्मा,** सहायक कार्यालय अधीक्षक,
कार्यालय उप निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, अजमेर

6 **श्री शंकर लाल,** सहायक कार्यालय अधीक्षक,
राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थान, बीकानेर

7 **श्री खेमचन्द शर्मा,** लिपिक ग्रेड-I,
कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम) भरतपुर

8 **श्री पवन कुमार स्वामी,** लिपिक ग्रेड-I,
कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

9 **श्री राम प्रकाश शर्मा,** लिपिक ग्रेड-I,
कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) धौलपुर

10 **श्री युवकेश कुमार त्यागी,** लिपिक ग्रेड-I,
कार्यालय उप निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, कोटा

11 **श्री चेतन सिंह बड़गुर्जर,** सहायक कार्यालय अधीक्षक,
कार्यालय उप निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, जोधपुर

12 **श्री राजेश आसोपा,** लिपिक ग्रेड-I,
कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

13 **श्री मुकुल कपूर,** लिपिक ग्रेड-I,
कार्यालय उप निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, अजमेर

14 **श्री राजेन्द्र जोशी,** लिपिक ग्रेड-I,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय घुघरा, अजमेर

15 **श्री लक्ष्मण दास तुनगरिया,** सहायक कार्यालय अधीक्षक,
कार्यालय उप निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, अजमेर

16 **श्रीमती पूनम पालीवाल,** लिपिक ग्रेड-I,
राजकीय गुरुनानक भवन संस्थान, जयपुर

17 **श्री प्रकाश चन्द जैन,** लिपिक ग्रेड-I,
कार्यालय एस.आई.ई.आर.टी. उदयपुर

18 **श्री विष्णुदत्त पुरोहित,** लिपिक ग्रेड-I,
कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

19 **श्री सत्यनारायण शर्मा,** सहायक कर्मचारी,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय धानमण्डी, उदयपुर

20 **श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा,** लिपिक ग्रेड-I,
कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-द्वितीय) जयपुर

21 **श्री मक्खन लाल चाण्डक,** लिपिक ग्रेड-I,
कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) बीकानेर

22 **श्री विश्वप्रिय आचार्य,** लिपिक ग्रेड-I,
कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

23 **श्री पवन कुमार शर्मा,** लिपिक ग्रेड-I,
कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) हनुमानगढ़

24 **श्री मिट्ठू लाल रैगर,** लिपिक ग्रेड-I,
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय हुरड़ा, भीलवाड़ा

25 **श्री चेत प्रकाश गुर्जर,** लिपिक ग्रेड-I,
श्री कल्याण सिंह राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शाहपुरा, जयपुर

26 **श्री राजेश कुमार गहलोत,** लिपिक ग्रेड-I,
कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

27 **श्री सुशील कुमार पुरोहित,** सहायक कार्यालय अधीक्षक,
कार्यालय उप निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, बीकानेर

28 **श्री प्रमोद कुमार मिश्रा,** लिपिक ग्रेड-I,
कार्यालय ब्लाक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी, मसूदा, अजमेर

29 **श्री भरत कुमार राठौड़,** सहायक कार्यालय अधीक्षक,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बोरतलाब, बांसवाड़ा

30 **श्री उमाशंकर खनगवाल,** सहायक कार्यालय अधीक्षक,
कार्यालय खण्ड प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (जयपुर पश्चिम), जयपुर

31 **श्री रामलाल गुर्जर,** सहायक कर्मचारी,
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय फुलेरा, जयपुर

32 **श्री मुकेश यादव,** लिपिक ग्रेड-I,
कार्यालय ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी श्रीनगर, अजमेर

33 **श्री राजेश कुमार दर्जी,** लिपिक ग्रेड-II,
कार्यालय राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (रमसा), जयपुर

34 **श्री बालकिशन यादव,** लिपिक ग्रेड-I,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पुरानी छावनी, धौलपुर

35 **श्री रामसिंह सैनी,** लिपिक ग्रेड-II,
राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय भैंसीना (वैर), भरतपुर

36 **श्री हेमराज मिश्रा,** लिपिक ग्रेड-I,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कालवाड़, जयपुर

37 **श्री उमा शंकर बागड़ी,** लिपिक ग्रेड-I,
कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

38 **श्री पुष्करमल रावत,** लिपिक ग्रेड-I,
कार्यालय ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी कोटपूतली, जयपुर

लिपिक ग्रेड-I, संस्थापन एबी. अनुभाग, मा.शि. राज. बीकानेर **मो. 9413465733**

नव वर्ष चिन्तन

इतिहास की बात 'सत्रह' के साथ

❒ पुष्पा शर्मा

नए साल की बात होगी, उजाले की सौगात होगी, नए सूरज की रोशनी दामन भर उजाले ले आना..... पुरातन की अन्तिम बेला है साथ ही वर्ष 2017 के आरम्भ पर अंक 17 से जुड़ी खास ऐतिहासिक बातों को सूत्र में पिरोने का एक छोटा सा प्रयास है।

...17 भारतीय संवत्

सप्तर्षि संवत् ई.पू., कंलिग संवत् ई.पू. बुद्ध संवत्, ई.पू., महावीर संवत् ई.पू. विक्रम संवत् ई.पू. आनन्द विक्रम संवत् ई.पू., शक संवत्, लिच्छवी संवत्, इलाही संवत्, कलचुरी संवत्, गुप्त संवत्, हूण संवत्, हर्ष संवत्, कौलम संवत्, नेवाड़ी संवत्, चालुक्य विक्रम संवत्, लक्ष्मण संवत्।

.... 17 प्राचीन शासक (वंश वृक्ष)

मौर्यवंश से पूर्व मगध (महाजनपद) पर तीन प्राचीन राजवंश हर्यक वंश, शिशु नाग वंश एवं नंद वंश के 17 शासकों (बिम्बिसार, अजातशत्रु, उदायी, अनुरूद्द, मुण्ड, नागदासक, शिशुनाग, कालाशोक, महापद्मनंद, पण्डुक, पण्डुगति, भूतपाल, राष्ट्रपाल, गौविषाणक, दशसिद्धक, कैनर्त, धनानंद) का वंश वृक्ष रहा।

.... 17 मंत्री (पदाधिकारी)

गुप्त काल में प्रशासनिक कार्यो के लिए कतिपय 17 मंत्रियों (कुमारामात्य, महाबलाधिकृत, महादण्ड नायक, महासन्धि, विग्रहिक, दण्डपाशिक, सर्वाध्यक्ष, अग्रहारिक, महामंत्रधिकृत, ध्रुवाधिकरण,महाक्षपरलिक करणिक विनयस्थिति स्थापक न्यायाधिकरण भटाश्वपति, महापीलुपति, पुरपाल, पुस्तपाल) का उल्लेख मिलता है।

.... 17 पुरोहित

ऋग्वैदिक काल में धार्मिक अनुष्ठान के लिए सात पुरोहित होते थे जबकि उत्तर वैदिक काल में यह (होता, उद्गाता, अध्वर्यु, बह्मा, मंत्रावरण, प्रतिहाता, प्रतिष्ठा, ब्रह्मणाच्छंसी, ... सुब्रह्मण्यम्, नेष्ठा, पोता आदि) संख्या बढ़ कर 17 हो गयी।

.... 17 श्रेष्ठ चित्रकार

अबुल फज़ल ने अपनी पुस्तक 'आइने अक़बरी' में 17 श्रेष्ठ चित्रकारों (मीर सैय्यद अली, दसवंत, बसावन, मिस्किन, केशवलाल, मुकुन्द जगन्नाथ, माधव, महेश... तारा, राम और हरवंश के नाम उल्लेखित किए है।....

हम्मीर देव के .... 17 युद्ध

रणथम्भौर के राजा हम्मीर देव ने (1290....1301ई.)17 युद्ध किए जिनमें सोलह युद्धों में विजयी हुए।

17 हिन्दु राजाओं ने लड़ा था बहराइच की भूमि पर राष्ट्रीय युद्ध।

.... 17 आक्रमण

धन-धान्य से परिपूर्ण भारत पर विदेशी आक्रमणकारियों का इतिहास बहुत प्राचीन है। महमूद गजनवी ने 1000-1027 ई. के मध्य भारत पर 17 बार आक्रमण किए।

.... 17 सर्ग

कुमार संभव महाकाव्य में 17 सर्ग है जिनमें प्रकृति एवं कार्तिकेय जन्म कथा का वर्णन किया गया है।

.... 17 समितियाँ (संविधान सभा)

संविधान सभा ने अपना काम 17 समितियों। नियम समिति, संघ शक्ति समिति, संघ संविधान समिति, संचालन समिति, प्रारूप समिति, झण्डा समिति, रियासत समिति, परामर्श समिति, सर्वोच्च न्यायालय समिति मौलिक अधिकार (उप समिति), अल्पसंख्यक (उप समिति) राष्ट्रीय ध्वज संबंधी.... आदि) में बाँट लिया था

.... भाग 17 (राजभाषा)

भारतीय संविधान के भाग 17 में राज. भाषा के संबंध में विस्तार दिया है।

.... अनुच्छेद 17

भारतीय संविधान में कमजोर वर्गो के शैक्षिक तथा आर्थिक दृष्टि से उत्थान और उनकी सामाजिक विषमता को दूर करने के उद्देश्य से अस्पृश्यता का उन्मूलन तथा इसके प्रचलन का निषेध

.... 17 उद्योग

1948-56 की औद्योगिक नीति के अन्तर्गत अनुसूची में 17 उद्योग शामिल किए गए जैसे .... परमाणु शक्ति, लोहा, इस्पात, भारी मशीनें, हथियार तथा गोला बारूद, कोयला, विद्युत उत्पादन तथा वितरण.... आदि।

.... 17 अंक (ज्योतिष शास्त्र)

अंक ज्योतिष का सर्वप्रथम उल्लेख वैदिक शास्त्रों में मिलता है। अंक 1 का स्वामी सूर्य ग्रह है जो रचनात्मकता व सृजन का प्रतीक है। अंक 7 का स्वामी नेपच्यून है जो उच्च आध्यात्मिक ग्रह है अतः अंक 17 आध्यात्मिक एवं रहस्यमय शक्ति सम्पन्न है।

.... 17 मुखी रूद्राक्ष

यह रूद्राक्ष भगवान राम व सीता जी का प्रतीक माना गया है। यह रूद्राक्ष भगवान विश्व कर्मा का भी स्वरूप माना गया है।

.... 17 शृंगार

भोर में नागा संन्यासी दिनचर्या से निवृत्त होकर आराधना में जुटते हैं। आराधना के पश्चात् वह 17 वां शृंगार करते हैं।

.... 17 सीख

बेटी की विदाई में गाए जाने वाले गीत में बेटी को 17 सीख दी जाती है।

(अध्यापक)
राज. पायलेट माध्य. विद्यालय, केकड़ी (अजमेर)
मो. 8003365699

पुस्तक समीक्षा

तारां छाई रात

लेखक : डॉ. मंगत बादल **प्रकाशक** : राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति जनहित प्रन्यास, बीकानेर (राज.) **संस्करण** : 2015 **पृष्ठ संख्या** : 88 **मूल्य** : ₹ 100

राजस्थान रो लोक जीवण अर लोक संस्कृति अठै रै लोक साहित्य में घणी परतख हुई है। राजस्थानी लोक जीवण री ओळखांण करांवण रा सांतरा जतन भी अठैरा साहितकार साहित्य री विविध विधावां में लगोलग करता रैया है। इण जस जोग काम करणियां में पदम श्री विजयदान देथा, राणी लक्ष्मी कुमारी चूड़ावत, सा.म. नानूराम सांस्कर्ता, डॉ. गोरधन सिंह शेखावत, डॉ. महेन्द्र भानावत, मूळदान देपावत, डॉ. किरण नाहटा, डॉ. मदन सैनी, ओमपुरोहित कागद आद विद्वानां रै साथै डॉ. मंगत बादल रो नांव भी घणै आदर सूं लिरीजै। डॉ. मंगत बादल राजस्थानी अर हिन्दी साहित्य रा चावा कवि हुंवण रै साथै-साथै अेक लूंठा निबंधकार भी है। 'तारां छाई रात' राजस्थानी भासा में छप्यो आपरो तीजो निबन्ध संग्रै है, जिणमें आप अठै रा उच्छब, लोकाचार, रीत-रिवाजां, परम्परावां रै साथै-साथै अठै रो टाबरपणौ, मिनखपणौ, मेळमिलाप अर भाईचारो, अठै री प्रक्रति अर संस्कृति रा दरसण कराया है। 'तारां छाई रात' निबंध संग्रै में डॉ. मंगत बादल अठारह निबंध सिरज्या है। इण निबंधां में माटी री सांवठी मै'क आवे। आपरे निबंधां सूं पाठक ने आ बात परतख हुवे के आप लोक में घणां रच्या-बस्या हो अर आप लोक नै जीयो है। लोक री टूटती आस्था अर छूटता संस्कार लेखक रै हिरदै में अंक तड़फ सी पैदा करता लखावै। लेखक वां संस्कारां नै अवरेण री खेचळ करै अर आपरै निबंध रै माध्यम सूं पाठक नै जगावे झकझोरै।

चानणी रात सूं तो घणकरा लेखकां अर कवियाँ रो अेक मनोवैग्यानिक जुड़ाव ई रैयो है अर वै पुन्यु रै चांद री ओपमा में घणोई लिख्यो है। डॉ. मंगल बादल आसोज मईनै रै अमावस री तारां छाई रात रै बरणाव में सिणगार रस की स्रिस्टी अर प्रक्रति रो मानवीकरण करता थकां लिखै-'किणी ऊँचै धोरियै पर बैठनै माथै कानीं तकावौ। ठण्डी-ठण्डी पून रै साथे अनाज काकड़ियां मतीरियां री सौरभ आपनै मंत्र मुग्ध कर देवैली। उण रात आभै पर जद कोई बादल नीं हुवै अर तारा आपरी पूरी गरिमा साथै चिलकता हुवै तो प्रकृति री लीला रा आपनै परतख परमाण हुवैला। आपनै लागसी जियां काळी चूनड़ी ओढनै नवोढ़ा रात हळवै-हळवै पग धरती धरा पर उतरै। आप अठे सवाल कर सको कै म्हूं अंधारी रात नै 'नवोढ़ा' री उपमा क्यूं दी है? तो लागै आपनै लोक रीत रो ठाह् कोनी। पीळी चूंदड़ी (पीळो) तो गीगलो जायां पछै गीगलै री मां ओढै। नवोढ़ा तो जड़ाऊ अर काळै कानी पल्लां री चूंदड़ी जद ओढ़'र चाले तो प्रीतम रै साथै-साथै देखणियाँ रो मन भी मोह लेवै। रात रै सरणाटे में च्यारूं कानी बोलती कसारियां (झिंगुर) रा सुर छम-छम करती पाजेब सिरखा लागसी।''

रमतियां सूं रमता-रमता निबंध में लेखक जूनै बखत रै रमतियां सूं लेय'नै आधुनिक रमतियां तांई री ओळखांण कराई है। मिनख नै परमात्मा रै हाथ रो रमतियो बतावतां थकां लेखक निबंध नै अेक दार्सनिक दीठ सूं पूरण करै-'आपां लोग तो दुख में दुखी अर सुख में सुखी हुवां पण वो रचनाकार तो इण भांत आपरै रमतियां नै रम्मत करतां देख हाँसतो हुवैलो। कैवतो होसी मिनख कितरो बावळो है? अर इणीज भाँत भाजता-भाजता आपां सगळा आप-आप री उम्र पूरी कर मर जावां। स्यात चाबी खतम हुय जावै या सैल बळ जावै।''

'रैवणो भायां में' निबंध मायं लेखक भारतीय संयुक्त परिवार व्यवस्था री हिमायत करी है। पारिवारिक वैर-विरोध अर ईसकै सूं पाठक नै अवगत करांवता थकां भी लेखक भारतीय संस्कृति रै मूळ मंत्र 'वसुधैव कुटुम्बकम्' रा हिमायती है- कैवत है कै तूठेड़ो बाणियो माड़ो अर रूसेड़ो जेठ माड़ो।'.... 'बियां इण कैवत में आगै कैइजै-छियां मोकैरी, होवे चाये कैर री। छिंयां रो लक्षणार्थ लेवां तो आ छिंयां भायां री कैयी जा सकै। भायां री छत्र छाँया में रैय'र जैड़ो सुकून, जैड़ो सुख अर जिण सुरक्षा रै भाव री अनुभूति हुवै स्यात् उण नै देख'र किणी कैयो है-'रैवणो भायां में हुवै चाये वैर।'

'ढोल' आपणी संस्कृति रो अभिन्न अंग रैयो है। ब्याव-बनोरै, जनेत अर त्युँहारां रै मोकै बाजणवाळै ढोल रा कद्रदान आज कितरा'क रैया है? लेखक इण सारू आपरी चिन्त्या उजागर करी है-'कठै ई कोई-कोई अैड़ा कद्रदान भी बैठा है जका पुराणा साज-बाज अर परम्परावां नै बचावणै री कोसिस भी करै, पण मुट्ठी सूं सरकती बेळू रेत री भाँत बै उणनै कितरा दिन बचायां राखेला? ढोल भी इणरो अपवाद कोनी। अब उण नै जद गलै सूं काढ'र धर ई दियो तो बजाओ ना बजाओ आप री मर्जी है।'

'राजस्थानी कविता में सरदरितु' रो बरणाव करतां थकां लेखक प्राचीन राजस्थानी काव्य में प्रकृति रा आलम्बन अर उद्दीपन रूप दरसाया है तो आधुनिक राजस्थानी काव्य मांय प्रकृति चित्रण में भी जुगबोध रा दरसण कराया है। बखत रे साथै साथ प्रकृति चित्रण सारू कवियां रै भाव-भासा अर नजरियै में आयै बदळाव नै उजागर कर्‌यो है। 'अड़वौ' निबंध मायं लेखक री ऊंडी दार्सनिक दीठ निजर आवै। देस-धरम, जात-पात, अर पाप-पुन्न सगळां सूं अळगो रैय' नै लेखक अठे फकत मिनख अर मिनखपणै री बात करै।

'हेतरी हांती' निबंध मिनख री समाज रै प्रति दायित्व अर अपणायत री भावना उजागर करै। आज रो मिनख आत्म केन्द्रित हुयोड़ौ खुद में ई बुंदळाइजेड़ौ फिरै। 'हांती' कोई छोटी चीज नीं है। लेखक समाज रचना में हांती रो घणमहताऊ योगदान उजागर कर्‌यो है-'हांती रा च्यार गासियां सूं किणी री ना तो भूख भाजै अर ना कोई लेय'र राजी हुवै, पण इण पिछै जैड़ी भावना है बा प्रबल है। अबे जद बा भावना ई कोनी रैयी तो हांती रो कांई मतलब रैग्यो।'

डॉ. मंगत बादल रै इण निबंध संग्रै 'तारां छाई रात' रै निबंधा मांय लोकजीवण समग्र रूप सूं साकार हुंवतो लखावै। लोकोक्तियां, मुहावरा अर ओखाणां आपरी ठावी ठौड़ आयनै भासा अर भावां नै घणी गैराई दीवी है। लेखक रै स्वभाव अर शैली बाबत पोथी री भूमिका में मानीता डॉ. किरण नाहटा जी रै आं सबदां नै

अठै उजागर करणो चावूंला-'अैड़ा सरल स्वभावी लेखक हास-परिहास अर व्यंग्य-विनोद प्रधान शैली में भी सिद्धहस्त हुए सके, ई बात माथै जल्दी सूं विश्वास नीं हुवै, पण श्री बादल इणरा अपवाद है।' इण सांतरै अर संग्रहणीय निबंध संग्रै सारू लेखक अर प्रकासक नै घणां-घणां रंग।

-समीक्षक : **डॉ. शिवराज भारतीय**
प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि., ठेठार (श्रीगंगानगर)
मालियों का मोहल्ला, नोहर (हनुमानगढ़)
मो. 9414875281

नहले पर दहला

लेखक : ओमदत्त जोशी **प्रकाशक** : अजमेरा बुक कम्पनी, जयपुर **संस्करण** : 2015 **पृष्ठ सं.** : 88 **मूल्य** : ₹ 200

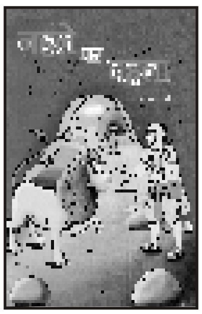

'नहले पर दहला' पुस्तक छात्रोपयोगी पुस्तक है। मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षाप्रद भी है। आज शिक्षाप्रद कहानियों की आवश्यकता है। संस्कारों का टोटा पड़ता जा रहा है। पश्चिमी आँधी के सामने हमारे संस्कारों की नींव हिल रही है। ऐसे समय में भारतीय पुरातनता और सनातनता की सीख अति आवश्यक है। यह पुस्तक हमारे वर्तमान समय की माँग की पूर्ति करती है।

पुस्तक की प्रथम कहानी 'मुसीबत में बुद्धि से काम' कहानी में राक्षस और राजा के मध्य अस्तित्व का संकट है। राक्षस बलशाली है परन्तु बुद्धि के अभाव में बल बापड़ा है। राजा के एक बौने आदमी ने आपसी संवाद चातुर्य से राक्षस को हरा दिया। अपनी बुद्धि से राजा ने उसके राज्य को बचा लिया।

'दूध का दूध, पानी का पानी' में न्यायपालिका का निष्पक्ष निर्णय है। राजकुमार जेत और एक साधारण बौद्ध भक्त सुदत्त के मध्य श्रावस्ती में स्थित सुन्दर बाग को लेकर विवाद हो गया। सुदत्त ने माँगी रकम देकर, सुन्दर बाग भगवान बौद्ध के लिए प्रवास हेतु खरीदना चाहता था। राजकुमार का मन बदल गया। बात न्यायालय तक चढ़ गई। अंत में विद्वान न्यायाधीश ने बौद्ध भक्त सुदत्त की न्यायपूर्ण माँग का समर्थन किया और निष्पक्ष निर्णय सुनाया। न्यायाधीश के समर्थन में जनता जयकारे लगाने लगी।

आज के अंत्योदयी परिवार के बच्चों के लिए 'परिश्रम का फल' कहानी अधिक प्रेरणादायी है। जगमाल गरीब घर से था। माँ-बेटा सेठों के यहाँ पानी भरकर गुजारा करते थे। जगमाल थका-हारा पढ़ता, प्रथम वर्ष सफलता नहीं मिली। इससे जगमाल निराश हो गया परन्तु उसके गुरु और माँ ने हौंसला बढ़ाया। हिम्मत है तो कीमत है। दूसरे वर्ष जगमाल डटकर पढ़ा। प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ। सब चकित रह गए। मेहनत का फल अवश्य मिलता है।

'नहले पर दहला' शीर्षक कहानी है। इसमें महावीर किसान होता है। अच्छी आधुनिक यंत्रों युक्त खेती है परन्तु नि:संतान है। परिवार में मायूसी है। पति-पत्नी उदास रहते हैं। एक बार मकान में मास्टरजी किरायेदार के रूप में आए। मास्टर जी को माजरा समझ में आ गया। अपने दोस्त डॉक्टर से मिलाकर महावीर का संकट निवारण किया। परिवार खुश। मास्टर जी की अच्छी इज्जत परन्तु एकमात्र बच्चा शरीर में कुछ छोटा/उसके मानसिक हीनता/बच्चे चिढ़ाते थे। पिता की सीख लेकर कक्षा में तैयारी के साथ आता। हरेक प्रश्न का सबसे पहले सटीक उत्तर देता। अध्यापक खुश। साथी बच्चों के मन में आदर की भावना। मेहनत रंग ले आई।

अंतिम 20वीं कहाणी 'परहित सरिस धर्म नहीं भाई'। कहानी दया और संवेदना से भरपूर है। अंधे नाथू बाबे को शरारती छात्रों ने गहरे गड्ढ़े में गिरा दिया। वह रोता रहा। सहायता के लिए चिल्लाता रहा। एक दयालु छात्र शरद था। अपनी माँ को लेकर गड्ढ़े के अन्दर गया। बाबे को बाहर निकाला। बाबा लहुलुहान था। अंधे बाबे की सेवा की।

अपने घर में आश्रय दिया। भीख मांगना बंद किया। शरद के पिता कारगिल युद्ध में शहीद हो गए थे। अपने घर में पिता के समान महत्व दिया। लोगों ने उसकी दया भावना और बाबे के प्रति मानवीय संवेदना की खूब तारीफ की। पुस्तक की सभी कहानियाँ एक-न-एक प्रेरणा देती है। कथानक रोचक है। भाषा सरल और सरस है। आज ऐसी शिक्षाप्रद कहानियों की आवश्यकता है। लेखक ओमदत्त जोशी धन्यवाद के पात्र हैं।

-समीक्षक : **पृथ्वीराज रतनू**
बीकानेर
मो: 9414969200

पाछो कुण आसी

लेखक : नीरज दइया **प्रकाशक** : सर्जना **संस्करण** : 2015 **पृष्ठ संख्या** : 96 **मूल्य** : ₹ 140

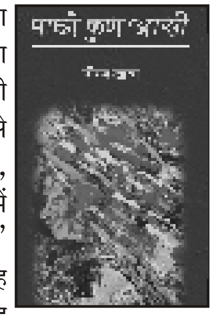

'पाछो कुण आसी' नीरज दइया का तीसरा राजस्थानी कविता संग्रह है। इससे पूर्व उनके 'साख', 'देसूंटो' राजस्थानी में और 'ऊचटी हुई नींद' हिंदी में कविता संग्रह प्रकाशित हैं। वे अनुवाद से भी जुड़े हैं और उन्हें हिंदी के साथ अनेक भारतीय कवियों की कविताओं के अनुवाद का लंबा अनुभव भी है। यह यहाँ रेखांकित करने का अभिप्राय कि नीरज दइया समकालीन भारतीय कविता के वर्तमान स्वर से पूर्ण परिचित है। संभवतः यही कारण है कि इस संग्रह में कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं, जो उनके कवि रूप को पहले की तुलना में अधिक गंभीर और प्रमुखता से अवस्थित करता है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि वे जहाँ आरंभ में युवा मन की अनुभूतियाँ रचते थे, यहाँ तक पहुँचते हुए वे उम्र और अनुभव की आँच से कविता लोक का एक परिपक्व वितान रचते हैं। कहना होगा कि कवि नीरज दइया राजस्थानी के एक प्रतिनिधि हस्ताक्षर के रूप में पहचाने जाने लगे हैं।

संग्रह की कविताओं का पाठ बाहर से जितना सरल-सहज प्रस्तुत होता दिखता है, वह भीतर से उतना ही जटिल व गुंफित है। 'पाछो कुण आसी' संग्रह की कविताएँ अपने पाठ के पीछे जैसे कोई आक्रोश या कहें घनीभूत पीड़ा से प्रेरित है। यहाँ काव्यानुभूतियों का विस्तार भीतर से बाहर, व्यष्टि से समष्टि में होता हुआ चहुँदिश से हाहाकार करता उद्वेलित करता है। कुछ संकेतों को स्थूल अर्थों में लिया जाए तो यहाँ एक ओर निकटतम पारिवारिक रिश्तों की असल हकीकत, उनसे मिले नैराश्य-प्रताड़ना पर

आत्ममंथन है तो दूसरी ओर सम्बन्धियों, मित्रों और व्यवस्था के दोगले चरित्र, व्यवहार का जीता-जागता लेखा-जोखा भी है।

'म्हारी वा मुळ्क/ मा री मुळ्क/ जिकी बिसरगी/ मुळकती- मुळकती/ म्हनै' एक अन्य कविता में-'ठीक कोनी/घणो सीधो सादो होवणो/ लोग मोको तकै' आज की कुछ ऐसी ही जीवंत स्थितियों की व्यंजनाएँ हैं। ऐसी घनीभूत पीड़ादायी अनुभूतियों को कवि ने बहुत ही सहजता से अपनी कविताओं में अभिव्यक्त किया है। 'दोस म्हारो नीं/ थारै स्वाद रो है' के माध्यम से वह साफ कहता है कि उसका कहा-लिखा अगर आपको नहीं रुचता तो यह उसका नहीं वरन आपके स्वाद का दोष है। 'समझो नै/ सीखो, कठै कांई सबद बोलणा चाइजै/ कद किसो सबद बरतणो चाइजै..' जैसी उक्तियाँ इस बात का संकेत है कि हम शब्दों के प्रयोग के प्रति कितने लापरवाह हैं। पीड़ा और चेतावनी के ये वेदना युक्त स्वर 'पाछो कुण आसी' कविता-संग्रह का केन्द्रीय भाव है।

कवि स्पष्ट शब्दों में लिखता है- 'आवणियै काल खातर ओ सवाल जरूरी है- काल अर आज में कांई फरक है।' मुझे लगता है 'पाछो कुण आसी' की कविताएँ इन्हीं सवालों से जूझती है। सम्बन्धों के स्खलन को किस खूबसूरती से नीरज ने अभिव्यक्त किया है- 'जिको कीं दियो जा सकतो हो/ सो कीं देय दियो/ संपत खातर/ बगतसर पल्लै राखी/ थोड़ी सी'क सरम/ थोड़ो क नेठाव..' यह जो थोड़ी-सी शर्म और धैर्य रखने की बात कवि अपनी इस कविता में कर रहा है, वह केवल 'पाछो कुण आसी' के कवि की ही नहीं, वरन सभी कला रूपों और कला माध्यमों से जुड़े समाज की सामूहिक अभिलाषा है।

कविताएँ ऐसे ही नहीं लिखी जाती। कविता लिखने और रचने का अपना सुख, अनुभव और शिल्प है। कविता को हम किसी यांत्रिक तकनीक के तहत सांचे में नहीं ढाळ सकते हैं। इस संग्रह में कवि ने कुछ कविताएँ कविता की रचना प्रक्रिया को लेकर भी लिखी हैं। उदाहरण के लिए इन पंक्तियों को देखा जा सकता है-'आंगणै आवै कविता बादळां दांई/ बरसै तो बरसै नीं बरसै तो करता रैवै टाळ बादळ/ बरसां बरस कोनी बरसै बरसणिया बादळ/ किण री मजाल/ कै एक छांट ई बरसा लेवै/ बिना मरजी' कविता सर्जन के बारे में यह सोच ही किसी कवि को एक अच्छा कवि बनाता है। यह प्रविधि और स्पष्टता ही कवि से अच्छी कविता की उम्मीदें बंधाता है। निःसंदेह नीरज दइया इस कसौटी पर प्रमाणित और खरे उतरने वाले कवि हैं। उनकी कविता और राजस्थानी भाषा को लेकर संग्रह में कुछ उल्लेखनीय कविताओं को देखते हुए यह तथ्य दोहराया जा सकता है कि इन कविताओं में समकालीन कविता के बदलते रंग और रंगत की अनुगूंज साफ सुनाई देती है। इतना होने के उपरांत भी इस संग्रह में अंत में शामिल की गई गद्य कविताओं से मैं इत्तेफाक नहीं रखता। मुझे गद्य कविताओं में कविताएँ कम और लघुकथाएँ अधिक अनुभूत होती हैं।

अच्छी छपाई के लिए सर्जना और सुंदर आवरण के लिए भाई रामकिशन अडिग को बधाई! और आखिर में डॉ. नीरज की कविताओं के बारे में डॉ. आईदान सिंह भाटी से सहमत होते हुए उन्हीं के शब्दों को दोहराना चाहता हूँ- नीरज दइया री ऐ कवितावां आज अर बीत्योड़ै काल री तो कवितावां है ईज, आवणा आळै काल रा पळका ई आं कवितावां में पड़ै।

-समीक्षक : **नवनीत पाण्डे**
2-डी-2, पटेल नगर, पवनपुरी, बीकानेर-03
मो. 9413265800

क्या मातृभूमि का आह्वान सुनायी नहीं देता?

लाहौर के एक कॉलेज में छात्रों के बीच स्वामी विवेकानन्द जी का ओजस्वी भाषण हुआ। गणित के तरुण प्राध्यापक तीर्थराम उनसे बहुत प्रभावित हुए। वे स्वामी जी को उनके सहयोगियों सहित अपने घर पर भोजन के लिए ले गए। घर पर अनेक विषयों की चर्चा हुई। स्वामी जी ने भाँप लिया कि प्राध्यापक में महानता के तत्व निहित है। प्राध्यापक तीर्थराम के भी आनन्द की सीमा न थी। उन्हीं के अनुरोध पर स्वर लहरी गूँज उठी। उन्हें तो होश ही नहीं था कि स्वामी जी कुशल गायक भी है। स्वामी जी गा रहे थे।-

''जहाँ राम वहाँ काम नहीं, जहाँ काम नहिं राम।
तुलसी कबहुँक रहि सके, रविरजनी इक ठाम।।

श्रोताओं के हृदयतंत्री के तार झनझना उठे। प्राध्यापक महोदय भी विचारों में डूब गये कि क्या उनका जन्म परिवार और बच्चों के पालन पोषण मात्र के लिए हुआ है? क्या भगवान ने इस तुच्छ कार्य के लिए मुझे मानव शरीर प्रदान किया है? स्वामी जी जब तक लाहौर में रहे, तीर्थराम घण्टों समय उनके साथ बिताते। एक दिन लाहौर छोड़ने का समय आ गया। प्राध्यापक सोच रहे थे कि स्वामी जी को कौनसी वस्तु भेंट करूँ? संकोच था। निर्धनता की गोद में पले प्राध्यापक के पास सर्वाधिक मूल्यवान सम्पत्ति के रूप में एक सोने की घड़ी थी। उसी को अर्पित करने का उन्होंने निश्चय किया। विदाई अत्यंत भाव-भीनी थी। प्राध्यापक ने भरे गले से कहा, ''स्वामी जी क्या इस निर्धन भक्त की भेंट स्वीकार करेंगे?'' और सोने की घड़ी आगे बढ़ा दी। कंचन से अलिप्त रहने पर भी स्वामी जी प्राध्यापक की भावना को अस्वीकार न कर सके। उन्होंने प्यार के साथ घड़ी अपने हाथ में ले ली। भक्त प्राध्यापक ने भी कृतज्ञता से स्वामी जी के चरणों में सिर झुका दिया। परन्तु यह क्या? स्वामी जी ने कहा, ''अब यह घड़ी मेरी है। परन्तु मैं यहीं पर सुरक्षित रखना चाहता हूँ।'' ऐसा कहते-कहते उन्होंने घड़ी उन्हीं की जेब में रख दी और कहा, ''क्या इसे रख भी सकोगे सम्भाल कर?''

'' क्यों नहीं?'' विश्वास भरा प्राध्यापक का उत्तर था। स्वामी जी ने कहा कि ''तुम्हारा जन्म कामिनी और कंचन के लिए नहीं हुआ है। मातृभूमि का आह्वान क्या तुम्हें सुनाई नहीं देता है। तुम्हें अनेक श्रेष्ठ कार्य करने हैं। अर्थ और काम तुम्हें बाँध कर न रख सकेंगे।'' स्वामी जी कहते रहे और प्राध्यापक अवाक् सुनते रहे। उस समय उपस्थित श्रोताओं में से कौन जान सकता था कि भारतमाता के वर्तमान धर्मदूत द्वारा यह भावी धर्मदूत स्वामी रामतीर्थ को दीक्षा मंत्र दिया जा रहा है।

संकलन : **विनोद भार्गव**
वरि. अध्यापक, रा.मा.वि. भट्ठड़, गंगाशहर, बीकानेर **मो. 8432113761**

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shalaprangan.shivira@gmail.com** पर भिजवाकर सहयोग करें। -**वरिष्ठ संपादक**

राज्य स्तरीय 'टीचिंग एड' प्रतियोगिता में प्रथम रहे व्याख्याता राजेश नामा

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय 'टीचिंग-एड' प्रतियोगिता में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के व्याख्याता (जीव विज्ञान) बालोतरा, बाड़मेर के राजेश नामा ने राज्य भर से आए 75 बाल वैज्ञानिकों एवं 25 मार्गदर्शक शिक्षकों एवं 15 टीचिंग एड के प्रतियोगियों में प्रथम स्थान प्राप्त किया। परियोजना अधिकारी केसर सिंह राजपुरोहित ने बताया कि चयनित प्रतिभागी नेहरू विज्ञान केन्द्र मुम्बई में राष्ट्र-स्तर पर भाग लेंगे।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रक्षा मंत्रालय के अधीन डीआरडीओ की रक्षा प्रयोगशाला जोधपुर के निदेशक श्री सम्पत राज बडेरा द्वारा राजेश नामा को स्मृतिचिह्न, प्रमाण-पत्र एवं एक हजार रुपये का नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सेवानिवृत्ति आई.ए.एस. डॉ. अशोक चौधरी, जि.शि.अ.(प्रा.) पाली गोरधन लाल सुथार, कर्नल बलदेव सिंह चौधरी, 'इसरो' वैज्ञानिक सुरेन्द्र चौधरी प्रधानाचार्या श्रीमती सीमा जनागल, हेमराज खत्री, डॉ. खत्री व सालगराम परिहार(जिलाध्यक्ष-शिक्षक फोरम) एवं अन्य वैज्ञानिक शिक्षाविद् तथा साथी शिक्षकों सहित स्कूल स्टॉफ ने राजेश नामा के चयनित होने एवं राज्य स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने पर ढेर सारी बधाई दी। बालोतरा लौटने पर रा.उ.मा.वि., नेहरू कॉलोनी शाला परिवार द्वारा भी साफा पहनाकर स्वागत व अभिनन्दन किया गया।

कुचौली के स्काउट ग्रुप ने विश्व एड्स दिवस मनाया

स्थानीय संघ-कुम्भलगढ़, जिला-राजसमन्द के रा.आ.उ.मा.वि. कुचौली में राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड में स्काउट ग्रुप ने विद्यार्थियों के साथ मिलकर विश्व एड्स दिवस' मनाया। स्काउट राकेश टॉक के अनुसार इस अवसर पर एड्स दिवस का छात्रों व स्काउट मिलकर 'सिम्बल' (मोनोग्राम) बनाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कार्यवाहक प्रधानाध्यापक राजधन मीणा व विशिष्ठ अतिथि रघुवीर सिंह आशिया रहे। इस अवसर पर आयोजित 'टॉक-शो' में किरण भटनागर व राकेश टॉक ने वार्ता दी। विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन के साथ राजकीय प्राथमिक विद्यालय, मामाजी का थान, जोधपुर के शाला प्रांगण में एस.एम.सी. सदस्यों एवं अभिभावकों की उपस्थिति में 12 नवम्बर 2016 को 'बाल समारोह' का सफल आयोजन किया गया। इस अवसर पर राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद् के दिशा निर्देशों के अनुसार विभिन्न व गतिविधियों में नृत्य, खेलकूद, 100 मी. व चम्मच दौड़ एवं अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता करवाई गई। गतिविधियों में विद्यार्थियों की सहभागिता देखकर अभिभावक अभिभूत हुए।

प्रधानाध्यापक शौकत अली के मार्गदर्शन में गोपाल सिंह के सहयोग से इस आयोजन के अन्तर्गत आयोजित प्रतियोगिता में प्रथम व द्वितीय स्थान आए बच्चों को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया गया। इस मौके पर चैनाराम पटेल, धनाराम पटेल, अचलाराम पटेल, शान्तिदेवी व अजीत सिंह डूडी आदि एस.एम.सी. सदस्य व अभिभावकों ने पूरे कार्यक्रम में न केवल मौजूद रहे बल्कि अन्त में बच्चों को बिस्किट वितरण भी किए।

मोनिका चौहान विधिक प्रतियोगिता में संभाग स्तर पर प्रथम

महाराणा कुम्भा रा.उ.मा.वि. केलवाड़ा (राजसमन्द) की मोनिका चौहान ने रैजीडेन्सी बा.रा.उ.मा.वि. उदयपुर में विधिक सेवा प्रतियोगिता के तहत संभाग स्तर पर आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में भाग लेकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। इससे गौरवन्वित विद्यालय के प्रभारी सत्यनारायण नागौरी ने बताया कि 06 जिलों के संभाग स्तर पर **'प्लास्टिक सुविधा कम, दुविधा ज्यादा'** विषयक निबन्ध प्रतियोगिता में मोनिका चौहान सुपुत्री श्री हीरासिंह चौहान कक्षा 11 के प्रथम स्थान प्राप्त करने पर संस्था प्रधान मोहन लाल बलाई ने शाला में आयोजित समारोह मे बालिका मोनिका चौहान का स्वागत कर उत्साहवर्द्धन किया। नर्बदा शंकर आमेटा ने आभार व्यक्त किया।

सांतोर (झुन्झुनूं) के विद्यालय में रंगोली प्रतियोगिता सम्पन्न

रा.उ.मा.वि. सांतोर (झुंझुनूं) में दिनांक 1 से 15.10.16 तक आयोजित स्वच्छता जागरूक पखवाड़ा के अन्तर्गत विद्यालय में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर रंगोली प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें बालिकाओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई। संस्थाप्रधान व सप्ताह प्रभारी ने सप्ताह के अन्तिम दिन छात्र-छात्राओं को सम्बोधित किया।

न्यूज बुलेटिन एवं शिक्षक संदर्शिका का विमोचन सम्पन्न

रा.उ. अध्ययन शिक्षण संस्थान, अजमेर के प्राचार्य ने बताया कि माननीय शिक्षा राज्य मंत्री प्रो. वासुदेव देवनानी जी द्वारा दिनांक 07.11.2016 को स्थानीय संस्थान में त्रैमासिक न्यूज बुलेटिन एवं शिक्षक संदर्शिका का विमोचन किया गया। इसी अवसर पर साथ ही पार्किंग स्थल एवं बेडमिन्टन कोर्ट का लोकार्पण किया गया। संस्थान की उत्तरोत्तर प्रगति पर मंत्री जी द्वारा प्रंशसा व्यक्त की गई। इस विमोचन के साक्षी संस्थान के प्रधानाचार्य श्री जगदीश चन्द्र पालीवाल, श्री प्रहलाद शर्मा, दिलीप चौहान, राजेश रंगवानी, अरुण अपूर्वा, मधुर माथुर आदि स्टॉफ रहे।

शाला प्रांगण में भामाशाह सम्मान

रा.उ.मा.वि. विरमसर (नोखा) बीकानेर की प्राथमिक वर्ग के सभी छात्र-छात्राओं को दिनांक 24.11.2016 को गंगाशहर बीकानेर निवासी वस्त्र व्यवसायी श्री प्रकाशचन्द्र डागा एवं दोहा कतर में रहने वाले इन्हीं के सुपुत्र श्री निर्मल डागा द्वारा स्वेटर वितरण किए गए। वितरण कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए उपनिदेशक मा.शि. श्री ओमप्रकाश सारस्वत द्वारा छात्रों का मार्गदर्शन किया गया एवं 'मिशन मेरिट' के प्रति छात्र-छात्राओं को प्रेरित किया गया।

उप निदेशक श्री सारस्वत ने विद्यालय के सभी शिक्षकों के कार्यों की सराहना की। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री कृष्णकान्त यादव ने भामाशाह निर्मलचन्द डागा एवं प्रकाशचन्द डागा का प्रशस्ति पत्र प्रदानकर सम्मानित किया। आगंतुक अधिकारियों एवं ग्रामवासी अभिभावकों का आभार व्यक्त किया।

मूक बधिर स्कूल में गर्म कपड़े भेंट

महावीर इंटरनेशनल, बीकानेर द्वारा रा. मूक बधिर विद्यालय, बीछवाल बीकानेर के 54 मूक बधिर विद्यार्थियों को सर्दी में पहनने योग्य लोवर इनर भेंट किए। साथ ही फल व खजूर खाने के लिए दिए गए। संस्था निदेशक बी.के. खन्ना के सौजन्य से आयोजित कार्यक्रम में संस्था के पूर्व अध्यक्ष महेन्द्र जैन व कोषाध्यक्ष संतोष बाँठिया के अलावा भारतीय जीवन बीमा निगम के विक्रय प्रबंधक एन.के. जैन और प्रशासनिक अधिकारी बी.एल. पिलानिया भी मौजूद रहे। इन्होंने विद्यालय को हर संभव मदद करने का आश्वासन दिया। प्रधानाध्यापक ओमप्रकाश ने विद्यालय में आधुनिक रसोई के निर्माण में सहयोग की जरूरत बताई। इस अवसर पर विद्यार्थियों के साथ ही अभिभावक भी बड़ी संख्या में मौजूद थे।

भूगोल प्रायोगिक विद्यार्थियों का भ्रमण

रा.आ.उ.मा.वि. ताऊसर (नागौर) कक्षा 12 के भूगोल प्रायोगिक के छात्र एक दिवसीय भ्रमण (24.12.2016) को भूगोल व्याख्याता श्री भवानीराम के नेतृत्व व प्रधानाचार्य हनुमान प्रसाद दाधीच के दिशा निर्देशन में ताऊसर से सुबह 8 बजे रवाना होकर देशनोक (बीकानेर) में करणी माता के दर्शन के साथ संग्रहालय से जानकारियाँ ली। गंगाशहर पहुँचने पर 'शिविरा' के सम्पादक गोमाराम जीनगर ने शैक्षिक भ्रमण एवं दिनचर्या बनाकर समय का सदुपयोग करते हुए पढ़ने के महत्त्व पर चर्चा की। बीकानेर में जूनागढ़ किला, म्यूजियम, लालगढ़, वैष्णोधाम आदि दर्शनीय स्थलों का भ्रमण किया। छात्रों द्वारा भ्रमण से लोगों का शैक्षिक व जीवन स्तर तथा जनसंख्या की जानकारी एकत्रित कर उनका विश्लेषण के साथ एक क्षेत्रीय भ्रमण रिपोर्ट प्रत्येक छात्र-छात्राओं द्वारा तैयार की जाती है।

इस शैक्षिक भ्रमण के दौरान सहयोगी के तौर पर विद्यालय के स्टाफ सदस्य श्री नटवर राज (वरि. अ.) श्री जवरीलाल (शा.शि.) एवं श्रीमती आशा वैष्णव (अ.) साथ रहे।

भामाशाह का किया सम्मान

रा. उच्च माध्यमिक विद्यालय महाजन बीकानेर में भामाशाह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कस्बे के प्रवासी भामाशाह डॉ. शिवभवन झँवर का सम्मान किया गया। प्रधानाचार्य रामदयाल लाटा ने बताया कि भामाशाह झँवर द्वारा विद्यालय में कक्ष निर्माण के लिए 5 लाख रुपए भेंट करने पर उनका अभिनन्दन किया गया। इस दौरान आयोजित कार्यक्रम में बोलते हुए झँवर ने कहा कि वर्षों बाद अपनी प्रथम पाठशाला में आकर मन को सुकून मिला है। झँवर को प्रधानाचार्य लाटा, नायब तहसीलदार जयदीप मित्तल, सरपंच प्रतिनिधि माच्छी खां आदि द्वारा अभिनन्दन पत्र प्रदान किया गया। कार्यक्रम में व्याख्याता किशनकुमार इंदलिया व रतीराम सारण सहित जयनारायण गहलोत, नथमल गौरिया, तीर्थराज संस्कर्ता, कृष्ण कुमार पारीक, व्यवसायी मालचन्द झँवर, व्यापार मण्डल अध्यक्ष शंकरलाल लखोटिया, उपसरपंच कमल संस्कर्ता सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण व माहेश्वरी समाज के लोग उपस्थित रहे।

भामाशाह द्वारा जूता-जुराब व स्वेटर वितरण कार्यक्रम

दिनांक 20.12.2016 को स्थानीय विद्यालय के प्रांगण में दो समाजसेवी भामाशाह नरेन्द्र सिंह शेखावत पुत्र श्री अर्जुन सिंह शेखावत वार्ड 5 (भादरा) तथा पर्व कुमार पुत्र श्री सुभाष जी सोनी वार्ड 20 निवासी भादरा द्वारा सभी 96 बालकों को जूता-जूराब व गर्म स्वेटर वितरण किया गया। प्रधानाध्यापक श्री दानाराम इन्दलिया ने बताया कि राजकीय आदर्श माध्यमिक विद्यालय अलायला (भादरा) में मंगलवार को एक सादे समारोह में दोनों समाजसेवी भामाशाहों द्वारा ये सामान वितरण किया गया तथा दोनों का आभार जताया।

शाला में कम्प्यूटर सेट भेंट किया

रा.बालिका मा. वि. नत्थूसर बास बीकानेर की शिक्षिका आनंद कंवर ने शाला कार्यालय को एक कम्प्यूटर सेट व एक एडवांसड प्रिंटर भेंट किया। शाला प्रधान सरला खड़गावत व समस्त स्टाफ ने भामाशाह आनंद कँवर का आभार व्यक्त करते हुए अभिनन्दन किया।

दुधवाखारा में बालिकाओं को स्वेटर वितरण

रा.शहीद बा.उ.मा.वि. दुधवाखारा चुरु में लेखराज बुड़ानिया की स्मृति में उनके पुत्रों के सौजन्य से प्राप्त बालिकाओं को स्वेटर वितरण अतिथियों के द्वारा किया गया। अतिथि जिला प्रमुख हरलाल सहारण व अध्यक्षता हरिराम दायमा ने की। कार्यक्रम में लक्ष्मीनारायण शर्मा व कृष्ण मुरारी ने विचार व्यक्त किये। संचालन रामलाल खेरवा ने किया।

विश्व दिव्यांग दिवस पर विशेष शिक्षिका स्नेहलता शर्मा सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति राजकीय अवार्ड 2016 से सम्मानित

चिल्ड्रन एकेडमी सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल, बनीपार्क, जयपुर की सीनियर विशेष शिक्षिका श्रीमती स्नेहलता शर्मा को सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा विशेष योग्यजन व्यक्तियों के क्षेत्र में कार्यरत सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति का राज्य स्तरीय राजकीय पुरस्कार 2016 से सम्मानित किया गया है। 03 दिसम्बर 2016 को विश्व दिव्यांग दिवस पर ओ.टी.एस. सभागार में कैबीनेट मंत्री डॉ. अरुण चतुर्वेदी एवं विशेष योग्यजन आयुक्त श्री धन्ना राम पुरोहित एवं अतिरिक्त मुख्य सचिव द्वारा राज्य स्तरीय राजकीय सम्मान समारोह में श्रीमती स्नेहलता शर्मा को प्रशस्ति पत्र, शॉल, स्मृति चिह्न एवं 7,500 (सात हजार पाँच सौ रुपये) का चैक देकर सम्मानित किया।

श्रीमती शर्मा गत 10 वर्षों से अधिक समय से विभिन्न श्रेणी के दिव्यांग बच्चों को आधुनिक तकनीक से अध्यापन एवं सामाजिक सेवा कार्य कर रही है। इससे पूर्व श्रीमती स्नेहलता शर्मा को अन्य अवार्ड भी प्राप्त हो चुके हैं। जो निम्न है- हाउस वाईफ वुमैन अवार्ड, भगवान परशुराम अवार्ड, ब्राह्मण रत्न, समाज रत्न, विप्र शिरोमणि अलंकरण, विवेकानन्द शिक्षक सम्मान अवन्तिका द्वारा, विशेष शिक्षा में 100 प्रतिशत परिणाम, प्रतिभा सम्मान, विशेष शिक्षा में श्रेष्ठ शिक्षक अवार्ड आदि।

-संकलन : **नारायणदास जीनगर**
प्रकाशन सहायक
मो. 9414142641

करौली

रा.आदर्श उ.मा.वि., पहाड़ी तह. टोडा भीम को श्री रामस्वरूप से प्रधानाचार्य कक्ष हेतु फर्नीचर हेतु 51,00 रुपये नकद, श्री केदार लाल शर्मा से दो सैट स्टूल व टेबिल लागत 2,100 रुपये, श्री नत्थूलाल शर्मा से एक सैट स्टूल व टेबिल लागत 1,100 रुपये, श्री पप्पू साई से 11 कुर्सी Cello लागत 6,100 रुपये, श्री मन मीणा से 10 कुर्सी Cello लागत 5,500 रुपये नकद प्राप्त हुए। **रा.उ.मा.वि., काचरौदा तह. सपोटरा** को श्री राजूलाल मीना से 30 टेबिल 30 स्टूल व बड़ी अलमारी लागत 35,000 रुपये, श्री कंवर सिंह मीना (सरपंच) से वाटर कूलर मय फ्रिज लागत 15,000 रुपये, श्री जगदीश प्रसाद मीना से सोफा सैट मय टी-टेबल लागत 11,000 रुपये, श्री शिवराज मीना से बालिका/बालक के फर्नीचर हेतु 11,000 रुपये, श्री घमोला मीना द्वारा 31,000 रुपये की लागत से सरस्वती मन्दिर का निर्माण करवाया गया। श्री पी.आर. मीना से दो कम्प्यूटर सेट लागत 70,000 रुपये, श्री विजय कुमार जादौन से विकास कार्य हेतु 3,100 रुपये, श्री गोविन्द राणा से एक कुर्सी एक टेबल लागत 1,100 रुपये, श्री प्रहलाद मीना से एक कुर्सी एक टेबिल लागत 1,100 रुपये, सर्व श्री राजकुमार मीना, भरत लाल मीना, मेघलाल, नेमीचन्द मीना से प्रत्येक से 1,100 रुपये विकास कार्य हेतु प्राप्त हुए, श्री सहीराम मीना से एक पंखा एवं 500 रुपये नकद, श्री राम लखन मीना से 1,100 रुपये नकद, श्री बाबूलाल से 1,500 रुपये नकद, श्री बाबू लाल जोगी से 1,500 रुपये नकद, श्री रामहंस मीना से 1,600 रुपये नकद, श्री सुमेर सिंह मीना से दो कुर्सी Cello लागत 1,100 रुपये, सर्व श्री राज बहादुर मीना, जमनीलाल पटेल, घमण्डी मीना, राम सिंह मीना, मुकेश मीना, हरजी बैरवा, कैलाश मीना, रामकिशन नेताजी, शेरसिंह मीना, जलराज मीना, खिलाड़ी मीना, रामफूल पटेल से प्रत्येक से 500-500 रुपये नकद विद्यालय विकास कार्य हेतु प्राप्त हुए, श्री केश मीना से 1,100 रुपये विद्यालय विकास कार्य हेतु प्राप्त हुए। सर्व श्री मुनीराज, रामलखन, बाबूलाल जोगी, धमसु बैरवी, मनुआ बैरवी, भरोसी बैरवा, किशोरी बैरवा, पप्पी हरिजन, बबलू मीना, बन्ने सिंह, राजूलाल मीना से प्रत्येक से 100-100 रुपये विद्यालय विकास हेतु प्राप्त हुए। **रा.उ.मा.वि., शेखपुरा वाया श्री महावीर जी** में श्री धन सिंह मीना (एडवोकेट) द्वारा 1,51,000 रुपये की लागत से शौचालय व स्नानघर का निर्माण करवाया गया, श्रीमती सुनीता देवी मीना (सरपंच) से 10 छत पंखे प्राप्त हुए, श्री कमल राम मीना (डीलर) एवं श्रवणलाल मीना से 5-5 प्लास्टिक की कुर्सियाँ प्राप्त हुई। **रा.उ.मा.वि., महमदपुर तह. सपोटरा** में ग्रामवासियों के सहयोग से विद्यालय को 2 बीघा जमीन भेंट स्वरूप दान में दी, श्री पप्पूलाल जांगिड़ (ठेकेदार) से 50 स्टूल 50 टेबिल लागत 60,000 रुपये दान स्वरूप प्राप्त हुई।

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। -**वरिष्ठ संपादक**

अजमेर

रा.आदर्श उ.मा.वि., तिलोरा को सर्व श्री रसीद खान, राज सिंह खंगारोत, ओम प्रकाश भाट से 50 टेबल व 50 स्टूल विद्यालय को सप्रेम भेंट, श्री शान्ति लाल जैन से वाटर कूलर विद्यालय को भेंट जिसकी लागत 36,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि., लल्लाई** में श्री सत्यनारायण, शैतान पोषक द्वारा 91,000 रुपये की लागत से माँ सरस्वती मन्दिर का निर्माण करवाया गया।

हमारे भामाशाह

श्री रामनिवास पारीक द्वारा 15,000 रुपये की लागत से कक्षा-कक्ष में सीमेन्ट फर्श का निर्माण करवाया गया, श्री छगन जी, पप्पू सिंह रावत से 1800 ईंट लागत 6,000 रुपये, श्री उमराव चंदोरा से कोटा स्टोन लागत 7,100 रुपये, कक्षा 10 के छात्र/छात्राओं द्वारा 5 फर्नीचर सेट विद्यालय को भेंट लागत 4,500 रुपये। **रा.उ.मा.वि., हाथी खेड़ा** को जनसहयोग से विद्यालय भवन के सौंदर्यीकरण व रंग रोगन लागत 27,100 रुपये, विद्यार्थियों को जूते मोजे का सैट, स्कूली गणवेश लागत 45,000 रुपये, विद्यार्थियों को फल व मिष्टान्न वितरण लागत 30,000 रुपये, गणतंत्र दिवस पर उप सरपंच श्री लाल सिंह द्वारा पारितोषिक वितरण लागत-5,000 रुपये, श्री शंकर सिंह रावत द्वारा दसवीं के प्रथम आने वाले विद्यार्थियों को 5,000 रुपये नकद पुरस्कार व विद्यालय को अलमारी भेंट लागत 4,500 रुपये, SBBJ अजमेर द्वारा 12,500 टाइल्स, चारदीवारी में तारबंदी कार्य, बालिका शौचालय निर्माण, कक्षा-कक्ष में 18 खिड़कियाँ व 5 दरवाजे लगवाने का कार्य, 150 टेबल-स्टूल सेट विद्यालय को भेंट। **रा.उ.मा.वि., टांकावास** को श्री ईणानी मार्बल सावर से 21,000 रुपये, श्री बालाजी मार्बल सावर से 11,000 रुपये व श्री दुर्गालाल जांगिड़ से 4,100 रुपये प्राप्त करके स्थानीय विद्यालय को 35 टेबिल स्टूल के सेट दिए तथा जन सहयोग के द्वारा 25 टेबिल स्टूल विद्यालय को सप्रेम भेंट। **रा.उ.मा.वि., देवलिया कलां** को श्री सीमेन्ट लि. अंधेरी देवरी ब्यावर द्वारा 100 सेट टेबिल-स्टूल विद्यालय को सप्रेम भेंट लागत 1,35,000 रुपये, श्री रामस्वरूप मेवाडा से एक कम्प्यूटर सेट जिसकी लागत 21,000 रुपये, ग्राम पंचायत देवलिया कलां द्वारा विद्यालय परिसर में 45 ट्रेक्टर ट्राली मिट्टी डलवाकर भराव करवाया गया जिसकी लागत 18,000 रुपये, श्रीमती निर्मला कंवर राठौड़ से 5,000 रुपये नकद, श्रीमान वंश प्रदीप सिंह से 2,500 रुपये नकद, श्री जितेन्द्र नागर से 2,100 रुपये नकद प्राप्त हुए। **रा.आदर्श उ.मा.वि., भांवता** को श्री विमल सिंह चौहान से जूता-जोड़ी लागत 1,500 रुपये, श्री दिगम्बर महिला सेवा समिति अजमेर से कपड़े लागत-10,000 रुपये, श्री विमल सिंह चौहान से स्वेटर लागत 23,000 रुपये, मौजा जोड़ी लागत 3,000 रुपये, फल वितरण मूल्य 15,000 रुपये, श्री प्यारे लाल सोनी से 2 अलमारी लागत 15,000 रुपये, वाटर कूलर लागत 25,000 रुपये, प्याऊ मरम्मत लागत 10,000 रुपये, टेबल-स्टूल लागत 15,000 रुपये, नकद राशि 5,100 रुपये, श्री जगदीश चन्द कांकाणी से टेबल-स्टूल लागत-15,000 रुपये, वाटर कूलर लागत 18,000 रुपये विद्यालय को सप्रेम भेंट। **रा.बा.उ.मा.वि., राजाकोठी गुलाबबाड़ी** को श्रीमती आशा शर्मा द्वारा एक वाटर कूलर 7 कम्प्यूटर तथा नल फीटिंग करवाए गए जिसकी लागत 1,16,400 रुपये, हालाणी दरबार के अजमेर द्वारा 500 विद्यार्थियों को अभ्यास पुस्तिका वितरित की गई। **श्री लूणकरण बाहेती रा.बा.उ.मा.वि. रूपगढ़** में श्री लक्ष्मी नारायण वैष्णव द्वारा 80x90=7200 वर्ग फीट का भूखण्ड जिसकी लागत 4,75,200 विद्यालय को सप्रेम भेंट।

प्रतापगढ़

हरीश आंजना रा.बा.उ.मा.वि., छोटी सादड़ी को पूर्व विधायक श्री उदयलाल आंजना से एक वाटर फिल्टर लागत 50,000 रुपये श्री कांतिलाल मुरड़िया से 60 बालिकाओं को 60 बैग्स एवं 60 ज्यामिति बोक्स लागत 10,000 रुपये, श्री वृद्धिशंकर उपाध्याय से एक फ्रीज लागत 10,000 रुपये, श्रीमती नारायणी देवी बोरी वाल से एक वॉशिंग मशीन लागत 10,000 रुपये।

संकलन- रमेश कुमार व्यास

शिविरा पत्रिका (मासिक) : जनवरी, 2017 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। © वरिष्ठ सम्पादक : प्रकाश चन्द जाटोलिया, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

चित्र वीथिका-जनवरी, 2017

नई दिल्ली में आयोजित छठी राष्ट्र स्तरीय प्रदर्शनी एवं परियोजना प्रतियोगिता (इन्सपायर अवार्ड)-2016 में बाल वैज्ञानिकों एवं अतिथियों को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकीमंत्री डॉ. हर्ष वर्धन।

नई दिल्ली में आयोजित छठी राष्ट्र स्तरीय प्रदर्शनी एवं परियोजना प्रतियोगिता (इन्सपायर अवार्ड)-2016 में राजस्थान के श्रेष्ठ प्रतिभागियों के साथ स्टेट नोडल ऑफीसर डॉ. संजय सिंह सेंगर।

वेटरनरी ऑडिटोरियम बीकानेर में आयोजित शिक्षा विभा. राज्य स्तरीय मंत्रा. एवं चतुर्थ श्रेणी कर्म. पुरस्कार एवं सम्मान समारोह 2016 में दीप प्रज्वलन करते हुए मुख्य अतिथि श्री अशोक आचार्य एवं निदेशक मा.शि. श्री बी.एल. स्वर्णकार।

शिक्षा विभागीय राज्य स्तरीय मंत्रालयिक एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी पुरस्कार एवं सम्मान समारोह 2016 में सम्मानित होने वाले कर्मचारियों की प्रशस्ती पुस्तिका का विमोचन करते हुए सम्मानित मंच।

शिक्षा विभागीय राज्य स्तरीय मंत्रालयिक एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी पुरस्कार एवं सम्मान समारोह 2016 में गरिमामय मंच के साथ सम्मानित 38 कार्मिक।

शिक्षा विभागीय राज्य स्तरीय मंत्रालयिक एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी पुरस्कार एवं सम्मान समारोह 2016 में उपस्थति शिक्षा अधिकारी एवं अतिथिगण।

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/417/2017-19 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● जनवरी, 2017 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2जनवरी, 2017 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : हर माह की 5, 6 तारीख

शिक्षा विभागीय राज्य स्तरीय मंत्रालयिक एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी पुरस्कार एवं सम्मान समारोह-2016

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें : **वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर-334001**